शूरवीर खुआङ्चेरा राजनीतिक एवं सांस्कृतिक अनुशीलन :

विषयानुक्रमणि

		पृष्ठ संख्या
प्रमाण प		i
घोषणा पत्र		ii
प्राक्कथ		iii- v
विषयानुक्रमणि		
प्रथम अध्याय	: रचनाकार का परिचय एवं मिज़ो समाज और संस्कृति	1- 35
	(क) रचनाकार का परि	
	(ख) मिज़ो समाज और संस्कृ	
द्वितीय अध्याय	:शूरवीर खुआङ्चेरा: ऐतिहासिक पृष्ठभूमि	36- 67
	(क) शूरवीर खुआङ्चेरा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि	
	(ख) राजनीतिक संघ	
तृतीय अध्याय	: शूरवीर खुआङ्चेरा मिज़ो समाज एवं संस्कृति:	68- 94
	(क) शूरवीर खुआङ्चेरा और मिज़ो समाज	
	(ख) शूरवीर खुआङ्चेरा और मिज़ो संस्कृति	
चतुर्थ अध्याय: शूरवीर खुआङ्चेरा के हिंदी अनुवाद की समस्याएं		95- 101
	(क) अनुवाद की समस्य	
उपसंहार:		102- 104
संदर्भ ग्रंथ सूची	: (क) आधार ग्रं	105- 108
	(ख)सहायक ग्रं	
अनुसंधित्सु का विवरण		109

प्राक्कथ

प्राक्कथ

'Pasaltha Khuangchrea' एक मिज़ो नाटक है, जो 1997 ई. में प्रोफेस लल्लुआङलिआ द्वारा लिखा गया है। इस नाटक को वर्ष 1997 में मिजोरम की सर्वश्रेष्ठ रचना घोषित किय । इसका हिंदी मे 'शूरवीर खुआङ्चेरा' नाम से अनुवाद श्री . कामलौवा ने किया है। इसका प्रथ संस्करण 2008 में आया है |इस नाटक में कुल 114 पृष्ठ हैं। इसे कुल पांच अंकों में विभाजित किया गया है। इस नाटक में शूरवीर खुआङ्चेराके जीवन–चरि , बहुआया व्यक्ति , नि:स्वार्थता, वीरता एवं तत्कालिन मिज़ो समाज परिस्थितिय , उनकी जीव – पद्धति और सोच का जीवंत चित्रण किया गया है|

यह नाटक 1872 के मिज़ो संघर्ष के इतिहास पर आधारित है। इस नाटक का नायक खुंआङचेरा है जो मिज़ो समाज एवं इतिहास के प्रसिद्धतम वीरों में से एक रहा है, जिसने अपने साथियों के साथ मिलकर जनजातियों को गुलाम बनाने वाले अंग्रेजों और ब्रिटिश हुकूमत को खुली चुनौती दी और अपनी शहादत के द्वारा मिज़ो समाज का मिथकीय क (लीजेंड) बन गया ।इस नाटक में खु ङ्चेरा की असाधारण वीरता के सा -साथ मिज़ो समाज एवं संस्कृति की जातिगत विशेषताओं, रीति-रिवा , रूढ़ियों आदि व भी चित्रण है। भारत के पूर्वोतर में मिजोरम में मिज़ो जन-जाति निवास करती हैं; जिनकी भा , संस्कृति, जीवन शैली और उनके संघर्षों से भारत के अधिकांश लोग अपरिचित हैं। इस प्रकार यह नाटक केवल वीरों की गाथा न होकर मिज़ो जनजातियों व सामाजिक सांस्कृतिक विशेषता , उनके संघर्ष एवं इतिहास को भी उद्घाटित करता है ।'शूरवीर खुआङ्चेरा' नाटक को ऐतिहासिक नाटक कहा जा सकता है जिसमे वास्तविकता और लेखक की संकल्पनाओं का । हैं|

इस लघु-शोध प्रबंध को चार अध्यायों में विभक्त किया गया है।

प्रथम अध्या· 'रचनाकार का परिचय एवं मिज़ो समाज और संस्कृ ' है । इसमें दोउ –अध्याय रखे गए हैं । प्रथम उ -अध्याय में रचनाकार का परिच दिया गया हैं-उनके जीवन, नाट्य लेखन में उनके साहित्यिक योग , सम्मान और पुरस्व रहै । द्वितीय उ -अध्याय में मिज़ो समाज और संस्कृति का विवेचन एवं विश्लेषण किया गया है ।

द्वितीय अध्याय 'शूरवीर खुआङ्चेरा: ऐतिहासिक पृष्ठभूमि ' है । इसके अंतर्गत दो उप-अध्याय रखे गए हैं । प्रथम उ -अध्याय में नाटक में अभिव शूरवीर खुआङ्चेरा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि तथा द्वितीय उप-अध्याय में नाटक में अभिव्यक्त मिज़ो राजनीतिक संघर्ष का विवेचन किया गया ।

तृतीय अध्याय 'शूरवीर खुआङ्चेरा: मिज़ो समाज एवं संस्कृ ' हैं । इसके अंतर्गत दो उप-अध्याय रखे गए हैं । प्रथम उ -अध्याय में नाटक मे अभिव्यक्त मिज़ो समाज तीय उप-अध्याय में नाटक में अभिव्यक्त मि संस्कृति का विवेचन किया गया है ।

चौथे अध्याय में नाटक के मिज़ो से हिन्दी अनुवाद में आने वा समस्याओं का विवे -विश्लेषण किया गया हैं ।

यह लघु शोध-प्रबंध सहायक आ डॉ.सुषमा कुमारी,(हिंदी विभाग,मिज़ोरम विश्व लय,आइजॉल) के निर्देशन में पूर्ण किया गया है। उनका स्नेहाशीष, सतत प्रेरणा और प रामर्शों के फलस्वरुप ही यह कार्य पूर्ण हो सका है।मैं उनके प्रति विशेष कृतज्ञता का अनुभव कर यह कामना करती हूँ कि उनका स्ने मुझ पर सदा बना रहे।

यद्यपि औपचारिक रूप से मेरी शो निर्देश डॉ.सुषमा कुमारी थी। परंतु अनौपचार्या रूप से मु प्रो.संजय कुमार (आचार्य ए अध्य ,हिंदी विभाग,मिज़ोरम विश्ववि , आइजॉल) का मार्गदर्श , सहयोग और स्ने बराबर मिलता रहा है। जब भी कोई समस्या लेकर मैं उनके पास गयी उ -तब उनका सहयोग और प्रोत्स मुझे हमेशा मिला है। इसलिए मैं उ के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करती हूँ।

हिंदी विभ , मिज़ोरम विश्वविद्यालय के अपने अन्य गुरुजन - प्रो. सुशील कुमार शर्म और श्री अमिष वर्मा का भी मैं हृदय आभारी ह, जिन्होंने सम -समय पर बहुमूल्य सुझाव एवं प्रेरणादायक सहय देकर प्रस्तुत लघु शोध कार्य को पूर्णता तक पहुँचाने में मेरी मदद की।

किसी भी कार्य को पूर्ण करने में बहुत सारे लोगों का प्रत्यक्ष और परोक्ष सहयोग मिलता है। उन सभी के प्रति आभार व्यक्त करना मैं कर्तव्य समझती हूँ। मैंने और जुदिथ ज़ोपार ने एक साथ एम. फि . में दाखिला लिया था और एक साथ ही लघु शोध प्रबंध लेखन का र्य प्रारंभ किया था। इस दौरान उसका सहयोग मुझे हमेशा मिलता रहा है। इसके लिए मैं उसकी आभारी हूँ।

मैं अपने परिवार के सभी सदस और मि के प्रति भी हार्दिक आभा व्यक्त करती ,जिनके सहयोग के बिना मैं इस कार्य को पूर्ण नहीं कर सकती थी।

अंत में, मैं उन सभी ज्ञा -अज्ञात विद्वा , व्यक्तियों एवं मित्रों के प्रति भी आभार व्यक्त करत , जिनका नामोल्लेख मैं अनजाने में ऊपर नहीं कर पाई हूँ पर जिनका सहयोग कि -न-किसी रूप में इस लघु शोध प्रबंध लेखन औ प्रकाशन के दौरान मुझे मिला है।

(ज़ोरमछनी पच्व)

अनुसंधित्सु

प्रथम अध्या

रचनाकार का परिचय एवं मिज़ो समाज और संस्कृति

(क) रचनाकार का परिच

भारत के उत्त –पूर्व क्षेत्र के प्रसिद्ध विद्वान प्र र ललत्लुआङलिअ खिआङतेएक सम्मानित व , नाटककार,निबंधकार, लोक साहित्य के रचयि , जीवनीकार, समालोचक और रंगकर्मी । इन्होंने मिज़ो जाति केसमा , सभ्यत , संस्कृति और इतिहास को अपना विषय बनाया और उसे कथा बद्ध क - विशेष रूप से नाट लेखन के क्षेत्र में - एक अलग प्रकार की साहित्यि अभिव्यक्ति की है।

जन्म एवं माता पिता:

प्रोफे र ललत्लुआङलि खिआङते का "जन्म 28 जून 1961 को मिजोरम प्रांत की राजधानी आइज़ॉल के समीप ही बसे साइतुवालगॉव में एक मसीही परिवार में हु था| इनके पिता श्री त्लंगहमिंगलियाना गिरजाघर में एल्ड थे|इनकी म ता श्रीमती दारगेनी एक धर्मनि महिला थी जो पितृपक्ष से खाव्लिह्ग वंश से संबंध रखती थी |"[1]ये अपने सात भाई बहनों में पांचवें स्थान पर हैं | इनके

[1]सी.कामलौवा,शूरवीर खुआङचेरा,पृ.110

माता पिता का कहना है कि बचपन से ही यह फुर्तीला ,परिश्रमी और आज्ञाकारी बच्चा रहा है |

शिक्ष :

अपने जन्मस्थल से ही इन्होनें प्राथमिक शिक्षा प्रारंभ , वहां 'ए' पोल (प्री. स्कूल) तक पढ़े | 1967 में आइज़ॉलके ब्वाइज मिडिल स्कूल (सिकुल्से) में पढ़ाई की |पिता की नौकरी के कारण इनकोवईरेंगते में ही रहना पड़ा। मिडिल स्कूल से वे प्रथम स्थान पर उत्तीर्ण होते रहे,"कक्षा छे में जब छात्रवृति के लिए परीक्षा दी तो सम्पूर्ण मिजोरम में प्रथम स्थान प्राप्त किया। इस ख़ुशी में उनके दादाजी ने उन्हें 'PUKHUMA'[2] कहा क्योंकि वे भी प्रथम आते थे मगर सम्पूर्ण मिजोरम में नहीं |"[3] वर्ष 1974 -1978 तक आइज़ॉलके मिज़ो सिनोद हाई स्कूल में पढ़ाई की| जब भी परीक्षा दी प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए ,जब इन्होनें1978 में एइच .एस .एल .सी की परीक्षा दी तो सम्पूर्ण मिजोरम में स्थान प्राप्त किया |"1980 में सेन्ट.अन्थोनिएस कॉलेज,शिल्लांग से पी.यूसाइंस कक्षा की पढ़ाई खत्म की |सेन्ट.एड्मुन्ड्स कॉलेज से बी .ए (इंग्लिश 1982) की उपाधि प्राप्त और नेहू (NEHU) में (इंग्लिश से 1984) में द्वितीय श्रेणी से उत्तीर्ण हुए |वर्ष 1986 से अनुसंधान प्रारंभ किया औरफरवरी 1991 को खत्म की पी.एच.डी (डॉक्टर ऑफ़ फिलोसोफी इन लिटरेचर) की डिग्री प्राप्त की |उसके बाद बिना रुके पोस्ट डॉक्टरल रिसर्च किय ,लोक साहित्य और साहित्य के विषय पर 1998 के मध्य में इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ़ वाशिंगटन मे अध्ययन के बाद 1999 में डी.लिट (डॉक्टर ऑफ़ लिटरेचर) की उपाधि प्राप्त की |"[4]

---

[2]दादाजी से भी श्रेठ

[3]Hnamte Isaac & Lalsangzuala,.A PROFESSOR'S PADMA SHRI SOUVENIR,p-119

[4]Saitual Centenary Souvenir 1915- 2015,p-331

विवाह एवं संतान :

"प्रोफेसर खिआङ का विवाह 9 दिसम ,1981 को ललाम्ह्लुनी राल्ते स्वर्गीय श्र थान्घि रा की बेटी, छिंग वेंग,ऐज़व के साथ मिशन वेंग गिरजाघर में हुआ,इनके चार बेटे है |वर्तमान में ये एल.ती.एल.फेला,एल.ति.एल.फाका,एल.ति.एल.फिमा औ एल.ति.एल.फाला के साथ मिशन वेंग में र्ब -43 फक्रू , आइज़ाल, मिजोरम, भारत में निवास कर रहे हैं।"[5]

व्यवसाय :

"एम.ए.की पढ़ाई पूरी करने के बाद खिआङते जी ह्लंगबना कॉलेज में अल्प समय के लिए इंग्लिश लेक्चरर पद पर कार्यरत र | वहाँ से आइज़ॉल कॉलेज मे इंग्लिश लेक्चरर के लिए नियमि हो गए| सितम्बर 1985 से पछुंगा यूनिवर्सिटी में रिसर्च एसोसिएट (इंग्लिश से मिज़ो) में कार्य किय |"[6]इसके बाद भी दो साल तक तो इन्होंने आइज़ाल कॉलेज और ह्लंगबना कॉलेज के इंग्लिश विभाग की मदद की |"वर्ष 1997 में जब,नेहू (NEHU)के अंतर्गत मिज़ो विभाग, मिजोरम वि विद्या आया तो इन्होनेंगेस्ट लेक्चरर के पद पर कार्य किया | दो साल बाद रीडर के लिए चुने जाने के बाद 8 फरवरी 1999 में इन्होंने अपने नए कार्य को संभाला, वे मिज़ो विभाग में सबसे पहले फुलटाइम शि ,रीडर और हेड बने । इंदिरा गाँधी नेशनल ओपन यूनिवर्सिटी में इंग्लिश विषय के लिए तीन साल त एकेडमिक काउंसलर रहे, यू.जी.सी. के अंतर्गत एनआईटी को-आर्डिनेटर का कार्यभार भी संभाला|"[7]

इनकी रूचि शिक्षण कार्य में होने के कारण ये आगे बढ़ते गए| "6 दिसम्ब 2005 को वे प्रोफेस बने | 2001 में स्थापित मिज़ोरम विश्वविद के मिज़ो विभाग में विभागाध के पद पर नियुक्त हुए और आगे चलकर डीन क

[5]Saitual Centenary Souvenir 1915- 2015p-127

[6].Hnamte Isaac & Lalsangzuala,.A Professor's Padma Shri SOUVENIR,p-120

[7]Hnamte Isaac & Lalsangzuala,.A Professor's Padma Shri SOUVENIR Ibib,.p-120

कार्यभार संभाल |"[8] वर्तमान में वे मिजोरम विश्वविद्य के मिज़ो विभाग मे शिक्षण कार्य कर रहे हैं|

कृतित्व:

"माध्यमिक शिक्षा के समय से ही गद्य और पद्य लेखन में इनकी दिलचस्पी हं थी | कक्षा 9 से इन्होंने लिखना शुरू कर दिया था। इनके लेख को 1977 में सिनोद हाई स्कूल पत्रिका में प्रकाशित किया गया जिसमें ये एडिटोरियल बोर्ड के मेम्बर थे। वर्ष 1997 में दूरदर्शन में कई बार भाषण भी दिया। साहित , संस्कृति, नाटक, अंगरेजी बातचीत, प्रश्नोत्तर ,जीवनी तथा सामान्य बातचीत सम्बंधित सौ से भ अधिक बार कार्यक्रम कर चुके हैं। दिल्ली में नेशनल चैन पर अंग्रेजी में भाषण दे चुके हैं । ऐसा कहा गया है कि नेशनल चैनल में मिज़ो जनजातियों के बीच अंग्रेजी में इन्हें ने सबसे पहले भाषण दिया था।"[9] लेखन का शौक होने के कारण समाचार पत्र और गैर सरकारी संगठन में भी परिपत्र प्रकाशन का कार्य वि । इन समाचार पत्रों में संपादक और संयु संपादक का कार्य कर रहे है| हुईतु वाई.एस.ए चंचिंबू (वाई.एम.ए) ठलाईकंतु (बी.के.ती.पी) क्रिस्चियन ठला (सेंट्रल के.टी .पी) थू लेह हला और गैर सरकारी संगठन के लिए यादगार पत्रि (सौवेनिर /मीगाज़िने) लिख चुके हैं| राष्ट्रीय स्तर पर भी इनके कार्य देर को मिलते हैं, कई किताबों में सलाहकार और संरक्षक की भूमिका में भी रहं हैं। अब तक पचास से अधिक पुस्तको और लगभग पच्चीस पुस्तिकाओं के रचयित .खिआङते द्वारा सृजित अनेक नाटकों और निबंधों का अनुवाद । ,बंगला, असमिया तथा भारत की और भी भाषाओं में हुआ है। यह असाधारण बात है वि "इनकी किताबों को 1989 से मिज़ो

[8]Hnamte Isaac & Lalsangzuala,.A PROFESSOR'S PADMA SHRI SOUVENIR,p-120

[9]Ibib,p-120

अकैडमी ऑफ़ लेटर्स हर साल अच्छी किताबों की सूचीपत्र में रखती है|"[10] किताबों के अलावा अंतर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय ,क्षेत्रीय स्तर पर अस्सी अनुसंधान सम्बंधित काम क चुके हैं । साहित , संस्कृति, भाषा, लोक-साहित और सामाजिक धार्मिक वि पर इनकी गहरी रूचि रही है | इसलिए इन विषयों पर लेखक ज्यादा जो देते है। इन्होंने साहित्य की तमाम विधाओं में अपने रचना कौशल का परिचय दि - नाटक, निबंध साहि ,आत्मक , कविताएँ,लोक सा , सामालोचना, आलोचना, गद्य लेखन,पाठयपुस्त सम्बंधित लेखन पर अपनी कलम चलायी है| उनकी निम्नलिखित रचना /लेख हैं जिन्हें एम.बी.एस.ई (नवीं एवं दसवं), बी.ए, एम.ए., के शैक्षणिक पाठ्यक्रम शामिल किया गया है|

(क) लालनु रोपुइलिअनि (ट्रेजेडी), प्रेसक्राइब्डफॉरडि एम.इए.एल, मिज़ो, एन.ए .एइच.यु, एंड एम.जेड. यू.

(ख) पसल्थाखुआङ्नं (ट्रेजेडी)

(ग) शूरवीर खुआङ्चेर इन हिंदी फॉर हिंदी डिग्री कोर्स ऑफ़ मिजोर .

(घ) छार्मोया (कॉमेडी)फॉर क्लास 9, मिज़ो टेक्स्ट सी.बी.एस.इ

/एम.बी.एस.इ

(ज) ह्नेह्जोवा लेह रिमोई (कॉमेडी) प्रेसक्राइब्ड फॉर क्लास 9 एंड 10,

एम.बी.एस.इ

(झ)थोम्वुङा (कॉमेडी)फॉर एम.ए (मिज़ो) सिलेबस, एम.जेड. यू.

(ञ) दुअल्लुअत वाङइन फॉर क्लास 10,एम.बी.एस.इ (न्यू कोर्स 2010)

(च) बुइअ साईं इप (कॉमेडी) फॉर एम.ए.मिज़ो, एम.जेड. यू.

[10]Hnamte Isaac & Lalsangzuala,.A PROFESSOR'S PADMA SHRI SOUVENIR,p-121

लालनु रोपुइलिअनि नाटक का अनुवाद श्र सी. काम्लोवा ने हिंदी में किया है|लालनु रोपुइलिअनि मिजोरम के उत्तरी भाग के प्रसिद्ध मुखिय लाल्सवुन्गा के बच्चों में से है जिनका विवाह वन्दु , मिजोरम के दक्षिण भाग के मुखिया था| रोपुइलिअनि को सम्मानित दृ से देखा जाता था क्योंकि उनके पिता और पति मिज़ो जनजाति के सम्मानित मुखिया थे| इस नाटक में अंग्रेजों के धिनौनेअभियान और उनके मिज़ोरम में बसने की घटना का चित्रण किया गया है । 8 अगस्त 1893 को मास्ट सेक्सिअरा (जे.शकेस्प्य)और उसके अनुयायि ने देंलुंग गॉव को घेर लिया था। अचानक हुए हमले के कारण ये गाँव उनके कब्जे में आ गया। इस नाटक में रोपुइलिअनि के द्वारा अपनी भूमि को अंग्रेजों से बचाने के लिए आख़िरी सांस तक लड़ाई लड़नेऔर लड़ते-लड़ते जेल में दम तोड़ने की घटनाओं को मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया गया है|

'Pasaltha Khuangchra' एक मिज़ो नाटक है, जो 1997 में प्रोफेस लल्लुआङलिः द्वारा लिखागया है। इसका हिंदी में 'शूरवीर खुआङ्चेरा' नाम से अनुवाद श्री सं . कामलोवा ने किया है। शूरवीर खुआङ्चेरा (मिज़ो नाटक) को 1997 में बुक ऑफ़ द इयर घोषित किया गया | यह नाटक1872 के मिज़ो संघर्ष के इतिहास पर आधारित है |इस नाटक का नायक खुआङ्चेराहै जो मिज़ो समाज एवं इतिहास के प्रसिद्धतम वीरो में से एक रहा ,जिसने अपने साथियों के साथ मिलकर मिज़ो जनजातियों को गुलाम बनाने वा अंग्रेजों और ब्रिटिश कूमत को खुली चुनौती दी और अपनी शहादत के द्वारा मिज़ो समाज का लोक नायक (लीजेंड) बन गया | इस नाटक में खुआङ्चेरा की असाधारण वीरता के स -साथ मिज़ो समाज एवं संस्कृति की जातिगत विशेषताओं , रीति-रिवाज ,रुढियों आदि का भ चित्रण है|

"मिज़ो नाटकों की प्रगा और इनके द्व रा किये गए अध्ययन को देखकर जे ललसंगपुइआ ने प्रो. खिआङते को 'Father of Mizo Drama' की उपाधि दी |"[11]

निबंध /कविता :

(क) ज़ाह लोह ज़िर्लाई प्रेसक्राइब्ड फॉर क्लास 9 पोएट्री मिज़

(ख) लल गा दावी बुर थर ,बी.ए मिज़ो पेपर IV

(ग) बुम्ह्मंग फॉर मिज़ो फॉर ए .ए इन मिज़ो ,एन.इ .एइच,यु एंड एम.जेत .यु

(घ) जान राऊ दंग्दाई फॉर एम.ए इन मिज़ो

(ङ) नो ख़त एई ठयूह ठयूह एम.ए मिज़ो एन.इ.एइच.यु /एम.जेत .यु

(च) ज़ो हनम पसल्था

(छ) हनम रों पर

(ज) ज़ो थान सियाम तू

(झ)त्लाव्म मई लोविन

(ञ) ड्राम –लेम्चन क्लास VII

(ट) एनवायरनमें –रम्ह्िंग

(ठ) बायोग्राफिकल एस –लुन्लेंग लल खम्लिआन

(ड) लैंग्वेज मिज़ो तोंग तिह हौउसक दान

(ढ) एस्से –लह्खाबू ह्लुत्रा

[11]Hnamte Isaac & Lalsangzuala,.A PROFESSOR'S PADMA SHRI SOUVENIR,p-130

(ण) एस्से –लह्खाबू ज़ाक लेह छिआर

(त) एस्से – खुअल्ज़िन

(थ) ज़लेंपार

आलोचक, गद्य लेख ,पाठ्यपुस्तक लेखक उ के रूप में की गई समी‍ ‍यें :

(क) का लुङखमबाय बी.लल्थन्लिअ (1989) प्रेसक्राइब्ड फॉर । .ए.इन मिज़ो :क्रिटिसि /बुक रिव्यू

(ख) हमङाइजुआली बाइ सी.लाईज़ोना (1990) प्रेसक्राइब्ड फॉर ए .ए.इन मिज़ो क्रिटिसिज /बुक रिव्यू

(ग) जोरम खाव ल बाइ ल.केइवोम(1991) प्रेसक्राइब्ड फॉर .ए.इन मिज़ो :क्रिटिसि /बुक रिव्यु एन.इ .एइच.यु एंड एम.जेत.यु

(घ) बेइसेइन बेईदवंग बय बुंगी सिलो

(ङ) अनीता बइ सी.लाइजोना (1998) एम.ए. मिज़ो,एम.जेत .यु, अप्रैल 2016

सम्मा :

भारतीय-राष्ट्रीय सम्म :

(क) राष्ट्रीय लोक भाषा सम्म , 2003

(ख) भारत आदिवासी सम , 2005

(ग) पद्मश्र्र (साहित) तथा शिक्षा के लिए पद्मश्री से सम्मानित किये गए , 2006

(घ) भारतीय आदिवासी नाटक सम्म – 2012 (16 नवम्ब -2012)

(ङ) डॉ .सैम हिग्गिनबोत्तोम सम्मान 2014 -15 (31.01.2005)

(च) सूर्य इंटर –इंडियन लैंग्वेज अवार्ड /भाषा सम्मान -2017 (29-3-17)

(ख) मिज़ो समाज और संस्कृति

'एन्थ्रोपोलोजि ' का मानना है कि प्राचीन मिज़ो सम ऐसा समाज था जो कि अन्य ज जातियों से मिश्रित नहीं होता था | मिज़ो समाजएक भाषा का प्रयोग करने वाले,एक ही धर्म को मानने वा , अपने पूर्वजों के नियमों का पालन करने वाले,स्वयं के बनाए हुए कायदे –कानूनोंका अनुपालन करने वाले, एक ही तरह से आमदनी करने वाले और रहन- सहन के स्तर समान रखने वाले लोगों का समाज था |[12]यह कहना कठिन है कि ऐसा जीवन कब से जी रहे थे, लेकिन पूर्वजों के इतिहास (समय 1300 -1450 AD)और थान्ल्लंग और रुन रम े समाज और संस्कृति से उपरोक्त बातों पता चलता है| इस समय इनका रहन- सहन बहुत सामान्य था |वे खेती करते थे,जो धनी थे वे खेती के लिए लोहा का प्रयोग करते थे,जबकि ज्यादातर लोग हिरण के सीं ,मृग के सींग,तेज़ छड़ी का प्रयोग करते थे| वे मक्क , बाजरा,शकरकंद आदि की खेती करते थे|ये उनका रोज का खाना भी हुआ करता था | उनके एक लोकगीत में तो यह भी कहा गया है:

"khisa chhuk chho,chhumpui zing hnuaiah

A ki riau riau riang hlo thlawh nan a tha e"[13].

इस गाने से हमें ये पता चलता है कि मिज़ो जनजाति के कृषक जीवन में मृग के सींग की कितनी महत्ता एवं उपादेयता हुआ करती थी | संपन्न

[12]. B.Lalthangliana, Zoluti 1st Edition,.p-109

[13].F.Lianhmingthanga&B.Lalthangliana,Mizo nun hlui Part 1Pawl riat zirlaibu 1st Edition P-11.

वर्ग से इत्तर आम किसान के लिए यह एक बेहद जरुरी और कीमती उपक उपकरण बनाने का माध्यम था। इसको प्राप्त करने की ललक और ल , उनकी संजीदगी का आभास उपरोक्त गीत से महसूस किया जा सकता।

मिज़ो समाज मे हर जाति की अपनी अलग जगह और गॉव होता था| अपनी जाति के सबसे बलवान और वीर व्य को वे अपना लीडर बना देते थे | वे छोटे–छोटे गांवों में बंटे थे| कपास उगानेऔर उससे कपड़ा बनाने की विधि से अंजान होने के कारण वे लगभग निर्व रहते थे| पुरुष कपड़े जैसा बना हु 'hruikhau phiar'[14] पहनते थे,उसे 'Hnawlkhal' कहा जाता था |महिला भी उसी hruikhau phiar से बनावस्त्र जैस पहनती थी,उसे 'siap suap'[15] कहा जाता था | जैसे-जैसे समय बीतता गया वे लेंत्लंग से दक्षिण की तरफ रहने लगं ,उन्हें कपड़ा बनाना अ गया जो काले रंग का था,उसे 'Dawlrem kawr'[16] कहा गया| इसे बहुत सालों तक पहना गया|

"लेंत्लंग के पूर्व में रहते हुए ही मिज़ोसमाज मे 'Tlawmngaihna'[17] की भावना जन्म ले चुकी थी| समाज हर व्यक्ति से इसी प्रकार की उम्मीद रखत ,कभी-कभी तो Tlawmngaihna से भी अधिकउम्मीद रखता था | अगर वो उस उम्मीद से अधिक कर पाता था तो 'Mi Tlawmngai' कहा जाता था | ऐसे व्यक्ति की समाज मे प्रशंसा और बड़ाई होती थ | लेंत्लंग से दक्षिण की तरफ रहने पर भी वह इनकी संस्कृति और जीवन में महत्वपूर्ण स्थान ता गया | इनकी आम , घर, खान–पान, रहन-सहन और अंदाज एक ही था | ये स्वयं अपने खाने का प्रबंध कर लेते थे|अपने कपड़े के लिए भी दूसरों की मदद नहीं लेते थे |उनका जीवनसंतोषजनक था उनका सरल जीवन उन्हें एक सूत्र में जोड़े हुए था| जैसे-जैसे मिज़ो समाज स्थिर होता

[14]डोरी

[15]महिलाओं की डोरी

[16]कपड़े का नाम

[17]नि :स्वार्थता

गया वैसे-वैसे जनता की मिश्रित राय का भी सम्मान होने लग | जनता द्वारा आयोजित किये गए कार्य का विरोध करने की हिम्मत किसी भी व्य में नहीं थी, न ही कोई उसे महत्वहीन मान सकत था | इस प्रकार मिज़ो समाज सि ता की ओर बढ़ता गया|"[18]

रहन –सहन:

मिज़ो समाज में एक बहुत महत्वपूर्ण बात यह थी कि वे योद्धा थे जिसके कारण उन्हें 'दूसरों का सर लेने वाला' कहा गया| हर जाति अपनी जाति के अनुसार अलग-अलग स्थान पर रहती थी, मगर पास –पास रहते थे, कभी-कभी मुलाकात होती थी, इकट्ठा होने पर जाति-जाति में लड़ाई हो जाती थी |मिज़ो जाति के लोग अपने राष्ट्र और जाति के लिए अपनी जान तक देने को तैयार रहते थे,वे बहादुर और साहसी थे| तिऔके पूर्व पर निवास करते समय भी इन्हें युद्ध करने का शौक था,मगर उनके लड़ने का ढंग साधारण था|[19]

पारिवारिक व्यवस्थ :

मिज़ो जनजाति संयुक्त परिवार में हने वाली जाति है,यहाँ घर का मुखिया पिता होता है| किसी भी विषय पर निर्णय वही लेते हैं| बच्चों के भविष्य और विरासत का सवाल, घर_परिवार का संचालन एवं पारिवारिक नीतियों के निर्धारण पड़ोसि के साथ सम्बन्ध इत्यादि महत्वपूर्ण विष निर्णय करना उनव विशेषाधिकार था|

"मिज़ो जनजातियों में पिता की विरासत सबसे छोटे बेटे को दी जाती है|1890 में मिजोरम में ब्रिटिश शासन के प्रारंभ हे के बाद भी इस नियम का पालन किय गया| कमिश्नर ा .इ.पर्री (1924-1928) के समय इन नियम में थोड़ा

[18]मिज़ो हनम जिया लेह खाव्त्लंग नून सियाम ठाट 1st ए ,पृ.2,3.

[19]रेव.लिआ ,मिज़ो च ,पृ.21

परिवर्तन हु , मुखिया के बच्चों में सबसे छोटे बेटे को विरासत न देकर सबसे बड़े बेटे को दी जाने लगी|"[20]

मुखिया:

प्राचीन मिज़ो समाज में मुखिया का स्थान बहुत महत्वपूर्ण था या यूँ कहे कि मुखिया ही उनका सब कुछ होता था|युद्ध और शांति, जुताई, विभिन्न त्यौहार मनाना तथा जनता के सभी मामलों के निपटारे हेतु वह उत्तरदायी था| भूमि संबंधी मामले में भी उसका राज चलता था |मुखिया के नियमों का उल्लंघन करने की किसी में हिम्मत नहीं थी |जनता में भी उसी का राज था| जब चाहे तब गॉव से किसी को भी निकाल सकता था,किसी की जान को भी बख सकता था|

सलाहकार:

"मुखिया अपनी मदद करने के लिए एक सलाहकार की नियुक्ति करता था जो कि उसका सम्बन्धी, वीर और अच्छा खेती करने वाला होता था, जिन्हें मिज़ो भाषा में khawnbawl upa/ lal khawnbawl कहा जाता था I मुखिया के घर के पास उनका घर होता था,जहाँ मुखिया और सलाहकार रहते थे उस जगह को mual veng कहा जाता था| मुखिया सलाहकार की नियुक्ति व वालों की संख्या के अनुसार करता था |"[21]ज्य दा गॉव वाले हो तो ज्यादा सलाहका की आवश्यकत होती थी| मुखिया और सलाहकार अपने गॉव वालों के लिए निष्पक्षता के साथ

न्याय करते थे| शासन करते समय उन्हें बहुत सारी कठिनाइयों का सामना कर पड़ता था I कानूनी कारवाई /शिकायत को सुलझाने के बाद जो जीत जाता था उसे आभार रूप में मुखिया के शराब का एक मटका रखना पड़ता था |मिज़ो

[20]ऍफ़.लियनहमिंगथांग एंड .ललथांगा ,मिज़ो नून हलुई पार्ट 1पोल रिआत ज़िलै 1st ए ,पृ.9
[21]F.Lianhmingthanga&B.Lalthangliana,.Mizo nun hlui part-1 pawlriat 8zirlaibu 7thedition p-8.

जनजातियों का शासन प्रबंध उ जीवन पद्धति के साथ सामंजस्यपूर्ण और उनके अनुकूल होता था,जो उनके लिए अच्छा भी था|

लोहार:

"लोहार का काम केवल कुशल/निपुण व्यक्ति कर सकते थे | मिज़ो समाज में भी इनका काम महत्वपूर्ण मान जाता था| हर गॉव में एक या दोलोहार हुआ करते थे| मुखिया के साथ इनका सम्बन्ध गहरा होता था | कभी-कभी तो उन्हें मुखिया का लोहार कहा जाता था,इनके लिए अलग'Pum'[22](पूम)बनाया जाता था| गॉव वालों के लिए दाव, कुल्हाड़ी ,कुदाल,हंसिया,खुरपा और लोहे से चीजें बनाना इनका काम था|"[23]

मिज़ो समाज में पुम एक खास स्थान ,जहाँ लोहे का सामान तैयार किया जाता था| इसमें काम करने वाले पुरुषों की रोजी रोटी भी यही थी | जो लोग यहाँ सामान बनवाने आते थे वही इनके लिए खाने-पीने की चीजें भी ले आते थे|आमदनी का कोई स्रोत स्थल नहीं थ , यहाँ Pum में काम करने वाले के पास खेती का समय नहीं होता था |एक तरह से यहाँ काम करने वाले दूसरे का सामान बनाकर उनकी सेवा ही कर रहे थे | यहाँ महिलाओं को खास इज्जत दी जाती थी| अगर कोई महिला लोहे का सामान बनवाने आती थी तो दूसरे से पहले उनका बनाया जाता था |शूरवीर khuangchera नाटक में इसे रेखांकित किया गया है |जिसकी चर्चा तीसरे अधयय में की जाएगी|

उद्घोषक :

"उद्घोष , मुखिया और सलाहकारों रा बनाए गए निर्णय को जनता त पहुँचाने का काम करता था|मुखिया किस भी समय संदेश दूसरों तक पहुँचासके इसके लिए

[22]लोहार का काम करने का जगह

[23]Lalsangzuali sailo,classx puitu11th Edition p-130.

उसे मुखिया के घर बराबर जाना पड़ता था| या यूँ कहे कि वह एक प्रकार से नौकर का काम करता था|इसकाम को नीचा माना जाता था| मुखिया उसके वेतन के लिए घर-घर से धान इकट्ठा करवाता था| उसका वेतन ज्यादा नहीं था| मगर वह भी खेती करता था|इसलिए उसका काम इतना बुरा नहीं थ |"[24]

सदोत:

"मिज़ो समाज में सदोत का महत्वपूर्ण | वर्तमान में हम इ Pastor(पादरी) कह सकते हैं |"[25]मिजोरम में कई जातिय थी और हर जाति का एक धर्म गुरु हुआ करता थ ,जो त्याग भावना से दिए गए माँस की देख-रेख करता था| जब भी कोई धार्मिक कार्य होता था तो वह उनके द्वारा ही आयोजि किया जाता था | सदोत पुजारी का काम किया करता थ , तैयार किये गए माँस का कंधे वाला हिस्स उसके हिस्से का होता था | "मिज़ो जनजातियों के अ – अलग जनजातियों में भी ऐसी जाति थी जो एक दूसरे के करीब थी इसलिए एक ही पुजारी से धार्मिक कार्य करवाते थे| जो एक ही पुजारी से काम करवाते थे उन्हें 'Dawisa kil za thei' कहा जाता था|"[26]

बोल्पू :

"बोल्पू'वैध या हकीम जैसा कार्य करता था| जिस रोगी का वह इलाज

करता था उन्हें बहुत सारी चीजों का त्याग करना पड़ता थ | 'बोल्पू'रोग के अनुसार ही सुअर, मुर्गी या कुत्ता आदि रोगी को खाने के लिए कहता था|"[27] यह एक प्रकार का शुल्क हुआ करता था जिसे त्याग कहा गया ।'बोल्पू' त्याग के रूप में दिए गये माँस

[24]Lalsangzuali sailo,classx puitu11thEdition p-130.पृ.130

[25]K.Zawla,.Mizo Pi Pute leh an Thlahte chanchin6thEdition p-131.

[26]F.Lianhmingthanga&B.Lalthangliana,.Mizo nun hlui part-1 pawlriat 8zirlaibu7thedition25.

[27]F.Lianhmingthanga&B.Lalthangliana,.Mizo nun hlui part-1 pawlriat8zirlaibu7theditionp25.

को तैयार करने के लिए किसी मदद लिया करता था जिसे 'Bawlpu Hnungzui'[28] कहा जाता था |'बोल्पू' गीत गाकर इलाज करता था,रोगी के रोग के अनुसार अलग–अलग गीत गाया करता था जिसे 'Thiam hla'[29] कहा जाता था |यह उसके लिए बहुत कीमती था और इसका ज्ञान किसी को भी नहीं देता थ , मगर जब उसे ये लगने लगता था कि वह इस

काम को करने लायक नहीं रहा तो वह अपने संबंधियों में से ही इस काम को करने हेतु किसी योग्य व्यक्ति को चुनता था और Thiamhla को उसे उत्तीर्ण करन होता था |"हर जाति एक ही बोल्पू का प्रयोग कर सकती थी | हर गॉव के बाहर त्याग करने का एक स्थान होता था जहां वे त्यागकरने मान्यता के अनुसार धर्म-कर्म का निर्वाह किया करते थे| यहाँ सबको 'Dawi'[30] का डर रहता था, क्योंकि त्याग के लिए बहुत खर्च करना पड़ता थ । उसे रद्द करने के लिए भी उसे 'Sepui'[31]देना पड़ता था |"[32]

सामाजिक जीवन:

"मिज़ो जनजाति की संस्कृति और समाज की झलक ह उनकी जिंदगी में देखने को मिलती है |उनका जीवन सरल था। जरुरत पड़ने पर दूसरों की मदद करने,जनता के लिए कार्य करने के लिए वे हमेशा तत्पर रहते थे | मगर कभी-कभी ऐसी समस्या भी आती थीं जो मुखिया और सलाहकार तक पहुँ जाती थीं और उसेसुलझाना पड़ता था-जिसमें पति-पत्न के बीच की समस्याएंतथा न -युवकों और युव तियों की समस्याएं ज्यादा होती थीं |"[33]

[28]बोल्पू का सहाय
[29]बोल्पू जो गीत गता था
[30]त्या
[31]मित्थु
[32]K.Zawla,.Mizo Pi Pute leh an Thlahte chanchin6th Edition p-131.
[33]K.Zawla,.Mizo Pi Pute leh an Thlahte chanchin6th Edition p-129

गांव में अशांति पैदा करने वाले भी होते थे,मुखिया ऐसे लोगों को बुलाकर उ की निंदा करता था। मुखिया की बात न मानने के कारण, जब ऐसे लोग शिकार के लिए निकलते थे तो मुखिया ये उम्मीद किया करता था कि वे जिन्दा गॉव न लौटें | फिर उसव लाश के बदले बड़े पत्तों को इकठ्ठा करके गाँव वापस लाया जाता थ , जिसे उसके परिवार वालों नहीं दिखाया जाता थ |ऐसा माना जाता था की जो कोई अपनी माँ और बच्चों के लिए असुविधापूर्ण वातावरण बनाव , उसे अपने वंश को बढ़ाने से पहले मार देना ही उचित है।

समाज सहयोग और समन्वय की भावना से प्रेरित । अपने धान की कटाई कर लेने के बाद,जिनकी फसल की कटाई नहीं ह ई होती थी उनकी मदद की जाती थी। किसी कीकटाई ख़तम न होने पर भी अगर वह –युवक घर में पड़ा रहता था तो मुखिया उसकी निंदा करता था। किसी की भी घर में बैठे रहने की हिम्मत नहीं होती थी। बीमारी के कारण कोई कटाई नहीं कर ता था तो गॉव वाले उसकी मद किया करते थे।

“मुखिया और सलाहकार जव री समझते थे तब सामाजिक कार्य हेतु श्रम करने के लिए गॉव वालों को बुलाते थे। निम्न कार्यों के लिए सामाजिक श्रम के रू में कार्य किया जाता था – मुखिया का घर बनाना, ज़ोलबूक बनाना, गुफा बनाना, खेती के लिए रास्ता बनान , गॉव का रास्ता बनाव , पानी की पूर्ति आदि के लिए। सामाजिक श्रम में व लोगों से कार्य करने कीअपेक्षा नह की जाती थी, जैसे - विधवा, निकम , अपंग आ । जो सामाजिक श्र कार्य हेतु नहीं आते थे,उन्हें सजादी जाती थी। यह सजा सामाजिक श्रम शामिल लोगों द्वारा दी जात थी। सामाजिक म कार्य में शराबी को काम करने की अनुमति नहीं दी जाती थी, उन्हें घर लौटने को कहा जाता था और काम न किये हुए लोगों में गिना जाता था। आलसी लोग से कोई भी दोस्ती नहीं करता था तथा ऐसे लोगों से लोग ज्यादा बातें

भी नहीं करते थे। उनके लिए रिश्ते भी बहुत कम आते थे, कोई भी लड़की उनसे विवाह के लिए तैयार नहीं होती थी।"[34]

जोलबूक में नव-युवक अच्छे संस्का , शिष्टता,त्याग , बड़ो का आदर करना व बुजर्गों से सीखते थे। घर में नव-युवतियाँ अपने माँ– बाप एवं परिवारों के बुजगं से अच्छे संस्कार सीखती थीं।खाने का समय मिज़ो समाज में महत्वपूर्ण समय होता था। किसी को फटकार , अनुशासन सिखाना, झगड़ा निपटना आदि कार्य इसी समय होते थे। इसीलिए कहीं भी 'zilh loh fa'[35] देखने को नहीं मिलता था। बैठक, सामाजिक सभा,घरों में पूर्वजों के द्वारा संस्कार और उनके पालन सलाह दी जातीथी, इसी दौरान लोगों को शिक्ष ग्रहण करने की सी और उनकी कमियों प उन्हें फटकार लगायी जाती थी।इससे सम्बंधित मिज़ो समाज में प्रचलित कहाव और उपदेशों की प्रकृति कुछ इस प्रकार से हैं -

" (क) किसी विकलांग पर न हंसना,विकलांग और कुष्ठ रोग से ग्रस्त होने में देर नहीं लगती, यह कभी भी और किसी भी समय हो सकता है।

(ख) माँ बाप का हमेशा सम्मान करे , ऐसा नहीं करने वाले कभी सफल नहीं होते।

(ग) खाना अकेले नहीं, मिल बांट कर खाना चाहिए।

(घ) अभिशाप देने से उसी पर गिरता है।

(ङ) जो कोई माँ और बच्चों वे लिए असुविधापूर्ण वातावरण बनाये, उसे अपने वंश को बढ़ाने से पहले मार देना उचित है।

[34]K.Zawla,.Mizo Pi Pute leh an Thlahte chanchin6thEdition p-130
[35]अनुशासन हीन

(च) पड़ोसियों के विरुद्ध कुछ करने से अच्छा है, 7 गॉवो के विरुद्ध कुछ करना।

(छ) सभ्यता से बोलन , लोगों का दिल जीतना।

(ज)दावत में मांस न खोजना।

(झ) मुर्गी को काटने का एक ही तरीका नहीं है।

(ञ) धूप में सुखाए गए धान को मुर्गी चुगती हैं ।

(ट) अनाथ और समाज एकजुट होते है।

(ठ) खराब महिला रिश्तेदारं को भगाती है।

(ड)जो अपने दोस्तों की मदद नहीं कर सकता उसे घाघरा पहनना चाहिए।

(ढ) पानी आपूर्ति में मर्द राज करते है और पुम में महिला आदि।"[36]

आम जिंदगी में सामान्य , गरीब, विधवा के बेटे, अनाथ और जो कोई शूरवीर न हो – इन सब को उतना महत्व नहीं दिया जाता था, मगर विधवा का बहुत आदर किया जाता । शिकार के लिए महिलाएँ न जाती थी,हर शिकार के बाद मॉस लेने पर विधवा का भी हिस्सा होता था। उन्हें भी मॉस खाने का मौका मिलता था । 'Sangha Tlangvuakna'[37]में महिलाएँ नहीं जाती थी,विधवा का इसमें भी हिस्सा होता था और उसक हिस्सा उसके घर पर रख दिया जाता था। अब आधुनिक समय में ग , विधवा के बेटों , और किसी अनाथ का

[36]Mizo thu leh hla2005 pawl nga zirlai p-21

[37]समूह में मछली पकड़

अनादर करना कई सालों से बंद कर दिया गया है। विधवाओं को समाज में वैसा ही आदर और सम्मान अभी भी दिया जाता ,लेकिन उ के लिए मॉस नहीं लाया जाता है और सांप्रदायि कारणों से मछली पकड़ना भी समाज में बंद हो गया । अब तो ये मृत संस्कृति के अवशेष मात्र रह गये हैं।

समूह में जब शराब पिया जाता था तो गरीब के बेटे और कुछ शर्मीले लोग भी इसमें शामिल होते थे, ऐसे लोगों का अपमान न हो जाए इसका खास ध्यान रखते थे।उनके पास कम शराब होगी तो वे कम पीयेंगे ये सोच कर,जो और शराबखरीद सकता था वह मटके से और शराब निकालता था,हर कोई जितना संभव हो सके उतनी पीते थे। मगर जब से मिज़ो समाज ईसाई धर्म में परि त हो गया तब से यह मृत संस्कृति का हिस्सा बन गया ।

"मिज़ो समाज महिला को कमज़ोर मानता रहा है, इसलिए उन्हें झरने से पानी लाने और खाना बनाने के लिए लकड़ी लाने का काम दिया जाता था| अलग–अलग प्रका की 'Em'[38] (पीठ पर ले जाने वाली टोकरी) चलनी,टोकरी और शास्त्रों का घर मे होना पुरुष का उत्तरदायित्व थ । घर में खाने केलिए धान का न होना मर्द अपमान माना जाता था और भात खाने के लिए न होना महिला का अपमान माना जाता था|"[39]

युवती और युवक जब 'Inlawm'[40]करते थे तो युवती अपने काम में मदद करने वाले युवक के लिए खाना,कपड़ा, आदि साथ ले जाती थी। इस से वह ये दिखाना चाहती थी कि वह भ उसकी परवाह करती है इसे 'Ngal tha chak kan pei' कहा जाता है। घर लौटेते समय युवती रास्ते में सूअर के लिए 'Dawl'[41]खोजती है, कभी जलाने के लिए लकड़ी उठाकर लाती है। युवक अपने थैले में 'दाव' रख कर

[38]पीठ पर ले जाने वाली टोकरी

[39]Mizo thu leh hla2006 pawl riat zirlai p-63

[40]एक साथ काम करना

[41]सुअर का खाना

उसके साथ-साथ चलता है ताकि रास्ते में किसी दुश्मन या जानवर के वार से उसे बचा सके। अब युवक और युवती खेत में एक दूसरे की मदद करते हुए काम नह करते हैं ये भी मृत संस्कृति के अंग बन कर रह गये हैं।

प्राचीन क ल से मिज़ो समाज में कोई सुदृढ़राजनीतिक व्यवस्था नहीं थी। हर गॉव एक मुखिया (लल) के नेतृत्व में स्वतंत्र राजनीतिक ईकाई होता था।एक गाँव का मुखिया अपने गाँव के वीरों के साथ दूसरे गॉव पर आक्रमण करता था और वहाँ के पुरुषों की हत्या कर, गॉव को जलाकर, महिलाओं और ब कियों को गुलाम बना कर अपने गॉव ले आता था। इन दासों से वे गृह कार्य एवं कृषि कार्य में श्रम करवाते थे। दास बनाने की यह प्रथा 19 वीं शताब्दी तक - अंग्रेजों के मिजोरम को गुलाम बनाने तक - मिज़ो समाज में बहुत आम बात थ , परन्तु घर लाए गए दासों पर वे हाथ नहीं उठाते थे। महिलाओं का वे आदर करते थे। वे अपने द्वारा लाए गए दास पर हाथ उठाना और महिल से बलात्कार करना अच्छा नहीं मानते थ ।उनके दास छुटकारा पा सकते थे पर महिला को मुक्त कराने के लिए मिथुन और किसी पुरूषकी मुक्ति वे लिए ताम्बे का डोला देना पड़ता था, अगर उनके परिवार वाले उन्हें नहीं छुड़ा पाते तो उनके विवाह की जिम्मेदारी उन्हें ही उठानी पड़ती थी। वे अपनी जाति भी अपने मालिक की जाति में बदल लेते थे, ऐसे बहुत सारे उदाहरण देखने को मिलते हैं ।

“1890 ई॰ से अंग्रेज मिजोरम को गुलाम बनाकर उस पर शासन करने लगे। 1892 में कमिश्नर ए .सी कैबे के स्थान पर ए.डालू दाविस इ.सी.एस मिजोरम के प्रशास बनाये गए। जिन्होंने मिजोरम के लिए नए नि बनाये इनम जो सबसे पहला नियम था वह यह कि किसी भी गाँव पर हमला न करना, जो मुखिया ऐसा करे उसे मार देना।”[42]जब से ऐसा नियम बना किसी भी एक दूसरे पर हमला करने की हिम्मत नहीं ह । दास बनाने क प्रथा बंद हो गई, मिजोरम में शांति स्थापित हो

[42]Mizo chanchin 5th edition,.Rev.Liangkhaia,p-150.

गई,नए और अच्छे –अच्छे कानून बनने लगे और इन प्राचीन प्रथाओं का
समाज में अंत हो गया।

अस्वस्थ होने या किसी भी दुर्घटना के कारण यदि कोई चलने फिरने असमर्थ होता था तो गाँव के अन्य उद्धोषव पुरुष उस , मदद करते थे और उसे उठाकर ले चलते थे। यदि किसी को उठाने की आवश्यकता पड़ती थी तं उद्धोष सूचना देता था। जैसे ही गाँव वालों को खबर मिलती थी वे वहाँ पहुँचने की कोशिश करते थे। बीमार को उठाने के लिए ह्लंग या तोलाइ बनाया जाता था और बिना समय गंवाए जल्द जल्दी बीमार को उठा कर दिया करते थे। रास्ते में आने वाले दूसरे गाँव के लोग भी बीमार को उठाने में उनकी मदद किया करते थे।

दोस्तों के लिए त्याग:

"यह भाव आ ल से मिज़ो समाज में चलता आया है और आज भी जनजातियो के बीच देखने को मिलता है। अपने मित्र के लिए खतरा उठाना औ अपनी जान को जोखिम में डालना मिज़ो लोगों के जीवन में आदिकाल से ही देखने को मिलता है। मिज़ो शूरवीर खतरनाक जानवर के सामने आने पर भी नहीं डरते थे

और न ही दूर भागते थे। अपने दोस्तों की म करने और उन्हें बचाने आदि में वे अपनी सुरक्ष को भूलकर,बिना सोचे-समझे ही कदम आगे बढ़ाते और उन्हें संकट से निकाल कर ले आते थे।केवल अपने दोस्तों की जान बचान ही उनका प्रमुख ध्येय होता था।"43

अतिथि:

[43]B.Lalthangliana,.Zotui 1st Edition p-115.

आ। काल में जब कोई किसी के गाँव जाता था तो वह उन से आदर के साथ पूछता था कि "Min lo thleng thei angem"[44](क्या मैं आपका मेहमान सकता हूँ) ? कोई भी अतिथि को अस्वीकार नहीं करता था अ र उन्हें अपना अतिथि बना लेता था ।वे अपने अतिथियों को अपनी ओर से पूरा आदर और प्यार देने की कोशिश करते थे ।जब वे वापस जाने को तैयार होते थे तो उनके लिए रास्ते के लिए खाना भी बनाकर देते थे।अगर शूरवीर किसी के अतिथि हों तो उनके पंहुचते ही 'zufang'[45] परोसी जाती थी और उसके बाद शराब के बड़े मग से शराब निकालकर पड़ोसियों साथ पिया जाता था ।

Tlawmngaihna(नि:स्वार्थता):

त्लोमङई का अर्थ है "अपने को दूसरों के लिए त्यागना, दूसरों का हिस्सा न छिनना,खान –पान में भीत्यागन है । 'मैं अपने लिए नहं , अपने लोगों के लिए काम करता हूँ, कमाता हूँ'यह वाक्य मिज़ो -जातियों की इस प्रवृति को बहुत स्पष्ट करताहै ।"[46] नि: स्वार्थ व्यक्ति घमंडी नहीं होता है, मजाक नहीं करता है ।केवल अपने लिए नहीं सोचता है,लोभी भी नहीं होता है,उसके पास जितना है

उससे खुश रहता है | वह अपने को दूसरों के लिए त्यागता है । समय आने पर अपने को निम्न स्थान पर भी रख देता है ।पूर्वजो के समय से ही नि: स्वार्थता की भावना समाज में चलती आ रही है जो आज भी मिज़ -जन जातियों के दिल में बहुत हद तक बनी हुई है ।यह व्यवहार व्यक्ति कहीं भी नीचा नहं , ऊँचा ही उठाता है । नि: स्वार्थ भाव इनके व्यवहार का हिस्सा है इसका प्रयोग करने में वे नहीं हिचकिचाते हैं ।

[44]F.Lianhmingthanga,.Mizo Pawlriat zirlai Part 1,p-39.

[45]शराब

[46]B.Lalthlengliana,.Zotui 1st Edition,p-118

यह भाव और समप पूर्वजों के समय से ही,मिज़ो संस्कृति का अभि हिस्सा रहा है। इसी पर मुकाबला होता था। नि:स्वार्थ व्यक्तियों के कारण इ मिज़ो समाज के लोग सभी प्रकार व आपदाओं और संकट से बचे रहते ,क्योंकि ये वीर नि:स्वार्थ भावना से आगे बढ़क तथा स्वयं सभी प्रव र केखतरों यथा जानवर औ दुश्मनों के आक्रमण आदि सामना करते थे और जनता खुशी-खुशी जीवन यापन करती थी। निराश लोगों के लिए वे आशा थे, अन्धकार में रौशनी की किरण थे। इनके कारण ही मुखिया सर उठा कर जीता था। सलाहकार भी तनाव से मुक्त रहते थे। मुखिया और उसके सलाहकार नि:स्वार्थ व्यक्ति को प्रोत्साहित करने के लिए 'chawgchen,sechhun और khuangchawi'[47] पुरस्कार देते थे जिसे 'Thingfarzan'कहा जाता थाऔर नि:स्व र्थ नवयुवक को 'Nopui'[48] दिया जाता था। इस प्रकार जनता में नि:स्वार्थ व्यक्ति और वी का सम्मान बहुत देखने और सुनने को मिलता है।

इस संस्कृति कि उत्पत्ति "tlawmngaihna leh aia upa zahna"[49](नि:स्वार्थ और ज्येष्ठ व्यक्ति के सम्म) से हुई थी। मेहनती और कोई भी कार्य करने के लिए तैयार रहने वाला व्यि इसका हकदार होता था।आलसी और

अकर्मण्य लोगों के लिए स स्थिति तक पहुँचना बहुत कठिन थ । आज भी यह संस्कृति मिज़ो समाज में मौजूद है। इसका कारण हमारे पूर्वजों के संस्कार और प्रदत्त नैतिक मूल्य हैं। मिज़ो समाज के प्राचीन नैतिक मूल्य और शिक्षा इस प्रकार हैं -

Ram kalnaah (कृषि कार्य):

बड़ा हो या छोटा हर कोई जंगल में सब्जी खोजने जाता था। यह उनकी दिनचर्या का अनिवार्य हिस्सा था जो की आज भी है और यह उनकी संस्कृति का हिस्सा बन गया

[47]पुरस्कार का न
[48]बड़ा मग
[49]B.Lalthlengliana,.Zotui 1st Edition,p-118

है। कोई मछली पकड़े, कोई केकड़ा को पकड़े, कोई फलों को तोड़े और इन सब को अपने-अपने थैले में रखते जाएँ, मगर घर लौटते समय उसे एक ही जगह रखकर समान रूप से आपस में बाँटा जाना जरूरी होता था। उन के बीच जो उम्र में सबसे छोटा है,उसे सबसे पहले चुनने को कहा जाता था। उसके बाद उससे बड़े उम्र के लोग बारी-बारी से चुनते थे।अगर कोई चीज बाँटने लायक मात्रा में नहीं होती थी, तो जो सबसे छोटा हो उसे दिया जाता था। अगर कोई महिला साथ आती थी और बाँटने लायक कोई सामान नहीं होता था तो वह पूरा सामान उस महिला को घर ले जाने के लिए दे दिया जाता था। रास्ते में भी सबसे छोटा सबसे पहले चलता था और ज्येष्ठ पीछे। इसके पीछे की धारणा यह रही है कि "Naupang hnuhnuntir chu laikingin chil a chhak duh e"[50] अर्थात् बच्चा यासबसे छोटा व्य अगर सबसे पीछे जाएगा तो वह पीछे ही रह जाएगा, कोई जानवर उस पर हमला कर सकता है। इसलिए सबसे छोटा आगे चलता था और उसके पीछे उसकी चाल अनुसार दूसरे उनका अनुगमन करते थे।

खान पान :

खान पान में छोटे बड़ों का आदर करते थे। शिकार में और दावत में भी बड़ों के खाने से पहले कोई नहीं खाता है।वे बड़ों की प्रतीक्षाकरते थे। जो ऐसा नही करता था उसे असभ्य म न जाता था। ज्येष्ठ अपने हिस्से का माँस बच्चों को खाने के लिए देते थे, ये संस्कृति आज भी कहं -कहीं देखने को मिलती है।

जोलबूक :

जोलबूक युवकों के सोने का स्थान है। हर गॉव में कम से कम एक जोलबूक होता था। गाँव यदि बड़ा हो तो बड़ा जोलबूक होता था छोटा हो तो जोलबूक भी छोटा होता

[50]F.Lianhmingthanga&B.Lalthangliana,.Mizo nun hlui part-1 pawlriat 8zirlaibu7th edition p-74

था। बड़े गॉवो में तो एक से ज्यादा भी जोलबूक बनाते थे। जोलबूक साधारण घरों से बड़ा बनाया जाता था। बीच में आग जलाई जार्त थी इसलिए बीच की छत ऊँची होती थी ताकि छत में आग न लग पाए। इस कारण जोलबूक दिखने में झुका हुआ दिखता था,ना कोई किवाड़ होता था और ना ही इसकी कोई दीवार होती थी। ऊपर बांस से विभाजित दीवार होती थी औरनीचे पुर खुला होता था। छाती तक की ऊँचाई में बड़े से पेड़ के तने को क्षैतिज रूप में रखा जाता था जिसे 'Bawhbel' कहा जाता था। जिनका बोह्बेल बड़ा हे था उनका गॉव बड़ा माना जाता था। bang hmai chunglam pin (आगे की छत)और Bawhbel bang जहाँ एक दूसरे को छूते हैं उसे 'Awkpaka' कहते हैं|बीच के चूल्हे को 'Dawhthleng'[51] से घेरा जाता था और फर्श बहुत बड़ा होता था, जिसमें कुश्ती होती थी। युवक रात को सोते थे जिसे 'Buanzawl'[52] कहा जाता था। बोह्बेल के पास बच्चें रोज लकड़ी ला कर रखते थे जिसे रात में युवकों द्वारा जोलबूक में जलाया जाता था।

"(क) जोलबूक में युवक बलवान बनना सीख थे। बच्चें जो लकड़ी लाते थे उन्हे 'Buanzar'[53] में कुश्ती लड़ना सिखाया जाता था |कभी वे खुद भी कुश्ती करते थे।

(ख) इतिहास का मौखिक पाठ भी पढ़ाया जाता था। चूँकि मिज़ो के पूर्वज अनपढ़ थे इसलिए वे मौखिक रूप से अपना ज्ञान न पीढ़ी को सौपते थे। पूर्वजों के इतिहास व शूरवीरों की कहानियों के बारे में नव युवकों को जानकारी जोलब्क में बुजुर्गो की बातचीत से मिलती थी।

(ग) सामाजिक जीवन का पाठ यहीं से सीखा जाता था। रहन सहन और तौर तरीकों का पाठ जैसे ज्येष्ठ का सम्म करना,नि:स्वार्थता की भावना, बलवान बनाना,आज्ञाकारी बनना आर्ा जोलबूक में सीखा जाता था|

[51]चूल्हे को पास बैठने की जगह
[52]कुश्ती लड़ने की जग
[53]कुश्ती लड़ने की जग का दूसरा नाम

(घ) युवकों में एकमत और एकजुटता क भावना विकसित करने के लिए भी जोलबूक अच्छा स्थान थ , क्योंकि वे वहीं एक साथ रहते, सोते थे I आपदा आने पर भी वे एकसाथ होकर उनका सामना कर सकते थे I वे सुख-दुःख में एक-दूसरे के सहभागी होते थे, दुश्मन और जानवरों से लड़ने के लिए भी सब साथ मिलकर लड़ते Iजोलबूक में न -युवक अच्छे संस्क ,शिष्टता,त्याग,बड़ो का आदर करना बुजुर्गो से सीखते थे I घर में नव-युवतियाँ अपने माँ – बाप एवं परिवारों के बुजुर्गों से अच्छे संस्कार सीखती थीं I"[54]

त्यौहार एवं नृत्य :

"मिज़ो समाज में त्यौहार और नृत्य का महत्वपूर्ण स्थान है I त्यौहार कब से मनाय जा रहा है कहा नहीं जा सकता है I मिज़ो जनजाति जब बर्मा देश में निवास करती थी तभी से वे विभिन्न प्रकार के त्यौहार मन ते आ रहे हैं I"[55]

"मिज़ो विद्वानों एवं पूर्वजों की बातचीत से यह पता चलता है कि, जब वे रुन और टीऊ के बीच(1450 -1700 ई.के बीच) रहते थे तभी से त्यौहार और नृत्य उनके जीवन का हिस्सा रहा है I"[56]त्यौहार जब मनाया जाता थ तब Chai और Lamका होना भी आवश्यक थ I इसलिए माना जाता है कि इनका समय एक ही है I मिज़ो जनजातियों के तीन महत्वपूर्ण त्यौहार हैं :

(क) Chapchar Kut (चप्चार कूत) (ख) Mim Kut (मीम कूत)

(ग) Pawl Kut (पोल कूत)

चप्चार कूत :

[54]J.Liankhuma,.pawl x Mizo 2009 Zawlbuk p-?

[54]K.Zawla,.Mizo PiPute leh an thlahte chanchin 6th Edition,p-50.

[56]R.chaldailova,.Mizo PiPute khawvel 1st Edition,p-117

मिज़ो पूर्वजों का मानना है कि मिज़ो जनजाति जब चीन राज्य के आस -पास रहती थी तब एक बार कुछ शूरवीर Chapchar awllen (खाली समय) के समय शिकार करने निकल पड़े I अपेक्षित रूप से वे अपने शिकार में कामयाब नहीं हुए I घर लौटते समय उन्होंने सोचा कि घर पहुंचने पर उन्हें कितना शर्मिंदा होना पड़ेगा और थकान मिटाने वाली शराब (Hahzu) भी उन्हें पीने में शर्म आएगी I ऐसे लज्जित भाव से लौट रहे अपने शूरवीरों को देखकर उनके एक वरिष्ठ से रहा नहीं गया तो उन्होंने कहा "ऐ ! मेरे भाइयो, लज्जित न हो , हम स्वस्थ रहें , हम फिर शिकार के लिए निकलेंगे, बड़े-बड़े सींगों वाले बड़े जानवर को मारेंगे,पूरे गॉव वालों को मांस खिलाएंगे ! कल हम जरुर Hahzu पिएँगे Iमैं बड़े मटके का योगदान करूँगा और तुम लोग छोटा मटका लेकर आना I हम ऐसे जश्न मनाएंगे जैसे हम कामयाब हुए हों और शराब पिएंगे, यह कह कर उसने अपने शूरवीरों को सांत्वना प्रदान की I"[57]

उसके अगले दिन hahzu पिया गया I दूसरे दिन के मुकाबले उसदिन लोगों ने जश्न का मजा लिया I जो लोग उनकी आवाज को सुन रहे थे,वे भी अपने शराब के मटके को लेकर उसके पास चले आए I शाम तक तो उन्हें घर भी छोटा लगने लगा और वे टीले पर निकल पड़े, वहां एक-दूसरे को पकड़कर नृत्य करने लगे I उनके मुखिया अपने गाँव वालों को ऐसे एक साथ खुशी–खुशी मंथन नृत्य करते देख बहुत प्रसन्न हुए , वे भी अपने शराब के बड़े मटकोंको लेकर उनके बीच शामिल हो जाते I इतने के बाद भी वह दिन उनके लिए नाकाफी रहा I उसके अगले साल भी धान कटाई के बाद चप्चार के खाली टीले पर फिर से नृत्य करना प्रारंभ कर दिया गया I फिर तो हर साल उसी स्थान पर नृत्य किया जाने लगा और चप्चार कूत त्यौहार का जन्म हो गया और उसकी परंपरा चल पड़ी I

[57]F.Lianhmingthanga&B.Lalthangliana,.Mizo nun hlui part-1pawlriat 8zirlaibu7thedition p-48

मिज़ो त्यौहारों में **मिम व्** और **पोल्कु** का निश्चि समय होता है, मगर चप्च र कूत जनता द्वारा मनाया जाता है। जब यह त्यौहार मनाया जाता है तो हर परिवार मांस खाने की इच्छ रखता है त्यौहार का दिन आने से पहले वे त्यौहार के लिए मांस खोजा करते हैं। जिन के लिए त्यौहार पर मांस पाना मुश्किल होता है वे भी मुर्ग का मांस त्यौहार के लिए रखते हैं।जिनके पास मुर्गी भी नहीं होती है उनको कोई बुद्धिमान आदमी चुपके से मांस देता है। इस त्यौहार को ख़ुशी का त्यौहार म ना जाता है। इसलिए पति-पत्नी के बीच झग , पड़ोसियों के साथ झगड़ा,बच्चों के बीच झगड़ा वर्जित होता था। नव युवक-युवती अपना सबसे अच्छ वस्त्र पहनते थे, टीले पर एक दूसरे की बांह को पकड़कर एक साथ नृत्य किया करते थे। बीच में सींग (seki) और ढोल को बजाने वाले खड़े होते थे।माँ,बाप और बुजुर्ग ऊँचे पहाड़ से अपने बच्चों की गतिविधि पर नजर रखते थे। मुखिया और सलाहकार पूरे दिन शराब पीते थे,इस दिन परिवार के अन्य सदस्य म ,युवती, युवक भी शराब पीते थे। पूर्वजों के समय चप्चार कूत वह दिन था जब पूरी जनता एक साथ खुशी मनाती थी।

दोपहर को माएँ मांस, भात और पके हुए अंडे लेकर घर के बाहर अपने बच्चों के साथ खाती हैं। उसके बाद अपने खाने को अपने दोस्तों को खिलाती हैं और एक दूसरे

के पीछे भागते हुए खेल कूद की तमाम गतिविधियों से अपना मनोरंजन व हैंजिसे 'chhawnghnawt' कहा जाता है|

मिम कूत:

यह त्यौहार अपने सम्बन्धि , बड़े बुजुर्गों के लिए किये जाने वाले श्राद्ध कार्यक्रम जैसा है।मृत्यु को प्राप्त हुए लोगों को खाना और पानी देने का एक धार्मिक विश्वा है और इसे मिज़ो समाज 'vaimim char seng zawhah'[58]के रूप में मनाया जाता

[58]अगस्त से सितम्बर मह

है| यह अगस्त के अंत या सितम्बर के पहले सप्ताह में मनाया जाता है। इसका दिन मुखिया और सलाहकार द्वारा तय किया जाता है।कहा जाता है कि मीम कूत त्यौहार की मान्यता के पीछे "त्लिंगी और ङमा की एक कथा है"[59] ।ये पति-पत्नी एक दूसरे से बहुत प्यार करते थे। दुर्भाग्य से त्लिंगी कि मृत्यु हो जाती है। ङमा भावुकता में रो-रो कर समय बिताता ।रोते-रोते एक बार वह बेहोश होकर गिर पड़ता है और स्वपनलोक में वह मृतकों के गॉव हुंच जाता है जहाँ वह देखता है कि त्लिंगी बहु दुबली पतली, कृशकाय हो गई है। कारण पूछने पर त्लिंगी ने उसे बताया कि यहाँ खाना बहुत कम मिलता है ।इसके साथ ही उसने ङमा को घर लौटने की -सलाह दी और खेत में काम करने को कहा ।ङमा लौट आया और जैसे ही स्वप्न लोक से लौटा वह होश में भी आ जाता है ।अपनी पत्नी की आज्ञान् ङमा अपने खेत में काम करने चल पड़ता है| काम करके जब घर लौटता है तभी दरवाजे के सामने, जहाँ पानी रखने का स्थान होता है वहां पर वहगिर पड़ता है। उसके साथ ही खेत से लाए गए सारे खाद्य पदार्थ भी गिर पड़ते हैं,उसने उन्हें बिना उठाये ऐसे ही रहने दिय और कहा "त्लिंगी अपने फलों को खा लो"। यह कहते हुएरोते-रोते

ङमा बेहोश हो जाता है और फिर स्व लोक से गुजर कर मृतक पढ़ के गॉव पंहुचता है। त्लिंगी से मिलने पर उसने कहा कि उसके दिए हुए खाने के कारण अब वह खुश और मोटी होने लगी है। ङमा फिर घर लौट आया और होश में आता है। इसी दिन से हर साल जो खाद्य पदार्थ खेत में सब से पहले उगता, त्लिंगी के लिए अलग रखा जाता है। लोग उसका कारण जानकर अपने मरे हुए संबंधियों के लिए भी ऐसा करने लगे जिससे उनके सम्बन्धी मृतकों के गॉव में भूखे न रहें। तब से 'Mitthi thlai chhiah'[60] और 'Mim kut' का जन्म हुआ |

पोल कूत:

[59]अगस्त से सितम्बर महि

[60]मृतकों के लिए वनस्पति रख

पोल कूत का जन्म इस प्रकार हु : एक बार युवक गण 'Pawl' के शिकार में बहुत कामयाब हु । भुने हुए चूहे के मांस को वे एक दूसरों में बाँटने जा रहे थे,ऐसा करके वे खेल खेलते हैं। पोल से 'sakuhuilut'[61] बनाया जाता है, पोल के अंदर चूहे को रखा जाता है,sakuhuilut में रेंगते हुए जाना पड़ता है। छुपाए हुए चूहे को आँखे बंद करके ढूँढा जाता है मिलजाए तो उसे खूब खाने को मिलता है। पहले इसे 'Luh kut kut' [62]कहा जाता था,हर साल फसल के बाद, चूहे को पकड़ने के खेल द्वारा मनोरंजन किया जाता है।बाद में इसे 'Pawl Kut'का नाम दिया गया जिसे तीन दिन से ज्यादा नहीं मनाया जाता है। जिस दिन यह त्यौहार खत्म होता है, वह दिन नए साल का पहला दिन माना जाता है।

नृत्य :

मिज़ो संस्कृति में मिज़ो जन-जातियों के अलग-अलग नृत्य प्रसिद्ध । ये नृत्य मिज़ो संस्कृति को मजबूत करने और उसे एक सूत्र में बांधने का काम करते हैं,जैसे चेरो नृत्य। कहा जाता है कि मिज़ो पूर्वज जब टीउ की तरफ रहते थे तब से यह नृत्य चलता आया है। कोई जाति जब सौ धान का भार (Buh za)जमा कर लेती थी तो उसक खुशी में यह नृत्य किया जाता था। कोई कहता है जब कोई मरता है तब यह नृत्य कि या जाता है। बच्चें पूर्णिमा की रात को 'Pawnthona'[63] में मनोरंजन के लिए नाचते हैं। कभी-कभी वयस्कयुवक और युवती भी इसमें नृत्य करते हैं। समय बीतता गया और यह नृत्य मिज़ो जन जातियों में सबसे प्रसिद्ध नृत्य बन गया।चेरो नृत्य बहुत कठिन नृत्य है इसके लिए चुस्त, सचेत और सक्रिय रहना जरुरी है।

इसके अलावा चायलाम,ल्लंगला ,छेइहलाम,सारलामकाइ,चोंगलाईज़ , खुआललाम आदि नृत्य भी मिज़ो जीवन और उनकी संस्कृति में शामिल हैं।

[61]ऐसा खेल जिसमे एक दुसरे के पीछे खड़े होकर पीछे वाला झुक कर आगे जाता है दुसरे भी ऐसा ही करते जाते है|

[62]झुककर जाने वाला त्यौहार

[63]पूर्णिमा के रात को खेलने के लिए बच्चों का संगठन

अर्थशास्त्र :

प्राचीन मिज़ो समाज : रुपये पैसे का चलन नहीं था। इसलिए किसी प्रकार व व्यावसायिक गतिविधि नहीं होती थ । लेकिन निम्नलिखित वस्तुओं को महत्वपूर्ण और कीमती ना जाता था जैसे दार,दारखुंग,दारबु, दारमंग, सिलाई, ठी,thihna,ठीवल, दारबेल आदि। जानवरों में कुत्त ,मुर्गी, मिथुन,सुअर, बकरा आदि।

मिज़ो जन-जातियों के बीच गरीब और अमीरों में कोई भ -भाव नहीं है। जाति-जाति के बीच कोई भेद-भाव नहीं होता। पड़ोसियों के साथ भी ये संबंधियों की तरह रहते थे। पड़ोसियों को वे सब्जि मांस आदि की बिक्री नहीं करने देते थे, बल्कि एक दूसरे को मुफ्त में देते थे। जब सूअर को भी मारा जाता था तो वे पड़ोसियों के साथ मिल बाँटकर खाते थे। दूध भी बिना दाम दिए मिलता था तो बच्चे उसे लेने के लिए पंक्तियों में खड़े हो जाते थे। saum, sahriak आदि भी पड़ोसियों जरूरी होने पर ले लिया जाता था। जब खाने की वस्तु की सहज उपलब्धताहो तो ख़ूब खा लेते थे मगर उसे भविष्य के लिए संग्रहित करना नहीं जानते थे।

कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि प्राचीन मिज़ो समाज अंग्रेजो के आगमन के पूर्व तक गैर व वसायिक समाज था,जिसमें किसी भी प्रकार व वसायिक गतिविधियाँ नहीं होती थी। सभी लोग आपसी सहयोग एवं भाईचारे से जीवन यापन करते थे। जैसे–जैसे वे विकसित होते गए और खेती से अपनी आवश्यकता की पूर्ति नहीं कर पाए तो 19वीं सदी से व्यापार करने लगे।

भाषा:

“भाषा जाति में एकता पैदा करती है, समाज और संस्कृति की अभिव्यक्ति भी इसी होती है। एक ही भाषा का प्रयोग करने वाले जहाँ भी रहें,एक दूसरे के बहुत जल्दी

प्रिय बन जाते हैं । विद्वानों व कहना है कि मिज़ो भाषा तिबेत –बम न भाषा परिवार का एक हिस्सा है ।"[64]

सभी मिज़ो जनजातियाँ मिज़ो भाषा का प्रयोग करती है । जिससे उनमें एकता स्थापित होती है तथा समाज स्थिर बनता है । जब से यह भाषा आयी यह मिज़ो संस्कृति का स्थायी अंग बन गयी । दूसरी भाषा का प्रयोग न करके आज भी इसी मिज़ो भाषा का प्रयोग किया जा रहा है ।

मिजोरम की मिज़ो : जातियों के बीच एक ही भाषा मिज़ो का प्रयोग से मिज़ो संस्कृति और समाज में मजबूती आयी है । इसलिए मिज़ो भाषा मिज़ोसमाज में एकता और समर पैदा करने का महत्वपूर्ण कार्य करती है तथा यह बहुत पुरानी संस्कृति है ।

विवाह:

"मिज़ो पूर्वज शादी–विवाह के मामले में बहुत साव न रहते थे और संस्कार को महर देते थे । अपने बेटे/बेटियों के लिए जो कुँवारे दिखने में अच्छा हो उसी से उनका विवाह नहीं करवा देते थे,बल्कि उनके परिवार मेमाँ,बाप,उनकेदादा, दादी,का स्वभा ? कोई बुरा, दम्भ ,क्रूर,बातूनी,चोर,अपंग,रोगी,पागल,शराबी आदि तो नहीं है इसकी जाँच करते थे । अगर वह अमीर हो लेकिन इन चीजों से मुक्त न हो तो विवाह के लिए इंकार कर दिया जाता था । अगर वह गरीब हो लेकि इन चीजों से मुक्त हो तो उसे चुना जाता था । माँ, बाप की अनुमति के बिना विवाह नहीं होता थ ,विवाह के पहले शारीरिक सम्बन्ध नहीं बनते थे ।"[65]

मिज़ो समाज में विवाह एक महत्वपूर्ण और स रूप से दिखाई देने वाला रिवाज है । विवाह सम्बंधित महत्वपूर्ण बातें हैं –

[65]K.Zawla,.Mizo Pi Pute leh an Thlahte chanchin6th Edition p-90.

Mo lawi dan:

दुल्हन रात के समय दुल्हे के घर में प्रवेश करती है। उसे दो रात वहाँ ऐसे ही प्रवेश करना होता है। पहली रात को 'Lawichhiat zan'[66] कहा जाता है। सुबह दुल्हन, दूल्हे के घर से उसे ले जाने वाले के साथ दूसरों के उठने से पहले अपने घर लौट आती है। दूसरी रात को 'Lawi that zan'[67]
कहा जाता है और उस रात से वह स्थायी रूप से दूल्हे के घर रहने लगती है।

जब दुल्हन को दूल्हे के घर लाया जाता है और अगर दुल्हन रास्ते में गिर जाती है तो वह अपने घर लौट जाती है और शादी को रोक लिया जाता है। कई युवक रास्ते में दुल्हन को कीचड़ फैक कर गन्दा करने की कोशिश भी करते हैं और दुल्हन को इन परिस्थितियों से बचाने के लिए बहादुर युवकों को रास्ते में रखा जाता है। वे अपने साथ बांस या लकड़ी का डंडा लेकर जाते हैं,रास्ते में उसे चिढ़ाने वालों को डंडे से मारते हैं और लड़की की रक्षा करते हैं। अगर किसी को ज्यादा लग भी जाए तो वे गुस्सा नहीं करते हैं। जो दुल्हन की इस प्रकार से रक्षा करते हैं उन्हें "Lawichal"[68] कहते हैं।दुल्हन के घर भी वे सबसे पहले प्रवेश करते हैं । इसके अलावा मन पुई, पा लल,पू सुम, नी आर,नाउपुकपुआन, बोउ आदि भी आते हैं।पर धीरे-धीरे यह प्रथा मिज़ो समाज से लुप्त हो गयी है। आजकल मिज़ो समाज में शादी के लिए लड़के की तरफ से लड़की को 420 रुपये देना अनिवार्य है।अगर विवाह तोड़ना है तो 420 रुपये लौटाने होते हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि मिज़ो समाज सामाजिक और सां विविधताओं और विभिन्नताओं से भरा । कई रोचक और महत्वपू मान्यताएं, विश्वा , धार्मिक कृत्य यहाँ के लोगों के जीवन में उत्साह और रोमांच का

[66]पहेली रात को दुल्हन का दूल्हा के घर प्रवेश
[67]दूसरी रात को दुल्हन का दूल्हा के घर प्रवेश
[68]दुल्हन को दूल्हा के घर ले जाने वाला माँ के तरफ से रिश्तेदार

संचार करते हैं। भारतीय प्रदेशों की तुलना में मिज़ो समाज स्त्रियों के सम्बन्ध अधिक संवेदनशील, जागरूक और प्रगतिशील दिखाई देता है। यह समाज स्त्रियों के लोकतान्त्रिक अधिकारों का समर्थक रहा है, आज जीवन के हर क्षेत्र में स्त्रियों की भागीदारी वहां भी निरंतर बढ़ रही है। अन्य जनजातियों की तरह यहाँ के लोग भी अपनी संस्कृति की रक्षा करना अपना दायित्व समझते हैं।

****

द्वितीय अध्या

शूरवीरखुआङ्चेरा : ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

(क) शूरवीर खुआङ्चेरा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

मिज़ो जनजातियों के इतिहास में अनगिनत वीर योद्धा हुए है। जिनका स्मरण मिज़ो समाज काफी सम्मान के साथ करता ।परन्तु लिखित साक्ष के अभाव में उन वीरों के संपूर्ण जीवन वृत्त का परिचय नहीं मि ता है। मिज़ो जनजातियों के अलिखित इतिहास की समाप्ति और लिखित इतिहास के प्रारंभ के संधि बिन्दु पर एक ऐसा ही महान वीर –'खुआङ्चेर ' उत्पन्न हु था, जो अपनी साधारण पारिवारिक पृष्ठभूमि के बावजूद अपने अदम्य स , असाधारण वीरता, गहरे देशप्रेम ,त्याग और बलिदान से मिज़ो ज यों के इतिहास में अमर गया,जिनका स्मरण मिज़ो समाज आज भी काफी श्रद्ध सम्मान के साथ करत है।

19 वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में उत्पन्न इस महान वीर का संपूर्ण जी -वृत ऐतिहासिक लिखित साक्ष्यों के भाव में इतिहास के धुँधलके में छुपा हुआ है।ललत्लुआङलिआना खिआङते ने इति प्रसिद्ध इसी वीर के जीवन वृत को आधार बना कर इस ऐतिहासिक नाटक शूरवीर खुआङ्चेरा का सृजन किया है। जिसका हिंदी अनुवाद श्री .कामलोवा ने किया है। इस ऐतिहासिक नाटक का

नायक मिज़ो इतिहास ऽ शूरवीर खुआङ्चेरा है।जिसका संपूर्ण जीवन-वृत इतिहास में कहीं खोया है, पर जो मिज़ो समाज लोक ज़बान पर विराजमान है।लेखक ने अपने इस नाटक के माध्यम से उस शूरवीर के संपूर्ण जीवन-वृत से संपूर्ण देश एवं समाज को परिचित व ने का प्रयास किया है। उन्होंने इतिहास प्रसिद्ध नामों एवं घटनाओं को लेकर अपनी नवोन्मेषशाली प्रतिभ ,विराट कल्पन ,गहरी संवेदना और भाषायी सृजनशीलता के मेल से इस ऐतिहासिक नाटक की रचना की है। जो मिज़ो इतिहास एवं शूरवीर खुआङ्चेरा के जीवन-वृत की टूटी हुई कड़ियों को जोड़ने और छुटे हुए रिक्त स्थान की पूर्ति करने का काम करता है। यह नाटक मिज़ो इतिहास और प्रसिद्ध शूरवीर खुआङ्चेर के संपूर्ण जीवन वृत को पाठकों के सामने प्रस्तुत करता है ।इस नाटक सृजन प्रक्रिया पर प्रकाश डालते नाटककार ललत्लुआङलिआना खि लिखते हैं –"वीर खुआङ्चेरा के बारे में कहने-सुनने के लिए बहुत कुछ है। मिज़ो-समाज में उस अद्भुत योद्धा कीवीरता के अनेकानेक किस्से प्रचलित हैं।उसकी शौर्यगाथाओंका व मिज़ो जाति अत्यंत गर्व से करती है।बचपन से ही इन शौर्यगा को मैं सुनता आया हूँ और वीर खुआङ्चेरा के बहुआयामी व्यक्तित्व से मैं अभिभूत हुआ कि मैंने अपन मातृभाषा में वीर खुआङ्चेरा नाम से उसके बहुआयामी जीवन पर आधारित नाटक लिखा।नाटक सुन्दर बन पड़ा और मिज़ो समाज में लं ।मेरे मातृप्रदेश की इस देदीप्यमान विभूति के बारे में मेरे देश के बाकी लोग भी जानें..... ऐसा विचार मन में या, तो मैंने इसे हिंदी में अनुदित करवा कर प्रकाशि करवाने का मन बनाया और परिणाम स्वरू खुआङ्चेरा की महागाथा नाट के रूप में हिंदी भाषा के पाठकों के सामने है।"[1]

खुआङ्चेर मिज़ो जनजातियों के शूरवीरों में से सबसे प्रसिद्ध वीरों में से एक है जो केवल अपनी वीरता के कारण ही नहीं बल्कि अपने नर्म और शिष्ट स्वभाव

[1]सी.कामलौवा ,शूरवीर खुआङ्चेरा, पृ॰vii-viii

कारण वह दूसरे के दिलों को जीत लेता था। इसलिए वह प्रशंस करने योग्य व्यक्ति ही था।इनके जन्म के समय को लेकर विद्वानों में मतभेद है। अलग-अलग विद्वान इनका समय अलग-अलग मानते है। किसी ने इनका समय ''1860-1890''[2] तो किसी ने "1865-1890"[3] माना है। हम इन्हें रमता जोगी भी कह सकते हैं क्योंकि वे लियानफुङा(मुखिया) के गाँव परवातुई,छिपपुई,कागह्मुन रेइएक गाँव में रहे ।इस नाटक में इनके परवातुई और रेइए गाँव में निवास का वर्णन ।"शूरवीर खुआङ्चेरामिज़ो जनजातियों में राल्ते कोलनी कोल्ल्लुंग जाति से सम्बंधित थे। अपने भाइयों में से सबसे छोटे थे। पू कोला सबसे बड़े थे,बीच में चोङथ , साइलियानपुईया थे वे एक दूसरे का बहुत ध्यान रखते और शांत विचार के थे ।"[4] दूसरों की मदद में वे सुख महसूस करते थे।वह दिखने में दुबल ,पतला था लेकिन ध्यान से देखने पर उसके शारीरिक बनावट और आँखों से पता चलता था कि वह वीर है। बचपन से ही इनका स्वभाव निराला था और वीरता के चिन्ह दिखाई पड़ने लगे थे।जब भी मुकाबला होता था तो वह अपने साथियों के बीच सबसे साहसी सिद्ध होता था। कोई उसे हरा नहीं पाता था।उनके पिता को भी उनपर गर्व था और वे उसकी वीरता को बढ़ाने में लगे हुए थे। अन्य लोगों से उसकी वीरता की तारीफ बार-बार सुनने के कारण वे उसे ओखली बनाने के लिए जंगल ले गए थे "वहाँ जब उसके पिता कुल्हाड़ी से ओखली के लिए लकड़ी काटने लगे तो कुल्हाड़ी
की चोट से छिटककर कई लकड़ी के टुकड़े उसके मुंह पर लगे,परन्तु मजाल है कि वह अपनी आँखे झपका ले।भाई! वह बिना किसी भय के आँखे गड़ाकर लकड़ी

[2]Dr.Laltluangliana Khiangte,Mizos of North East India,p-105.

[3]H.R.KLalbiakliana,Pasalthate chanchin,p-100.

[4]Lianhmingthanga,mizo Pasalthate,p-159

कुल्हाड़ी की हरेक चोट को ध्य न से देखता रहा....."[5]यह देख उसके पिता ने कहा – जैसे सुना था तुम वैसे ही निकले। उसकी बहादुरी के किस्से सुनकर लोग उसक आदतें और रहन-सहन पर नजर रखने लगे थे।शूरवीरों के बीच भी वह सहक था।नाटक में खुआङ्चेरा की बहादुरी हमें तब देखने को मिलती है, जब वह बालिग हो गया था और शूरवीरोंके साथ शिकार के लिए निकलता था । घायल भालू का पीछा किया जा रहा थ , घायल भालू गुफा में घुस गया और वहीं पड़ा रहा,तब सभी लोग गुफा के बाहर प्रतीक्ष करते रहे।लम्बे समय तक प्रतीक्षा करने के बाद वह बेसब्र सा हो गया और यह सोच कर गुफा में घुस गया कि उस भालू को दाव से मार दूंगा। यह कहता हुआ वह गुफा में घ स गया, तभी भालू भी अपने घाव के कारण गुस्सा होकर उसपर वार करता , लेकिन उसके वार करने से पहले ही कोई और शूरवीर उस पर गोली चला देता है।खुआङ्चेरातब कहता है कि अगर आप लोग गोली न चलाते तो मैं उस पर वार कर देता । तभी से लोगों का यह कहना था कि अपनी वीरता के कारण यह ज र नाम कमाएगा।[6]

उसकी वीरता कई अन्य घटनाओं के अवसर पर भी प्रकट होर्त ।एक बार की बात है एक घायल बाघ चट्टान में फँसा हु था तो खुआङ्चेराहेमपुआ और चंगा अपनी ढाल उसे चुभो रहे थे ।घायल होने के कारण बाघ चिड़चिड़ा सा हो गया था।खुआङ्चेरा उसे छेड़ता तो वह खुआङ्चेरापर वार करने के लिए जैसे ही हिलता उसके साथी अपनी ढाल से उस पर वार करते, लेकिन बाघ अपना स्थान नहीं बदल पा रहा था।इसीलिए बाघ व्यर्थ में चट्टान पर बा –बार अपने हाथों से वार करने लगा।अपना स्था न बदल सकने के कारण और उनके बार-बार वार करने के कारण बाघ अंत में मर जाता है। खुआङ्चेरा कहता है कि ऐसी स्थिति में अपने पैर

[5]सी.कामलौवा ,शूरवीर खुआङ्चेरा,, पृ॰6

[6]Bib,p-5

कास्थान थोड़ा बदलना पड़ता हैlखुआङ्चेरा केवल बलवान ही नहीं , बल्कि उसक चाल भी तेज थी । उसकी वीरता को उसकी सम भावना और निष्ठ अधिक प्रभावशाली ती थीlएक शाम को Ngaihsii खेत से वापस आ रही थी तो बाघ उसे घायल कर देता है,Thangtawna के पास इसकी सबसे पहले खब पहुँचती हैl उसके बाद जैसे ही खुआङ्चेरा को पताचलता है तो वह भी उसके पीछे चल पड़ता हैl Thangtawna के पास वह कुछ ही पलों में पहुँच जाता है, "मैं नहीं कहता कि मैं नरभक्षी को जीतूँगा कहते हुए वह Thangtawna से आगे निकल जाता है l"[7]Ngaihsi को बाघ मार्ग के दूसरी ओर उठा ले जाता हैl खुआङ्चेरा वहाँ पहुँच जाता है जहाँ बाघ उसे ले गया थाlबाघ एक ओर गु ता रहता हैऔर खुआङ्चेरा निडरता से लाश की रक्षा अपने भाले से करता हैlबाघ भी खुआङ्चेरा पर वार न करके उस लाश को खाने की इच्छ लिए उनके पास बैठा रहा और लगातार प्रयास करता रहाlइसी बीच Thangtawna भी वहाँ पहुँच जाता हैlबाघ के दुबारा आक्रमण के डर से जिस लाश की रक्षा खुआङ्चेरा ने की थी उसे सुरक्षित गाँव वापस लाया जाता हैlइस घटना से भी खुआङ्चेरा की वीरता की झलक देखने को मिलती है, जिसे अपनी बच्ची को खो चुकी माँ भी अपने इस दुःख के

बीच स्वीकार करती है ।

खुआङ्चेरा की ख्याति धीं –धीरे बढ़ती गयी । उसके ख्याति प्राप्त करने के अन्य कारण भी थेl एक बार शिकार से वह हाथी का दांत और मिथुन का सींग एक ही दिन में गाँव ले आया । जिसके कारण हर घर में खुआङ्चेर की चर्चा होने लगी

[7].सी.कामलौवा ,शूरवीर खुआङ्चेरा, पृ॰8

थी।उसके इस कार्य से गाँव वाले गौरवान्वितमहसूस कर रहेथे।हर युवती की बस यही कामना रहती थी कि वह किसी तरह खुआङ्चेरा के साथ खेत में काम करे और रात को उसके पास जाकर गपशप करे।'[8]यहाँ तककी गाँव के हमउम्र लड़के और साथी भीखुआङ्चेरा 'शोहरत के बादलों के ऊपर विचरण करने ' और 'ध्रुवतारे की तरह प्रकाशवान ' मानने लगे थे।

एक बार पोई शत्रुओं ने lusei मुखियाओं के शूरवीरों पर आक्रमण किय ।लगातार युद्ध करने के बाद lusei जीत गए। पोई जाति के शूरवीर liannawna ने तो अपने को lusei जाति के हवाले कर दिया था।उसे वे अपने गाँव ले जाते हैं और थोड़े दिनों के लिए अपने गाँव में रखने के बाद उसे उसके गाँव लौटा दिया जाता है।liannawna अपने गाँव लौटने पर अपने गाँव वालों से कहता है कि lusei लोगों के साथ हमारे जोरदार युद्ध में बहुत खून बहा था"लेकिन इससे भी अधिक मुझे इस बात ने छुआ, जब परवतुइ के शूरवीरखुआङ्चेरा ने यह कहा कि साहसपूर्वक शूरवीर और शूरवीर के बीच तो युद्ध हो सकता है, मगर माँ और बच्चों को हाथ न लगाये बिना । अगर ऐसा फिर हुआ तो तुम्हें इसकी सजा मिले ।यह कह कर उसने हमारी निंदा की थी।इस बात पर मुझे बहुत डर लगा।"[9]

जब परवतुइ गाँव में वह निवास कर रहा था। तब खुआङ्चेरा ने उनके रहन–सहन को बहुत आरामदायक बनाय । जब वह युवकों क अगुवाई करता था तो किसी भी युवक क यह हिम्मत नहीं होती थी कि वह अपनी म मर्जी अपने से छोटे पर चलाये।सभी उसकी इज्जत करते थे और उसकी बातों का पालन करते थे।वह युवकों को ऐसी सलाह दिया करता थ , "देखो उसका मुँह खुला हुआ है,उसे मार दो, देखो

[8] सी.कामलौवा ,शूरवीर खुआङ्चेरा, पृ॰31

[9] Mizo pasalthate,.Lianhmingthanga,p-162.

वह भी धीरे-धीरे आ रहा है,उसे अपने पैर से कुचल दो”[10] “खुआङ्चेरा कहा करता था,जानवर के प्रति मनुष्य में ज्यादा गति होती है।”[11]

उसकी यह सलाह उन में जोश भर देती थी ।उसकी इस सलाह के कारण युवक ग खतरनाक पशु से भी बिना भय के भिड़जाते थे। इस कारण परवतुइ के युवकों का व्यवहार बहु अच्छा और अनुशासित था और वे एक सरे की मदद करने को सदैवतत्पर रहते थे। chhumchhia leh dawmkan[12] लोगों के प्रति वे अपना मुँह नहीं फेरते थे।उनके गाँव में आपसी लड़ाई झगड़ा देखने को नहीं मिलता था । अभी– भी सुनने में आता है कि परवतुइ गाँव में रहने वाले को चेतावनी देने की आवश्यकता नहीं थी क्योंकि वे अच्छे से जी रहेथे।[13]खुआङ्चेरा ख्याति प्राप्त करता गया दूसरी ओर उससे ईर्ष्याकरने वाले भी पैदा होते गए।पर्वातुई गाँव में एक वीर नेईथङा भी था जो कहताथा कि खुआङ्चेरा उतना साहसी नहीं है। किस्मत उसक साथ देती है जिसका वर्णन नाटक में भी हुआ इसलिए वह साहसी दिख ।वह उससे श्रेष्ठ बनने के लिए प्रयत्न करत रहा ।एक बार जब वे बाघ को घेर रहे थे। तब खुआङ्चेरा के पास नेईथङ खड़ा था।उस समय बाघ ने खुआङ्चेरा पर ह किय ।मगर उसने ढाल से अपने को बचा लिया। दौड़ता हुआ बाघ नेईथङा की कलाई पर अपने पैने दांत से हल्की सी चोट करने में सफल हो गया।जब युवकों ने उससे पूछा कि तुमने अपने पर वार होने क्यों दिया?“तो उसने कहा कि खुआङ्चेरा के कारण ऐसा हुआ । बाघ उसपर झपटा था पर डर के मारे उसने अपनी ढाल तिरछी कर दी।”[14] हमले से अपने को बचाने के लिए मेरे तरफ उसे ढकेल दिया और

[10] Ibib,.p-162.

[11] Pasalthate Chanchin ,.H.R.K.Lalbiakliana,p-104.

[12] अभाव

[13] Mizo pasalthate,.Lianhmingthanga,p-162

[14] सी.कामलौवा ,शूरवीर खुआङ्चेरा, पृ॰31.

मुझ पर आक्रमण करने के लिए उसे छेड़ दिय , तब "खुआङ्चेरा कहता है अरे यार! जंगली बिल्ली के काटने के बराबर है भाई! कुछ नहीं होगा।इतनी सी चोट तो भूख भर बढ़ाती है।चिंता मत कर!कुछ नहीं होगा।"[15] नेईथङा उस से इतनी ईष्या करता है यह जानते हुए भी खुआङ्चेरा उसे अपने भाई की तरह मानता था।

एक बार फिर जब वे बाघ के शिकार के लिए निकले तो नेईथङा खुआङ्चेरा के साथ था।बाघ नेईथङा के ऊपर झपटा मारता है जिससे वह गिर पड़ा और नेईथङा के जाँघ पर उसने वार किया उस समय खुआङ्चेरा ने कहा-तेरी लाल आँखों की ऐसी की तैसी और बाघ के आंख में अपने भाला से वार किया।बाघ ने अपनी जगह बदल ली और उनके बगल में कुत्ते की तरह बैठ गया । आँखों से खून निकलते हुए भी वह नेईथङा को देखने लगा। खुआङ्चेरा को लगा कि बाघ उसपर फिर वार करेगा।इसलिए उसने अपने ढाल को नेईथङा की ओर तिरछी कर उसे ढक लिय जब उनके दोस्त वहाँ पहुँचे तो वे उससे वहाँ से एकान्त सुरक्षित जगह पर ले गए। खुआङ्चेरा और उसके साथी बाघ को मार । नेईथङा ने कहा[16]"यदि वीरखुआङ्चेरा न होता तो वह मुझे मारकर पूरा खा गया होता। खुआङ्चेरा के कारण ही मैं बच पाया हूँ दोस्त।"

इस घटना से नेईथङा को खुआङ्चेरा की वीरता का प हो जाता है।खुआङ्चेरासे श्रेष्ठ बनने की उसकी सारी कोशिश हो जाती है।अपनी असलियत को जानकर वह अपने सारे प्रयास छोड़ देत ।घायल बाघ जिसका पीछा करने की किसी भी शूरवीर की हिम्मत न थी,अकेले उसका पीछा करके उसे मारना खुआङ्चे की वीरता को जानने वालो के लिए ई नई बात न थी। खुआङ्चेरा की वीरता ख्याि प्राप्त करती गई और उन गाँव भी उसके कारण

[15].सी.कामलौवा ,शूरवीर खुआङ्चेरा, पृ॰-37.
[16]सी.कामलौवा ,शूरवीर खुआङ्चेरा, पृ॰-39

शांति के वातावरण में जीता रहा।इसी कारण उनका मुखियाँ lianphunga शिकार और मुसीबत के समय उसका नाम लिया करता था।मगर अच्छे या सुख के दिनों में खुआङ्चेरा का नाम नहीं लिया जाता था।इस बात की जानकारी खुआङ्चेरा को भी थी, इसलिए वह अ सन्न रहता था ,और तो और जब खुआङ्चेरा एक बार यात्रा प गया था तो मुखिया और सलाहकार उसके बकरे को मार कर खा जाते हैं।खुआङ्चेरा उससे और भी ज्यादा अप्रसन्न हो । खुआङ्चेरा अपने मुखिया अनुपस्थिति में साइलियानपुईया के गाँव जहाँ उसका भाई लोहार का काम करता था, वहाँजाकर बस जाता है।यहबात सुनते ही उसके मुखिया की पत्नी रोते हुए उसे रोकने का प्रयास करते हुए कहती है—

"खुआङ्चेर ,विस्थापित न क ,तुम्हारे बिना हमारा गाँव सुखद कैसे रहेगा, व्यथित होने के समय कौन हमें सांत्वना देगा?हमारे नवयुवक युवती खुश कैसे रहेंगे।

कृपया वापस आ जाओ।नाटक में भी इसका जिक्र हुआ है "खुआङ्चेर , यदि तुम इस गाँव को छोड़कर चले जाओगे तो गाँव की रौनक ही समाप्त हो जायेगी | मुश्किलों के दिन अब हमें कौन सहारा देगा ? युवक और युवतियां भी उदास हैं | तुम्हारे बिना वे अब कैसे हर्ष-उल्लास के दिनों को मना पाएंगे ? सबकुछ कुछ भुला-बिसरा कर तुम अपने गाँव में ही रहो | दूसरे गाँव में जाकर बसने की बात क मन से निकाल दो"[17]तब खुआङ्चेरा अपने द ,अपमान और गुस्से को वाणी देता हुआ उत्तर देता है - व्यथित और चिंता के दिन में खुआङ्चेरा नहीं हूँ मैं।एहसान के दिन में खुआङ्चेरा नहीं होता हूँऔर मेरे बकरे को जो भुगतना पड़ा,इनसे कोई हानि नहीं होगी।"[18]

जब वह साइलियानपुईया के गाँव में बस जाता है। साइलियानपुईया उससे गाँव बदलने का कारण पूछता है तब वह कहता है कि मैं घर में इकलौता मर्द हूँ,मैं

---

[17].सी.कामलौवा ,शूरवीर खुआङ्चेरा, पृ॰-68

[18].Pasalthate Chanchin ,.H.R.K.Lalbiaklianа,p-108

तुम्हारे गाँव में बसना चाहता हूँ और वैसे भी मेरा भाई आपके गाँव के लोहार है। साइलियानपुईया उसे अपने गाँव में पाकर बहुत खुश होता है और उसका इस एहसान का बदला चुकाने का वक्त खोजता रहता ।गाँव वाले भी उसे अपने बीच पाकर बहुत ऽ होते हैंगाँव के युवक भी खुआङ्चेरा की प्रतिभा एवं नाम से परिचित थे | खुआङ्चेराकेवल वीर ही नहीं थ ; उसे पेड़ पर चढ़ना,नाचना, पानी में तैरना आदि भी बहुत अच्छी तरह आता ऽ ।बारिश के मौसम में Tlawng और Tut नदी में जब बाढ़ का पानी ऽ जाता था तब भी वह बिना किसी सं और परेशानी के उसे पार कर लेता था।एक दिन एक युव Rulpuihlim गाँव में Thingthupui(सब्ज /दवाई के लिए भी बनाया जाता है)ले रहा था तो वह उसके लिए उस पेड़ के पास जाता है। वह पेड़ बहुत ऊँचा और बड़ा था।किसी तरह वह उस पेड़ पर तो चढ़ गया पर नीचे नहीं उतर पाया।इसलिए लोग भी बहुत घबऽ ।कोई भी उस युवक को नीचे उतारने में मदद नहीं कर पा रहा था।सभी केवल उसे देखते रहे।अंत में वे खुआङ्चेरा की मदद लेते हैं।जैसे ही खुआङ्चेरा को पता चलता है,उसकी मदद के लिए दौड़ कर आता है और देखता है कि उसके परिवार वाले रो रहे थे।खुआङ्चेरा कहता है कि मैं हूँ न,घबराओ नहं । ऐसा कहकर उन्हें सांत्वना देता है। वह उनसेकपड़ा मांगता है उसे अपनी कमर में बांधता है,ऊपर चढ़कर वह चाकू से पेड़ पर पैर रखने के लिए रास्ता बनाता जाता है और कुछ ही पल में वह वहाँ पहुँच जाता है।वह पेड़ की डाली पर अपने दोनों पैरौं को रखकर अपने दोनं हाथों से उसे पकड़ लेता है और उसे डाली से निकालने में सफल हो जाता है।वह उसे अपने पीठ पर रख कर नीचे उतारता है, यह देख कर जो लोग जमीन पर उसका इंतजार कर रहे थे आश्चर्यचकित रह जाते हैं।इसका वर्णन न टक में भी किया गया है "थिङथुपुई एक तरह का पेड़ - जिसके पल्लव से सब्जी बनाई जा है - में फँसे

किसी को बचाया थ .....”[19]उसकी इस वीरता एवं निडरता के कारण उसे प्रसिद्धी मिलती है।साथ मैं अंडे और कई इनाम भी ।पर उसे इस बात का पछतावा था कि उसने उसे बचाने से पहले घबराओ नई , मैं हूँ न शब्द का प्रयोग किया था |कहा जाता है जब तक वह जीवित रहा उसे इस बात के लिए खेद हुआ।इससे हमें पता चलता है कि वह नम्र स्वभाव का व्यक्ति था और उसमें अहंकार न था।

साइलियानपुईयाके गाँव में “बाघ को चारों ओर से घेरा गया बाघ की कमर में गोली लगने के कारण वो वहीं बैठ गया।बाघ घायल था वह किसी और पर वार करने के काबिल नहीं था।इसलिए शूरवीरों ने सोचा कि बाघ उनपर वार नहीं कर सकता है तो उन लोगों ने एक प्रतियोगिता करने की सोची बाघ के पूंछ को कौन छू सकता है| जो अपने को दूसरों से अधिक वीर मानते थे उन लोगों ने उसकी पूंछ को छूने की कोशिश की,मगर वह बाघ घायल होते हुए भी उन पर दहाड़ (गुर्रा) रहा था उसकी दहाड़ के कारण कोई भी उसकी पूंछ को हाथ लगाने की हिम्मत नहीं कर पाया।अंत में उन लोगों ने कहा किखुआङ्चेरा को भी ये मौका दिया जाए ।उनकी बिनती के कारण वह बाघ की ओर चल पड़ा लेकिन जब उसने घायल बाघ की पूंछ को छूआ तो बाघ चुपचाप थोड़ा आगे सरक गया।खुद से बड़े वीर और साहसी को देखकर शायद वह भी घबरा गया था। यह देख कर वे सभी आश्च में पड़ गये और बाघ को गोली मार कर खत्म कर दिय ।”[20]

शूरवीरों में भीखुआङ्चेराकी भिन्नता इस में थी कि घायल बाघ या घाय जानवर भी उससे डरते हैं।इससे खुआङ्चेरा शूरवीरों में भी सबसे वीर माना जाने लगा। खुआङ्चेरा की वीरता अल -अलग घटनाओं से भी साबित होती है।एक शाम को एक Ngalnget (जिसे शाप दिया गया हं) ने त्याग करने वाले को मुर्गी चोर कह कर अपने ढाल से उसपर वार किया और उसे यह समझ कर छोड़ दिया कि वः

[19].सी.कामलौवा ,शूरवीर खुआङ्चेरा, पृ॰–69

[20]Pasalthate Chanchin ,.H.R.K.Lalbiakliana,p-107

मर गया।नाटक में इसकी जानकारी हमें झा द्वारा मिलती है "ङलङता ने मुझ पर अपने भाले से भरपूर वार किय ....जोर जोर से चिल्ला रह था ।"[21]अपने पड़ोसी थङछिङा वं माँ जो खाना पका रही थी वह इस त्याग में शामिल थ , उसे भी इसी बात का बहाना बनाकर गोली मार देता है ।थङछिङा (बच्चा) जो घर में खाना खा रहा था डर के मारे घर से बाहर भागता है ।गाँव वाले उसके घर को घेर लेते हैं।जब गाँव वाले घर के नजदीक आते हैं तो वह शापित व्यक्ति भी उन पर वार करने वे लिए पूरी तैयारी करता और दरवाजा बंद कर घर के अंदर छिप जाता है । ऐसे करते-करते शाम हो जाती है। उनका मुखिया साइलियानपुईया उग्र हो जाता है और गाँव वालों को क्रोध से कहता है - खुआङ्चेरा को जल्दी बुल , खुआङ्चेरा ढाल और दीपक लेकर आता है और कहता है कि मैं उसे नहीं मारूंगा। उसका कोई संबंधी हो तो उसे मार दे। मैं केवल उसे अपने ढाल से दबाऊँगा । चलो मेरा पीछा करो ।खुआङ्चेरा अकेले चल पड़ता है मगर कोई भी सके पीछे आने की हिम्मत नहीं कर पाता है। खुआङ्चेरा दरवाजा तोड़कर घर में घुसता है और चारों ३ पैनी निगाह दौड़ाता है । "अरे! पानी रखने के पास ही एक तो चित पड़ा है।मारने वाले का कोई निशान न: । जरा कमरे में जाकर देखूं ।अंदर मशाल के सहारे देखता है यहाँ तो कोई भी नहीं है।अरे, इसने तो आत्महत्या कर ली ह, देखो छाती में चाकू घुसा हुआ है" ।[22]

वह इतने लोगों को डरा रहा था मगर खुआङ्चेरा के हाथों से मरने से अच्छा उसने अपने आप को मारना अच्छा समझा हे ।जो अपने को बहुत वीर समझते थे खुआङ्चेरा का नाम सुनकर उनका खून भी पानी हो जाता ।खुआङ्चेरा कोई मामूली आदमी नह था। संकट और मुसीबत के समय खुआङ्चेरा के व्यवहार क

[21]सी.कामलौवा ,शूरवीर खुआङ्चेरा,, पृ०–72

[22] Mizo pasalthate,.Lianhmingthanga,p-166

देख कर सभी आश्चर्यचकित रह जाते थे । उसके इस निडर व्यवहार से धीं -धीरे सभी परिचित हो गए थे।

जब वह रेइएक में रहता था तब उसके पास दो गुफाएँ थीं एक आइलोग तुइखुर पुक (गुफा) और दूसरा रेइएक के रास्ते में । परन्तु इन दोनों के बीच कोई मार्ग है या नहीं ये कोई नहीं जानता था इसलिए इस पर हमेशा बहस होती रहती थी। गुफाओं के बीच एक खेत का फासला था।"खुआङ्चेर उनकी इस बहस से तंग आ गया था इसलिए एक दिन उसने कहा मैं इस गु में जाकर देखता हूँ और ये पता लगाता हूँ कि दोनों के बीच मार्ग है या नहीं।"[23]अगर कोई मार्ग नहीं होगा तो मैं जहाँ से घुसूंगा वहीं वापस लौट आऊँगा | यह कह कर वह गुफा में घुस जाता है।रेइएक में जो गुफा थी वास्तव में वह एक पलायन मार्ग ही थ । उसने लोगों के अन्दाजे के बरक्स गुफा में प्रवेशकर असलियत पता लगाया, जिसमें जाने की हिम्मत डर के मारे कोई नहीं करता था ।आज भी उस गुफा को उसके नाम से जाना जाता है । "पहले गुफा के अंदरूनी सत्य के बारे में किसी को कुछ पता न था ।बस अंदाजा भर लगाते थे ।आज खुआङ्चेरा के कारण ही गुफा के बारे में पूरी जानकारी मिल पाई है।"[24]

एक बार खुआङ्चे 80 दिनों के लिए पर्याप्त गेहूँ पीठ पर लिए हुए गाँव की ओर जा रहा था, जब एक हाथी ने उस पर आक्रमण कर दिया वह तेजी से सामने गिरे हुए पेड़ के तना को - गेहूँ को बिना गिराए हुए - पार कर जाता है। Tlawng lui जिसे Ngalchawm नाम से जाना जाता है वह जंगली सूअर का पीछा कर रहा था तो जंगली सूअर Ngalchawm नदी में छलांग लगाता है तो वह भी छलांग लगा लेता है।

[23]pasalthate Chanchin ,.H.R.K.Lalbiakliana,p-109

[24]सी.कामलौवा ,शूरवीर खुआङ्चेरा, पृ॰–77

अपनी मृत्यु से पहले और विदेशियों के द्वितीय आगम (vailen vawihnihna) से पहले खुआङ्चेरा की वीरता पूरे मिजोरम में फैल चुकी थी। उसे किसी से डर नहीं था ।उसके गाँव और आसपास के इलाके में उससे प्रतिस्पर्धा करने वाला कोई नह था।नदी, गुफा,ऊँचा पेड़,खाई भी उसके सामने कुछ नहीं ,कहकर सभी उस तारीफ करते थे।

यह बात vailen vawihnihna के अनुवादक के कान में पहुँचती है जो की एक लड़ाकू था।वह वाई हो या एक मिज़ो किसी से नहीं डरता ।। खुआङ्चेर उससे ज्याद वीर है यह बात उसे हजम नहीं हो पा रही थी । दिल ही दिल में वह उससे ईर्ष्या करने लगा था। वह कहता है खुआङ् रा जिसे लोग बहादुर कहते हैं उसे मैं उसके गाँव में जा कर पराजित करके आता हूँ | यह कह कर वह खुआङ्चेरा के गाँव में आता है।जिस आदमी से वह मिलना चाहता था उस तक वह किसी तर पहुँच जाता है "तो तुम खुआङ्चेरा हो ? मैं बहादुर हूँ | मिज़ो हो या वाई मेरे सामने कोई नहीं टिक पाते हैं।क्या तुम मेरे साथ युद्ध करोगे ।मैं तुमसे लड़ने अपने गाँव से आया हूँ।वह उसे नाराज करके उससे लड़ने की कोशिश करत रहा।मगर खुआङ्चेरा उससे कहता है कि मैं बिलकुल बहादुर नहीं हूँ ।लोग तो ऐसे ही कहते रहते हैं।मैं किसी से नहीं लड़ता लोग अच्छे हैं, इसलिए मेरी प्रशंस करते हैं ।वह बिना गुस्सा हुए उसे उत्तर देता है ।उसे नाराज न होते देख वह कहता है कि मैं इतनी दूर से तुम्हें मारने आया हूँ ख ली हाथ नहीं ज गा,क्यों न मैं एक बार तुम्हें हाथ लगा लूँ ।"[25]खुआङ्चेर उससे कहता है कि रुकं ,दो पुरुषों का बिना किसी वजह ं लड़ना ठीक न होगा।यह कह कर वह घर के अंदर घुस गया और शत्रुउ के लिए वो जिस तलवार का प्रयोग करता थ , उसे लेकर आया । उससे कहता है कि इस तलवार से

[25] Mizo pasalthate,.Lianhmingthanga,p-169

तुम मुझ पर कहीं भी वार कर सकते हो। यह कह कर वह उसके आगे खड़ा हो जाता है।खुआङ्चेर का साहस देखकर वह अनुवादक भी बिना किसी कारण और इ किए उस र तलवार चला नहीं पा रहा था और वह यूँ ही तलवार को अपने हाथ में पकड़ा रह ।तभी खुआङ्चेर कहता है कि अगर तुम मुझ पर वार नहीं कर सकते हो तो मैं इसे वापस रख देता हूँ।खुआङ्चेर उससे कहता है कि आज के बा "Zukpuiin keipui ka beng dawn e,an ti toh ngai love a tih san ta a"[26] यह बात सुनकर अपने को बहादुर कहने वाला अनुवादक भी लज्जित हो अपने गाँव लौट जाता है।खुआङ्चेर की वीरता की कोई सीमा नहीं थ । जो उसे नहीं जानते वे भी उसकी वीरता से परिचित हो जाते थे।

बदलती ई परिस्थितियं में जब ब्रिटिश अधिकारी और सेना स 1890 ई. में मिजोरम में प्रवेश करती है तो उनका एक मात्र लक्ष्य संपूर्ण मिजोरम पर अधिका करना और मिज़ो जनजातियों को अपने नियंत्रण में रखना ।इन परिस्थितियों में उनका अबतक स्वच्छंद यापन कर रही मिज़ो जनजातियों से संघर्ष स्वाभ विक एवं अनिवार्य था।मिज़ो जन-जातियाँ भी अपनी स्वतंत्रता की रक्षा हेतु लामबंद हो रही थीं, पर उनके पास सगठन और संसाधनों का भाव था।एक तरफ ब्रिटिश साम्राज्य की सेना थी जिसके साम्राज्य में कभी सूर्यास्त नहीं होता था, तो दूसरी तरफ संसाधन विहीन मिज़ो जन-जातियों के लड़ाकू थे।यह एक बेमेल युद्ध था, जिसे अंग्रेजी सेना अपने पर्याप्त संसाधनों और पूर्ण तैयारी के साथ लड़ रही थी तो दूसरी तरफ मिज़ो वीर अपने अदम्य साहस, वीरता, निडरता और भावनाओं के भरे लड़ रहे थे।इस युद्ध का परिणाम वही हुआ जो संपूर्ण विश्व का हुआ थ - मिज़ो जन-जातियों की पराजय और संपूर्ण मिजोरम अंग्रेजों का आधिप ।

[26]Ibib,.p-169

इस द्वितीय vailen के समय अंग्रेजी सेना आइज़ के पास आकर changsil में किलाबंदी करती है और मिज़ो जनजातियों के साथ उनका संघ प्रारंभ हो जाता है।मिज़ो वीर पूर्व और पश्चिम से उन प हमला करके गोली चलाते हैं।भयानक लड़ाई होती है।खुआङ्चेर Naulaihrilh [27]के कारण नहीं जा पात है।उनका मुखियाँ खुआङ्चेर के न जाने की खबर जान कर बुदबुदाने लगता है कि जैसे सोचा था वैसे नहीं निकला।खुआङ्चेर को इस बात पर गुस्सा आता है।जैसे हीNaulaihrilh खत्म होता है वह युद्ध करने चल पड़ता है । जिस समय बार्ा मिज़ो योद्ध अंग्रेज सेना से युद्ध के उपरांत लौट कर आ रहे होते हैं तब वह जा रहा होता है, उसके साथी सैनिक उसे देखकर उसे भी लौटने की सलाह देते हैं और यहाँ तक कहते हैं कि अगर तुम मरना चाहते हो तो जाओ।उनकी बातें खुआङ्चेर को चुभती हैं और वह लड़ाई हेतु जाने को और उत्साहित हो जाता है,कहता है "मैं र कने वाला नहीं हूँ। कुल की परंपरा को भी मुखिया ने नकार दिया हैकौन वीर लड़ाकू है और कौन नहीं?इसका फैसला तो आज होकर ही रहेगा और मधुमक्र के छते की बात छोड़ो,आज अगर जंगली जानवरों के घोंसले में भी घुसना पड़े तो पीछे नहीं हटूँगा। मैं जानता हूँ कि उन पर कैसे हमला करना है,"[28] यह कह कर उनर्क बातों को अनसुना करता हुआ चला जाता है।खुआङ्चेर का सच्चा दोस्त शूरवीर Ngurbawnga जो खुआङ्चेर के चरित्र से अच्छी तरह से परिचित था, वह जानता था कि खुआङ्चेर रोकने पर भी र कने वाला नहीं है। वह कहता है "मैं भी आ रहा हूँ ।दोनों मिलकर शत्रुओं पर कहर बरप ।"[29]खुआङ्चेर के द्वारा पुन: आक्रमण करने पर अंग्रेज अधिकारी सैनिक बहुत गुस्से में आ जाते हैं । गोली किधर से चल रही है वे समझ नहीं पा रहे थे।इसलिए चारों तरफ अंदाज से गोली

[27]मिज़ो परंपरागत नियम - जिसमें किसी वे घर में बच्चा पैदा होने पर घर से बाहर ना जाना- का पालन किया जाता है।

[28]सी.कामलौवा ,शूरवीर खुआङ्चेरा, पृ॰103,104

[29].सी.कामलौवा ,शूरवीर खुआङ्चेरा, पृ॰104

चला रहे थेI दुर्भाग्य से उसमें से एक गोली Ngurbawnga के दायीं जाँघ में लग जाती हैऔर वह बुरी तरह घायल हो जाता हैIअंग्रेज सैनिकों की संख्य भी बहुत थी और उनके पास काफी म में अ -शस्त्र एवं गोला बारूद ं Iपर इन विषम परिस्थितियों में भी खुआङ्चेर अपने मित्र को अकेला छोड़कर भागता नहीं Iवह अपने घायल मित्र को अपने पीठ पर उठा लेता है और उसे सुरक्षित स्थान पर ले जाने का प्रयास करत Iउसी समय एक सिपाही उन पर वार करता हैIखुआङ्चेर ऐसी स्थिति में भी उसे गोली मार देता है मगर तब तक उसक गोलियाँ खत्म हो जार्त Iतभी दूसरा सिपाही उस पर वार करता हैIखुआङ् राउसके हाथ पर दाव से वार करता हैI तब तक अन्य सिपाही भ आ कर उस पर वार करने लगते हैंIवे उसे जिन्दा पकड़ना चाहते थेIमगर वह अपने दाव से लगातार उनपर वार करता ह उन्हें घायल करता जा रहा था, लेकिन अंत में उसे गोली लग जाती हैI "अपनी बायीं मुट्ठी से अपनी ही छाती पर वार करता है,फिर धीरे से गिरता है,मुस्कराव कहता है मेरा प्राण मेरा देश !प्राण त्याग देता हैI"[30]इस प्रकार केवल चालीस की उम्र का होकर खुआङ्चेर जैसा वीर,नम्र स्वभ वाला युवक अपने ् देश (मिज़ोरम) को विदेशियों के हाथ में जाने से बचाने के लिए चाङासील के किले के पास अपनी जान दे देता है और अपनी शहादत से मिज़ो समाज में अमर हो जाता हैI

****

[30].सी.कामलौवा ,शूरवीर खुआङ्चेरा, पृ॰107

(ख) राजनीतिक संघर्ष

"मिज़ो जनजातियों के मिजोरम में प्रवेश के बाद लम्बे समय तक ः अधिकार करने वाला कोई नही ,उन्होंने स्वयं अपनी सरकार बनायी स्वशासन वि I आज की भाषा में उसे 'Independent' कहा जा सकता हैI यह समय लगभग 1700 ई॰ से 1889 ई॰ तक चलता रहा।"[31]

मिज़ो शूरवीर अपने खाली समय में 'sai ram chhuah'(हाथी का शिकार) के लिए मिजोरम के उत्तरी भाग में शिकार करने जाते थे, लेकिन अंग्रेजों ने हाथी के शिकार पर रोक लगा दी थी I

अंग्रेजों का मिजोरम में पहले आगमन का कारण यह था कि तत्कालीन मिज़ लोग अन्य जातियों के साथ असामाजिक ढंग से आचरण कर I अंग्रेजों के आगमन के कारण को दो प्रकार से प्रतिपादित किया जा सकता है:-

पहले आगमन के कारण:

1. मिज़ो मुखिया Bengkhuaiaऔर उसके अनुयायियों ने मिजोरम के बाहर रहने वालों पर आक्रमण Alexandrapur में एक अंग्रेज Mr.Winchester की हत्या की और उसकी पाँच वर्ष "Mary Winchester को दिनांक 23 जनवरी,1871 में पकड़कर ले ला "[32] और वह लड़की Bengkhuaia के घर में रहने लगी, इस प्रकार स्वयं अंग्रेज बच्ची मिज़ो की गुलाम हो गईI उसे वापस लेने अंग्रेज सेना आ गयी I नाटक में इसका जिक्र ब्रॉ

[31]V.L Siama Mizo History p-19

[32] C.Vanlallawma,Bengkhuaia sailo p-8

साहब द्वारा किया गया है "कुछ वर्ष पहले बेङखुआइया और उसके लड़ाकुओं जेम्स विन्चेस्टर का वध कर दिया थाI"[33]

2. "एक तरफ Lalburha और उसके अनुयायियों ने ग़ैर–मिज़ो मैदान वासियो पर आक्रमण , कई लोगों को मौत के घाट उतार कर उनका सामान लूटा I उनके द्वारा लूटे गए सामानों में 13 बंदूकें भी शामिल थीं I इस कारण से मिज़ोरम के आस पास रहने वालों पर भय का वातावरण छाने ल I लूटी गई बंदूकें वापस लेने तथा Lalburha को दंड देने अंग्रेज सेना का मिज़ोरम पर आगमन I"[34]

Bengkhuaia मुखिया Lalpuithanga के सुपुत्र थे I जब मिज़ो के Sailo कबीले राजा हुआ करते थे, उस समय मिजोरम के मध्य -दक्षिण का युद्ध छिड़ गयाI उस युद्ध में उत्तर मुखिया Vuta ने pawih लोगों की सहायता ल I"Bengkhuaia जिसे Lalsahula भी कहा जाता था, इसने युद्ध के समय किसी एक pawih व्यक्ति का कान काट दिया तब से उसका Bengkhuaia पड़ गयाI"[35] Beng का अर्थ है कान और Khuaia का अर्थ है काटना I अपने पिताजी के मरने का बाद Bengkhuaia ने सौ घरों वाला kawlri नामक गाँव बसाया तब से उसने कहा, "मैं उत्तर के निवासियों का आकर्षण करुँगा और हजार घरों व गाँव बसाऊंगाI"[36] तब से अधिक समय बीतने के पूर्व ही kawlri के घरों की संख्या 200 हो गई I उस गाँव में कुछ साल रहने के बाद उसने सन् 1867 में Sailam पहाड़ में गाँव बसा दिया I Bengkhuaia वीर मुखिया होने के साथ–साथ औरों के लिए आकर्षक भी थे I Sailam गाँव भी उत्तरोत्तर बड़ा और कुछ काल के ब मिजोरम के हर स्थान से Sailam गाँव को श्रेष्ठ कह कर उस गाँव की महिमा का

[33]सी.कामलौवा ,शूरवीर खुआङ्चे , p-89
[34]V.L Siama Mizo History p-50
[35]C.Vanlallawma,Bengkhuaia Sailo p-1
[36] C.Vanlallawma,Bengkhuaia Sailo,p-3

गुणगान भी होने लगा I "सन् 1871 के शिशिर ऋतु में Sailam से निकल कर Hachhek पहाड़ होते हुए मैदानी इलाके Katlicherra पर आक्रमण ि I इसके बाद Alexandrapur पर आक्रमण क 23 जनवरी 1871 में एक चाय बागान के मालिक Winchester को मार गिराया I साथ ही उस की 5 वर्षीय बेटी Mary Winchester और कई अन्य लो को अपने साथ रख कर अपने को कामयाब कह कर लौटा I"[37] नाटक में भी ब्रॉन साहब Sailianpuia के गाँव में आ कर 'बेङखुआइया और उसके लड़ाकुओं द्वारा जेम्स विन्चेस्टर का वध करने की खबर है I'[38] जब Bengkhuaia को इस बात की खबर हुई कि उसके अनुय अपने साथ गोरे को भी साथ लाये हैं तो उनकी प्रसन्नता कम हो गई उन्होंने कहा- "तुम लोगों ने इसके बाप को मार कर इसे यहाँ ला दिया, पता नहीं इसका क्या परिणा होगा ...Sailo और Mignote (गोरे) को मारना ग़ैरक़ानूनी हैं ..... I"[39] इस बात का नाटक में भी जिक्र है जब ब्रॉन साहब Sailianphunga के गाँव जाते हैं तो कहते है -"अंग्रेजों को मारना निषेध है I महारानी इसकी आज्ञा नहीं दे , ऐसी घटनाओं का बदला लेती रहेगं I तुम्हारें पूर्वज भी तो गोरे लोगों को मारने से परहेज़ करते थेI"[40]

Mary Winchester को वापस लाने के लिए आने वाले अंग्रेज दक्षिण की ओर से Chittagong से आकर Tlabung गाँव से Pukzing में डेरा डालने लगे I तभी मुखिया Savunga और उसके अनुयायियों ने उन पर धराधर गोली चलाने दुस्साहस किया I इस बात से अंग्रेज आग बबूले हो गए और उन्होंने क्रोधित होकर Savunga के गाँव को पूरी तरह जला डाला I काफी देर तक उनका सामना करते हुए अंग्रेज सीधा Bengkhuaia के गाँव पहुँच गए I Bengkhuaia और उसके

[37]Ibib,p-9

[38]सी.कामलौवा ,शूरवीर खुआङ्चेरा, p-89

[39]C.Vanlallawma,Bengkhuaia Sailo p-9

[40]सी.कामलौवा ,शूरवीर खुआङ्चेरा, p-89

अनुयायियों की उन अंग्रेजों का सामना करने की हिम्मत नहीं थी I उन्होंने Mary Winchester को “दिनांक 21 जनवरी, 1872 (Sunday) को अंग्रेजों को वापस दे दिया I”[41]

अंग्रेजों ने जब Mary Winchester को वापस लिया वह रविवार का दिन थ I वह मिजोरम में लगभग एक स I उनका सरदार लेफ्टिनेंट का टी.एच.लेविन (Lt.Col.T.H.Lewin) था जिन्हें मिज़ो लोग Thangliana नाम से पुकारते थे I वे दक्षिण की ओर से आए थे इस क रण “छिम व्राई लिउ ” (दि ण की र से अंग्रेजो का आगम) नाम दिया गय I जिसको अंग्रेजों ने “Right column”[42] नाम दिय I

मिज़ो शासक Lalburha को दंड देने आए अंग्रेज सेन्स उत्तर की ओर से आए थे I सन् 1871 के उत्तरार्ध में सिल्चर (तत्कालीन मिज़ो में Hringchar) से आने लगे Iक्रिसमस के सम Khawlian नामक गाँव में डेरा डालने लगे I तभी मिज़ो के एक शासक Lalhleia और उसके लोगों ने उन अंग्रेजों पर गोलियों की बौछार कर दी I तब अंग्रेज लोग मिज़ो के अन्य शासव Pawihbawiha के यहाँ चले गए I जाते समय Chiahpui नामक पहाड़ में 200 मिज़ो बंदूकधारी युवक उन अंग्रेजों पर घात लगाए पड़े थे, किन्तु वे आपसी लड़ाई से बच गए I वे चलते ही रहे तब Mutelen नामक पहाड़ की आड़ में Pawihbawiha और उसके लोगों ने दिनांक 15 जनवरी 1872 को उन पर गोलियां चलायीं I उस लड़ाई में अंग्रेज सेना में से 12 लोग मरे तथा कुछ घायल हुए I अंग्रेज सेनापति भी कुछ हद तक घायल हुआ लेकिन उसका अंगरक्ष (orderly) मर गया I उनकी लड़ाई देर तक नहीं हु क्योंकि मिज़ो लोग ि -बित्तर हो गए थे I वे उस समय Pawihbawiha

[41] V.LDuhsaka,Mary winchester(Zoluti)p-58

[42] Ibid.,p-45

Selam नामक गाँव में रहते थे I उस Selam गाँव में अंग्रेजों ने 1 फरवरी, 1872 को गुरुवार के दिन प्रवेश किया और कुछ समय तक रूक कर वहां दुर्ग बना लिए I वे Pawihbawih के साथ संधि करने लगे और Pawihbawiha ने जुर्माने के रूप में उन अंग्रेजों को हाथी का दाँत दिया I अंग्रेज आगे बढ़कर मुखिया lalburha के गाँव की ओर प्रस्थान करने ल , वे जा ही रहे थे तब Tuithoh नामक नदी के उदगम स्थान पर रुके I तभी Sukte नामक जनजाति ने Champhai नगर पर आक्रमण f , उनकी दागी हुई गोली की आवाज भी उन अंग्रेजों को सुनाई दी ; किन्तु उस लड़ाई में Sukte लोगों को मिज़ो लोगों के सामने हार मानने को मजबूर होना पड़ा और वे वापस अपने स्थान बर्मा की ओर भाग खड़े हु I

'दिनांक 18 फरवरी, 1872 को रविवार के दिन उन्होंने Lalburha के साथ बातचीत की और उनके बीच संधि हो गई I Lalburha और उसके लोगों ने अपने द्वारा लूटी हुई 13 बंदूकों को अंग्रेजों के सामने रख दिया साथ ही आगे चलकर सरकार की आज्ञा मानने की तिज्ञा कीI अंग्रेज जहाँ से आए थे वहाँ से वापस चले गए और दिनांक 7 मार्च, 1872 को Tipaimuk पहुँचे I उनके साथ कई मिज़ो लोग भी थेI'[43] इस प्रकार इस आक्रमण "Hmar Vai lian" (उत्तर दिश से अंग्रेजों का आगम) कहते हैं I उनका सरदार Captain Robert था I

द्वितीय आगमन के कारण:

इस बार के आक्रमण में अंग्रेज मिजोरम में स्थाई रूप से रहने लगे I उनकी संख्या भी पहली बार की तुलना में अधिक थी और वे अपने पूरे सामान के साथ आए थे I वे मानते थे कि मिज़ो लोग अन्य जातियों पर आक्रमण करने में लगे हैं, इस कारण उन पर जब तक लगाम कसकर पूरी तरह से शासन नहीं किया जाए तब तक वे अपनी हरकतों से बाज नहीं आने वाले अर्थात वे अन्य जातियों पर आक्रमण करते

[43]V.L Siama Mizo History p-51

रहेंगे I इस मान्यता के साथ वे दूसरी बार आए थे, यह सन् 1889 की बात है। पहला आक्रमण स 1872 में था, इन 17 वर्षों के अंतराल में मिज़ो लोगों ने अन्य जातियों पर इस प्रकार आक्रमण I :

(क) "सन् 1888 में शासक Dosata और उसके लोगों ने Rahmate (Rangamati) में आक्रमण करके दो अंग्रेज और एक सिपाही को म गिराया।"[44]

(ख) "सन् 1888 के उत्तरार्ध में दो शासक Lungliana और Nikhama ने Sirte पहाड़ में रहने वाले अपनेही मिज़ो भाई Thangluah कबीले के लोगों परआक्रमण कि I उन्होंने बहुत लोगों को मार डाला और अनेक लोगों को गुलाम बनाकर अपने यहाँ ले गए।"[45]

(ग) "जनवरी 8-10,1889 को लियानफुड़ा ने सतीकाङ में तुइकुक (आदिवा जाति) पर हमला कर 101 लोगों को मारा था I इतना ही नहीं 91 लोगों को गुलाम भी बनाया था।"[46]

उपरोक्त कारणों से अंग्रेजों ने निर्णय लिया कि मिज़ो लोग को ज्यों का त्यों रहने देना बहुत हानिकारक है I अतः वे अनेक सैनिकों के साथ मिज़ो लोगों पर अंकुश लगाने आ गए I इस बार समस्त मिजोरम के निवासियों को अपने वश में रखने के लिए आए थे और उनकी संख्या भी पहले की अपेक्षा कई गुना थी I उन्होंने मिजोरम को तीन दिशाओं से घेरना शुरू किया I एक गुट सिल्चर से आ , दूसरा गुट Chittagong से तथा तीसरा गुट बर्मा से आया I इस प्रकार अंगेजों ने उत्तर-दक्षिण और पूर्व की तरफ से मिजोरम पर आगमन करना शुरु किय I

[44]V.L Siama Mizo History p p-52
[45] Ibid., p-52
[46]सी.कामलौवा ,शूरवीर खुआङ्चेरा, p-88

(क) दक्षिण दिशा से अंग्रेजो का आगमन :

ये सबसे पहले मिजोरम पहुँचने वाले थे I उनके सरदार का नाम ब्रिगेडियर जेनेरल ट्रेजिअर (Tregear) था I उसने तीन हज़ार से अधिक सैनिकों का नेतृत्व किया I उसने लुंगलेई की ओर आते समय मुखिया Hausata के गाँव को पूरी तरह जला डाला I वे लुंगलेई में डेरा डालकर दुर्ग बनाने लगे I वहीं से मिज़ो लोगों पर अंकुश लगाने के लिए जहाँ-तहाँ जाते थेI वे लुग्लेई से दो गुट में बँट गए I एक गुट उत्तर की ओर से आने वालों के स्वागतार्थ गए और दूसरा गुट पूर्व यानी बर्मा की ओर I पहले गुट की तुलना में दूसरे गुट के लोग सब से अधिक थे और सब प्रकार के काम करने में कुशल भी थे I

दक्षिण से आए अंग्रेज उत्तर से आने वाले अंग्रेजों के स्वागतार्थ जा रहे थे तभी शासक Lallianphunga के नगर में उनका मिलन ह I उन लोगों से Lianphunga ने क्षमा याचना व I उसने Tuikuk लोगों पर आक्रमण कर

समय 101 Tuikuk गुलामों के विषय में यह कहा कि "मैं बिलकुल नहीं जानता था कि मैंने सरकार के प्रति अपराध किया है बल्कि मैंने तो यों ही सोचा कि ये लोग 'Reng Lal' यानी त्रिपुरा के महाराजा की प्रजा हैं सो आक्रमण कर डाला।"[47]

दक्षिण से आए अंग्रेजों को दीर्घ काल तक किसी से युद्ध करने की आवश्यकत नहीं पड़ी I वे गाँव-गाँव जाकर लोगों को अपने अधीन करते ग ,Halkha(बर्मा के चिन्हील्ल्स प्रदेश का एक) तक आने-जाने की सुविधा के विषय में विचार करने लग गए, सुविधानुसार डेरा डालने लग गए I Chhim Vanlaiphai गाँव में उन्होंने दुर्ग बनाया उसे "फ़ॉर्ट ट्रेजियर (Fort Tegear) नाम दिया I इस समय

[47] V.Lsiama mizo history, p-53

दक्षिण भाग शांत था पर उत्तर की ओर अशांत वातावरण पैदा हो गय , यहाँ गोला बारूद चल रहा I उन उत्तर वालों की सहायता करने Major j.Shakespears (वह हमेशा चश्मा लगाता था इस कारण से मिज़ो लोग ः Tarmita यानी श्रीमान चश्मा कहकर उपहास करके पुकारते) अपने सैनिकों के साथ चला गयाI"यह समय दिनांक 16 मार्च,1892 का था और Lungrang और Zote नामक स्थानों के बीच युद्ध चल रहा थाI"[48] वे Chhipphir नामक गाँव की ओर चले गए और उन्होंने वहाँ दुर्ग बनाया I तब मिज़ो लोगों ने आकर उन प गोली बरसाई I वे मिज़ो लोग भूतपूर्व शासक Rolura के वंशज थे I Major और उसके सैनिक वहां काफी देर तक टिके रहे I जब वे chhipphir में थे दक्षिण के तमाम शासक Vandula के वंशजों को छोड़कर अंग्रेजों से युद्ध करने लग गये I तब बर्मा से आए अंग्रेजों ने मुखिया Nikuala और Fanai की जनजातियों को हराया और Chhipphir में रुके हुए Major j.Shakespears और उसके सैनिकों को छुड़ाने में सफल हुए I

यद्य दक्षिण में Leite नामक गाँव में युद्ध हुआ था तथापि सबसे भीषण युद्ध chhipphir में ही छिड़ा था, ऐसा कहते हैं I chhipphir के युद्ध के उपरांत दक्षिण में युद्ध नहीं के बराबर हो ग I Major J.Shakespears (Tarmitta) भी Lunglei में बड़े साहब (यानी डिप्टी कमिश्न) के रूप में बैठ गया I वह गाँव-गाँव घूमकर शासकों से बातचीत करता और -कर 'लैंड टैक्स' देने तथा अवश्यकतानुसार र्ग-मुर्गा, अंडे तथा चावल आदि देने की बात कहता तथा आवश्यक सरकारी कार्यों में पुरुषों को कुली का काम करने के लिए तत्पर रहने की बात बताता रहता था I

[48] V.Lsiama mizo history,p-54

(ख) उत्तर दिशा से आए अंग्रेजो का आगम :

उत्तर दिशा सिल्चर से आए हुए अंग्रेज सरदार Colonel Skinners (कार्नल स्किन्न) था I नाटक में अंग्रेजों के इसी आगमन का वर्णन किया गया हैI वह लगभग दो हजार लोगों को साथ ले आ I त्लोंग नदी के आस -पास Daly साहब और उसके कुछ सैनिक "changsil" (मिज़ो में त्लोंग डो) जनवरी 1980 में पहुँचे I उस समय मुखिया Lianphunga Tuikuk कई लोगों के पकड़े जाने के कारण डर गया था I नाटक में ब्रॉन साहब का कहना है कि "इसलिए हमारी सरकार ने पाँच वर्ष के लिए Lianphunga से उसकी मुखियागिरी छ न लीI"[49] उसने 70 Tuikuk गुलामों को उन्हें दे दिया; फिर भी उन अंग्रेजों ने कहा "हमें Lianphunga के गाँव देखने की इच्छा है"[50] इसलिए आ गए I जहाँ दक्षिण दिशा से आए हुए अंग्रेजों से उनका मिलन हुअ I

Lianphunga के गाँव से निकलकर Rullam और Khawbel गाँव में 200 सैनिकों क लेकर Major Begie–a चला गयाI उस समय Lungliana और Nikhama उन गॉवों के शासक थे I उन गॉवो को जलाकर अंग्रेज सेना आइजॉल की ओर चली ग I

आइजॉल मे Captain Browne बड़ा साहब बना हुआ थ I सैनिक मैदान के ऊपर दो टिलो (सैनिक दफ्तर और बारिख) पर अंग्रेजों ने डेरा डालाI वर्तमान कराघर के टिले पर मिज़ो शासकों का डेरा थ , यह मिज़ो शासकगण भूतपूर्व शासक Suakpuilala के पुत्र थे (suakpuiala Manga का पुत्र था)I अंग्रेज और मिज़ो शासक एक-दूसरे से बातचीत करने की हिम्मत नहीं जुटा पा रहे थेI अंग्रेजों ने

[49]सी.कामलौवा ,शूरवीर खुआङ्चेरा, p-88,89
[50]mizo history,p-54

कहा, 'वे हमारे दुर्ग के भीतर आकर हम से मिलें ' ठीक उसी तरह मिज़ो शासकगण भी ऐसा कहने लगे। वे काफी समय तक बिना बातचीत किये रूके रहे । उन्होंने बातचीत करने का समय अगली बार के लिए स्थगित कर दि । उस समय के द्विभाषिया का नाम था शिवचर (जिसे मिज़ो लोग Chhipchawrawna कहकर पुकारते थे)।

इस बार मिज़ो शासकों ने एक हजार ताकतवर बंदूकधारी युवकों को अपने साथ खड़े रहने का आदेश दे दिया और अंग्रेजों को "बिना सैनिक लाए उनके पास आने का आमंत्रण दि ।"[51] बड़ा साहब ब्रौन और सिपाही साहब को -एक सैनिक के साथ आ गए । वर्तमान कराघर की टिला पर उनकी बातचीत हो ई। इस बार की बातचीत में संधि सम्बन्धी वार्तालाप हुई ।'उस संधि के प्रतीक स्वरुप उन्होंने एक मिथुन काटकर भोज । मिज़ो लोगों ने 30 बंदूकें जुर्माना दिया और Lianphunga को मुखिया के अधिकार से हटाकर उसके बदले उस Suakhnuna को मुखिया बना दिय । जिसकी चर्चा माड़ा के बापू और ब्रॉन साहब ने नाटक में इस प्रकार की है । Lianphunga की मुखियागिरी छीन ली औ उसके गाँव में रहने वाले सभी तितर-बितर हो गए । उनकी इस संधि का काल सन् 1890 का मई महीना था । नाटक में इसका जिक्र ब्रॉन साहब द्वारा किया गया है जब वे sailianpuia के गाँव जाते हैं और कहते हैं इसलिए हमारी सरकार ने पाँच वर्ष के लिए lianphunga से उसकी मुखियागिरी छीन ली ..... ।[52]

Changsil की ओर जिन मिज़ो लोगों ने अंग्रेजों का मुकाबला करने की बात ठान ली वे - Kalkhama, Thanghulha के गाँव के लोग थे। (Kalkhama, Suakpuilala का पु था और Suakpuilala, Manga का पुत्र था । Thanghulha, Runphunga का पुत्र था और Runphunga Manga का पुत्र

[51] mizo history p -55

[52] C.kamlova khuangchera p-88,89

था) वे सब Manga के वंशज थेI उन्होंने आइजॉल और Sairang के बीच राशन देने जा रहे सैनिकों से छापामार युद्ध किया I जिसका नाटक में इ प्रकार वर्णन हुआ है - खुआङ्चेरा कहता है "यदि हमारे लिए आइजॉल के किले में या चङसिल पर धावा बोलने वालों का साथ देना असम्भव होता है तो हम आइजॉ , चङसिल के बीच अंग्रेजो को राशन देने वालों पर हमला तो बोल ही सकते हैं।"[53] तब फिर से युद्ध शुरू होने लगा और आइजॉल के दुर्ग में भी गोली चलायी गयी I Lianphunga के गाँव को पदच्युत किया गया I मुखिया साइथोमा ने कहा, "घोड़े परबैठा है, अतः घोड़े को नहीं मारना है I उसने मुझ पर हाथ उठाया था, सो सबसे पहले मैं ही उस पर वार करूँगा I मुखिया और मुखिया आमने-सामने होंगे I "वह कप्तान ब्रॉन पर गोली ता है"[54] और खुआङ्चेरा को भी गोली चलाने व कहता है I वह Changsilh दुर्ग में जैसे-तैसे घुस गया, किन्तु मेजर कोल ने उसको मरने हेतु मजबूर कर दिया I ब्रौन साहब के मरने के बाद R.B .Mc .Cabe को बड़ा साहब बना दिया I इस प्रकार इस Changsil युद्ध का काल सन् 1890 के लगभग शरद ऋतु का है I फिर से युद्ध छिड़ जाने पर सैनिक सिल्चर की ओ र से आ गए I

वे Tlawng नदी से होकर आने लगे, मिज़ो लोगों ने उन पर गोल बरसाई इसमें अंग्रेज सेना का एक सरदार Lt .Swinton मारा गया I यह घटना दिनांक 26 सितम्बर 1890 के शुक्रवार के दिन की है I उस पर गोली चलाने वाला Liankunga के गाँव का एक आदमी था I सैनिकों का नेतृत्व करने के लिए Lt .Tytler आगे आया, उसने दिनांक 28 सितम्बर को changsil में आकर Tanhril, Muthi, Hmunpui और Hmunphiah आदि गॉ को जला डाला I

[53]सी.कामलौवा ,शूरवीर खुआङ्चेरा, p-93

[54] Ibib,.p96

वह फिर Sentlang गाँव को जलाने निकल पड़ाI जहाँ Changsil और आइजॉल के सैनिक इकट्ठे हो गए और Sentlang को अचानक जला दिया गय । उसके मुखिया Kalkhama ने आत्मसमर्पण कि । इस घटना के कुछ दिन बाद Lianphunga और Thanghulha ने भी आत्मसम ण किय । "इन तीन मुखियाओं ने सबसे अधिक अंग्रेज आक्रमणकारियों का प्रतिकार कि । इस कारण से ये तीनों को सन् 1890 में कारावास ले जाए गए । Kalkhama और Lianphunga बहुत दुखी हुए और सन् 1890 के सितम्ब महीने में मर गए, उन्हें आत्महत्या करा दिया जाने लगा । किन्तु Thanghulha सन् 1896 में रिहा हो गया यानी लगभग 5 साल कारावास कि ।"[55]

''एक बार बड़ा साहब ने सेना सहित Sesawng नामक गाँव की यात्रा क , उस समय का बड़ा साहब वही R.B Mc Cabe थे । उन्होंने शस्त्रधार 300 मिज़ो लोगों को एकत्रित देखा । उसके साथ भी 100 सैनिक थे दोनों की ओर से गोली बरसाना प्रारंभ हो गया था । यह काल सन् 1892 के पूवार्ध का था।''[56] इस बार के मिज़ो लोग मुखिया lalsavunga के वंशज थेI बड़ा साहब और उसके सैनिकों ने उसी स्थान पर दुर्ग बना दिया और वहीं से प्रतिकार करने लगे । मिज़ो लोगों ने हर कोने से उनपर गोली बरसाई और बहुत देर तव युद्ध किया । उस समय Sesawng का मुखिया Lalburha था । उसे गिरफ्तार करने के लिए अंग्रेज तैयार हुए पर उनको इस बात की भनक तक न लगी कि Lalburha कब का उड़न छू हो चुका थाI अंग्रेज पूर्व के मुखिया से संधि वार्ता करते हुए एक-एक मुखिया को अपने अधीन करते गए ।

[55]V.L Siama Mizo History p-56

[56] Ibid., p-56

(ख) बर्मा की ओर से आए अंग्रेजो का आगमन:

बर्मा की ओर से आए अंग्रेज आक्रमणकारियें Fanai कबीले के लोगों को हराया I आते-आते Zahau कबीले के मुखिया Nikuala को भी अपने अधीन कर लिया I फिर Chhipphir गाँव में फँसे J.Shakespear (tarmita) के गुट को छुड़ाने लगे I उनके साथ मिज़ो मुखिया Lalsavunga के वंशज देर तक नहीं लड़ पाए I वे आते हुए मुखिया Vuta के वंशजों के पास से गुजरे, किन्तु उनके साथ कोई युद्ध नहीं किया I "बुजुर्ग कहते हैं कि मुखिया Kairuma जब Lailen में थे तब अंग्रेज पश्चिम की ओर आए , वे घोड़े, गधे तथा अनेक सामान के साथ आए थे I उस काल में रास्ता भी ठीक नहीं था इसलिए जंगल में जहाँ सोने की सुविध मिलती वहीं सो जाते थे I वे अपना सारा सामान ले जाने में असमर्थ हुए तो Lailen में घोड़े, कम्ब , पीतल के बर्तन इत्यादि अनेक सामान रख दिए I लेकिन मिज़ो लोग अंग्रेजों के उन सामानों से घृणा करने लगे कि इन वाई यानी अंग्रेजों के सामान को छूना नहीं, इनमें कीटाणु या जीवाणु हो सकते हैं I सो कहते हैं कि उनके सामान ज्यों के त्यों पड़े और कालांतर में सब नष्टप्राय हो गए।"[57]

इस तरह अंग्रेजों का आगमन कुछ समय के लिए जरू , फिर भी वे सारे मिज़ो समाज को अपने अधीन करने में सफल हुए और मिजोरम ब्रिटिश साम्राज अंतर्गत आ गय , ''सन् 1890 में अंग्रेजों ने आइजॉल को अपना मुख्य बनाया''I[58] सैनिक भी यहीं रहने लगे I शुरू में मिज़ो बुजुर्गो को लगा कि अंग्रेज ऐसे ही घूमने आए हैं, फि चले जाएँगे I जब वे भोजन के बाद अपनी थाली-बर्तन धोते

[57]V.L Siama Mizo History p-56

[58]सी.कामलौवा ,शूरवीर खुआइचेरा, p-vii

थे तो मिज़ो लोग कहते थे कि "ये अधिक दिन नहीं रहेंगे, अपने बर्तन धो कर चले जाएँगे"[59] उस काल के मिज़ो लोगों को पता नहीं था कि हर दिन थाली-बर्तन साफ करने की आवश्यकता है। ब्रिटिश सरकार के रहने के पश्चात उन्नति और ज्ञान प्राप्त करने में मिज़ो जनजातियाँ समर्थ हुईं।

लेखक हमें सूचित करना चाहते है कि मिज़ो जनजातियों के बीच शूरवीरों को किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था और अपने गाँव, अपनी जाति और अपने प्रांत के लिए कुछ भी कर गुज़रने की भावना से वे ओत-प्रोत थे। अंग्रेजो के आगमन के कारण मिज़ो जनजातियों को जिन कठिनाइयों का सामना कर उसके फलस्वरूप मिज़ो जनजातियों का इतिहास ही बदल। इसके साथ-साथ लिपि का आविष्कार भी हुआ जिस कारण आज मिज़ो जनजातियाँ सममूल्य भाव विश्व के साथ चल पा रही हैं।

****

[59]V.L Siama Mizo History p-57

तृतीय अध्याय

शूरवीर खुआङ्चेरा :मिज़ो समाज एवं संस्कृति

(क) शूरवीर खुआङ्चेरा और मिज़ो समाज

सामाजिक संरचना:

मिज़ो जन जातियाँ लड़ाकू और एक दूसरे पर हमला करने वाली जातियाँ थी, इसलिए छोटे-छोटे गाँव बसाकर रहने की उनव हिम्मत नहीं होती थी |वे सामूहिक रूप से रह कर बड़े-बड़े गाँव बसाते थे। समूह में रहने पर युवकों के लिए अपने गाँव की रक्षा करना भी आसान होता थ । दुश्मनों के अचानक हमलों से बचने के लिए वे पहाड़ियों की चोटी पर गाँव बसाते थे।घाटियों में वे गाँव नहीं बसाते थे;दुश्मनों से बचने के लिए ही नहीं,बल्कि ऊँची पहाड़ियं पर रहना स्व स्थ्य के लिएभी अच्छा था। रेइएक गाँव जहाँ खुआङ्चेर निवास करता था, वह भी ऊँची पहाड़ी पर ही बसा था।

"मिज़ो समाज आजीविका का मुख्य साधन -झूम खेती और शिकार था।खेती गाँव के समीप ही की जाती थी, दूर–दूर खेती करना मुश्किल था।खेती के लिए दूर जगह को चुनने में यह परेशानी थी कि दुश्म उन पर कभी भी हमला कर सकते थे।दुश्मनों के हमले से बचने के लिए भी वे अपना गाँव समय-समय पर

बदलते रहते थे।दुश्मनों से बचने और नई खेती करने के लिए वे हर पाँच साल के बाद अपने गाँव का स्थान बदलते रहते थे।"[1]

"आदिव से मिज़ो जन-जातियों का गुजारा, खेती और शिकार करने से होता था।आधुनिककाल में भी जब कोई अकेले समूह में किसी जंगली जानवर को मारता था तो गाँव के बाहर वह हवा में गोली चलाकर अपनी वीरता का इजहा करने के लिए दो-दो पंक्तियों के गीत गाया करता था।"[2] इस नाटक में भी इसका उल्लेख है।जब शिकारियों ने भालू को घेरा था "एक नवयुवक के कारण ही हम उसे मारकर जश्न के आगाज हेतु गाँवके छोर से हवाई गोली "Tlang Tlir"[3] चला सके थे।गाँव की युवतियाँ उनके स्वागत के लिए आती थीं। ये शूरवीर गाँव को सभी प्रकार के खतरों यथा जंगली जानवरों एवं दुश्मनों से बचाते थे और गाँव में शांति बनाये रखते थे।गाँव का हर स्वस्थ व्यक्ति खेती क । लेकिन मुखिया,लोहार,अ -दूत,बड़े ,बूढ़े आदि खेती करने नहीं जाते थे।

"खुआङचेरा नाटक के प्रथम अंक में भी देखा जा सकता है कि गाँव में एक बुजुर्ग और कुछ अस्वस्थ लोग बाँस एवं बेंत से आवश्यक टोकरी,सूप आदि बुनते हुए आपस में गपशप कर हैं।"[4] दिन में गाँव में केवल बच्चे और बुजुर्ग देखने को मिलते हैं और कुछ तो अस्वस्थ होने या परम्परों के पालन हेतु घर में बैठे रहते हैं।नाटक में भी उद्घोषक हाँफतेहुए साइलियानपुइया को खुआङचेरा का लड़ाई प

[1]Selet Thanga,p-1

[2]C.Kamlova,Pasaltha,p-5

[3]Tlang Tlir:अपनी वीरता का इजहार करने के लिए दो-दो पंक्तियों का गीत गाना

[4].Selet Thanga,p-3

न जाने का कारण बताते है "उसके यहाँ बच्चा हुआ है परंपरा के अनुसार वह ऐसी हालत में कहीं नहीं जा सकत I अपशगुन माना जाता है।"[5]

"उस समय मिज़ो समाज में कोइ ,राज्य या कानून नहीं थ Iतो समाज के सुचारू संच लन और रक्षा करने के लिा जोलबूक काम आता था। जोलबूक वह स्थान था जहाँ युवक अच्छे संस्कार/शिष्टत ,त्याग , बड़ो का आदर करना आदि अ ज्येष्ठ से सीखते थेIजोलबूक मिजोरम के प्रत्येक गाँव में युवकों के समूह में सोने और सभी प्रकार के वांछित आचरणों को सीखने क जगह है Iगाँव क सुरक्षा के लिए भी जोलबूकमें सभी युवकों का विशेषकर रात के समय मिलकर रहना व अनिवार्य होता थ I"[6]इस नाटक में भी का उल्लेख इस प्रकार हुअ :जब उद्घोषक बाघ घेरने की सूचनादेता है "इस बार मुखिया और उनके सभी सलाहकार बाघ को घेरने के लिए इसी जोलबूक में युवकों के साथ विचार-विमर्श करने आने वाले हैं।"[7]थनछुमी द्वारा विवाह के लिए अस्वीकार करने पर "नेइह्लथङा और उसके पिता काफी गुस्से में होते है और जोलबूक में नेइह्लथङा काफी हुँकार करता है"[8] "खुआङचेरा और थनछुमी के विवाह के दिन हेमपुआ और नेइह्लथङा नशे में होते हैं और उन्हें परेशान करते हैं I"[9]

"मिज़ो जनजातियं क सामाजिक संरचना में जोलबूक का महत्वपूर्ण स्थान थाIयहाँ सभी नवयुवक एक साथ रहतेऔर कार्य कर Iजिससे उनके बीच

[5]C.Kamlova,Pasaltha,p101

[6] Selet Thanga pi pu lenlai पृ10

[7]C.Kamlova,Pasaltha,p34

[8]Ibib,p-58

[9]Ibib,p-65

साहच ,सहयोग,उदारता,दूसरों के लिए त्याग ,बलिदान आदि भावना सहज उत्पन्न हो जाती थी।"[10]जो खुआङचेरा के चरित्र में भी परिलक्षित होती है।

राजनीतिक व्यवस्थ :

"मिज़ो समाज राजनीतिक रूप से बहुत विकसित अवस्था । यहाँ राज ,राष्ट्र ,और साम्राज्य जैसी विकसित राजन व्यवस्थाएँ बीस शताब्दी तक विकसित नहीं हो पायी थ । सभी मिज़ो गाँव राजनीतिक रूप से एक स्वतंत्र इकाई थे। जिनका दूसरों से कोई राजनीतिक संबंध नहीं होता था। हर गाँव अपने–आप एक स्वतंत्र राजनीतिक इकाई होता था।जिसका संचालन एक मुखिया द्वारा किया जाता था जिन्हें लल(Lal) कहा जाता था। मुखिया ही गाँव के सामाजिक एवं राजनीतिक व्यवस्था का केंद्र बिंदु होता था और वह अपने सलाहकारों की मदद सभी सामाजिक एवं राजनीतिक ओं का संच लन करता था।गाँव में मुखिया के बाद सलाहकारों स्थिति महत्वपूर्ण मानी जाती थी।"[11]नाटक में भी साइलियानपुइया के कहने पर ही "चङसिल और आइजोल के बीच जहाँ भी वे रसद-पानी तथा वस्तुओं को आ -पार ले जाते दिखें वहाँ मौका देखकर हमला कर देने के लिए युवकग को आदेश दिया गया ।"[12]आदि ल से मिज़ो जन जातियों के गाँवों में मुखिया होते थे।वंशानुगत मुखियाओ के होने से पहले अपने ही समाज के किसी भी बहाद ,साहसी व्यक्ति को मुखिया बना दिया जाता । उस समय सभी जनजातियों के लोग अलग –अलग गाँव में रहते थे।अगर एक गाँव में दो जातियाँ होती थी, तो गाँव जाति के अनुसार बँट जाते थे जिसमें अलग से

[10]Selet Thanga pi pu lenlai p-10

[11]Selet Thanga Pi Pu LenLai पृ.11

[12]C.Kamlova,Pasaltha,p-99

उनका अगुआ होता था,जो बहादुर अपने गाँव की रक्षा करने लायक होता था उसे जनता अपने मुखिया के रूप में चुन लेती थी।

खुआङ्चेरा नाटक में कई मुखिया के नाम आयें जैसे लिआनफुडा,साइलिअनपुइआ,बेङखुआइया,हाऊसाता,कलखमा,सुआकपुइलला,थन रूम ,साइथोमा,जारोका,थङहुर । इस नाटक में खुआङ्चेराकेलिआनफुडा और साइलिअनपुइआ गाँव में निवास के समय का खासकर जिक्र किया गय ।मिज़ो समाज में मिज़ो मुखियाओं का बहुत महत्वपूर्ण स्थान । अपने गाँव वालों के लिए वे सब कुछ थे।प्रथम अध य में मिज़ो समाज में मुखियाओं की स्थिति एवं उनवे शासन व्यवस्था पर विस्तार प्रकाश डाला गया ।"ग्रामीण शास व्यवस्था में मुखिया निम्नां खित उत्तरदायित्वों का निर्वा करते थे-

(क) खो थर कई (ख) लल इन सक

(ग) जोलबूक सक (घ) रम तूक रेल

(ङ) रम मूत (च) कोंग्पुई सिया

(छ) फनोउ दोइ (ज) तुइखुर

(झ) बूह सेम रूवाल (ञ) ओमनी खम

(ट) इनदोउ(ठ) इन रेम न सियाम"[13]

खो थर कई :

"मिज़ो लोगों के पूर्वज एक ही स्थान पर च र से पांच साल तक रहते थे,क्योंकि उन्हें धान के लिए नई जगह की जरुरत होती थी जिसे Ram zuan या Khaw thar Kai कहा जाता था। जब मुखिया के बेटे नए गाँव की स्थापन करने जाता थातो पहले उस जगह की जाँच की जाती थी कि वह जगह स्वर , सुविधा जनक

[13]Selet Thanga,Pi Pu LenLai ,p- 3

और सुरक्षि है या नहीं।मुखिया अपने तीन से पांच सहायव को उस स्थान की जाँच के लिए मुर्गा को साथ लेकर भेजता था, वे उस जगह रात को ठहरते थे जहाँ उनका सारा गाँव स्थापित हो सके। रात को मुर्गा समय-समय पर बाँग दे तो वे उस जगह को स्वस्थ र सुविधाजनक स्थान म लेते थे,हँसुए से थोड़ा सा घास काट लेते थे और घर लौट जाते थे और तब मुखिया के साथ नई जगह पर स्थापित होने की योजना बनाई जाती थी।"[14]

गाँव में मुखिया का अधिकार चलता ,जनता उनके पास हर अच्छी बुर्र खबर लेकर जाती थी और वह सभी प्रकार की स ओं को सुलझाता थ।सभी उसके हुकुमों का पालन कर थे और कोई भी उनके हुकुमों को मानने से इनका नहीं करता थ। जो उन्हें पसंद नहीं होता था उन्हें गाँव से बाहर निकाल सकते थे,जो उन्हें पसंद आए उसकी उन्नति करवा सकते ।गाँव के संपन्न लोगों से वह उनकी सम्पति भी छीन सकते थे।"जो मुखिया अच्छे होते थे अपने गाँव वालों से बहुत प्यार करते थे।जनता भी सुखी रहती थी और वे सबके प्रिय होते थे।मुखिया गरीबों की मदद भी कर थे इसलिए गाँव वाले भी मुखिया का आदर और सम्मा करते थे और उनकी मदद के लिए हर समय तैयार रहते थे। मगर कई मुखिया ऐसे भी होते थे, जो जनता से उनकी वस्तुअ को छीन लेते थे।"[15]"बहुत गाँव ऐसे भी होते थे जहाँ सलाहकार अपने मुखिया को गलत सूचनाएँ देते थे और उनसे गलत काम कराते थे | परिणाम स्वर गाँव वालों को परेशानी होती थी और उन्हें सब कुछ सहना पड़ता था।"[16]

खुआङ्चेरा की वीरत नाटक में कई बा देखने को मिलती है जब "पहाड़ी के बाहर सीधी ढलान में खुआङ्चेरा एक पत सी चट्टान पर भाले के साथ तैयार

[14]K.Zawla,PiPute leh an thlahte chanchin,p-126

[15]James Dokhuma,Hman lai mizo kalphung ,p-145

[16]Selet ThangaPi Pu LenLai ,p- 5

खड़ा था और नरभक्षी गुफा ।जब भी नरभक्षी खुआङचेरा पर झपटत ,वह भाले से उस पर वार कर देता था।यदि दं -चार सूत भर भी वह अपनी जगह से फिसलता तो नीचे हजारों फीट गहरी खाई में गिर जाता।नरभक्षी के वध के बाद खुआङचेरा ने केवल इतना ही कहा कि –नरभक्षी के जोर के आगे दो-चार सूत पीछे हटना कोई बड़ी बात न थी,पर हटने के लिए जगह ही कहाँ थी,सो खड़ा रहा.... बस।"[17]

लिआनफुडा ने कहा "इस वीर युवक की वीरता के हम सब कायल हैं तो अवश्य ही उसे बड़े मग का हकदार बना देना चाहिए। क्यों नइह्नथङा के बाप ,आप क्य कहते हैं?"[18] मगर इष्य के कारण प्रमुख सलाहव (नइह्नथङा व बापू) कहता है: "घटना में सम्मिलित नइह्नथङा और इसके मित्रों के अनुसार हेमपुआ को ही नरभक्षी के वध में मुख्य अगुवाई करने वाला मान रहे हैं।सर्वप्रथम नरभक्षी पर वार क वाला भीहेमपुआ ही था।"[19]"आयु में बड़े के हक में शिकार"[20] कहावत को वजह बनाकर प्रमुख सलाहकार के विचार को कार कर हेमपुआ को ही बड़े मग का हकदार मानलिया जाता है।

"मिज़ो मुखिया आज की लोकतांत्रिक व्यवस्था की तरह नहीं जाते थे।मगर जनता अगर अपने मुखिया को पसंद नहीं करती थी तो वह उन्हें छोड़कर दूसरे गाँव में बस सकता थ ।"[21]"पर्वातुई गाँव का मुखिया लिआनफुडा भी बुरे और संकट के दिनों में ही खुआङचेरा को याद करता था ।अच्छे दिन में उसे याद नहीं करता था और तो और एक बार उसव अनुपस्थिति में उसके बकरे को मार दि गया, इसलिए अप्रसन्नता और असंतोष के साथ वह रेइएव गाँव बसने चला जाता है जहाँ

[17]C.Kamlova,Pasaltha,p 10,11

[18]Ibib,p-11

[19] Ibib,p-11

[20]Ibib,p-11

[21]James Dokhuma,Hman lai mizo kalphung ,p-145

लिआनफुडा का छोटा भाई साइलिअनपुइआ मुखिया था । उसव इस बात पर उसके मुखिया को भी बहुत दुःख होता है।वह बार-बार उन्हें गाँव न छोड़ने के लिए अनुरोध करता रहा पर वह नहीं मान ।"[22]मुखिया की पत्नी ने भी स्वयं उसका पीछा करके उसे वापस घर आने का अनुरोध किय , वह कहती रही कि "खुआङचेरा यदि तुम इस गाँव को छोड़कर चले जाओगे तो गाँव की रौनक ही समाप्त हो जाए । मुश्किलों के दिन अब हमें कौन सहार देगा? गाँव के युवक और युवतियाँ भी उदास हैं, तुम्हारे बिना वे अब कैसे हर्ष-उल्लास के दिन को मना पाएँगे? सब कुछ भुला-बिसराकर तुम अपने गाँव में ही रहो।दूसरे गाँव में जाकर बसने की बात को मन से निकाल दो।"[23]मगर वे उसे रोक नहीं पाये।मुखिया गाँव का प्रधान शासक होता था पर लोगों को भी आजादी थी कि वे अपनी मर्जी से गाँव बदल सकते थे।सहजता से गाँव छोड़ने और बदलने का एक महत्वपूर्ण कारण यह होता था वि जमीन पर किर्स गाँव वाले का अधिकार नहीं होता था। सब कुछ मुखिया की मर्जी से तय होता था।दूसरा, मिज़ो लोगों के पास संपत्ति के नाम पर कुछ खास नहीं होता था वि जिसे लेकर जाने में उन्हें कोई विशेष परेशानी हो।

सार्वजनिक अवकाश :

"सार्वजनिक अवकाश की घोषणा मुखिया का अधिकार ह ।सार्वजनिक अवकाश कई कारणों से मनाए जाते थे जैसे:

(क)Kawngpui siam

(ख)Fano dawi

(ग)Kangralni

(घ)Mi zawn hlangpuia zawn

[22]Tribal Research Institute,Mizo Pasalthate पृ 163

[23]C.Kamlova,Pasaltha,p-68

(ङ)Ral lu lamni

(च)sarthi awmni

(छ)Rai cheh awmni

(ज)Sahrang awmni

(झ)sakei lu lamni

(ञ)Khawkang awmni "[24]

इन सार्वजनिक अवकाशों "sakei lu lam"[25] का जिक्र नाटक में किया गया है।प्राचीन समय से बाघ धार्मि निषिध भाग है जिसका नाम लेना भी वे पसंद नहीं करते थे और जिसे "sapui"[26] कह कर पुकारते थे।जब वे खास कर जंगली जानवर में बाघ को घेरने का प्रबंध करते थे तो उसका नाम "sapui thlah ni"[27] या "sapui zim ni"[28] का नाम देते थे। दूसरे जंगली जानवर के मुकाबले में उसे ज्यादा महत्व दिया जाता थ ।बाघ के शिकार के दिन को awmni kham ni के दिन में गिना नहीं जाता था।

"बाघको मारने वाला व्यक्ति एक समारोह का प्रबंध कर ,जहाँ लोग जश्न मनाते थे।इस समारोह को मिज़ो समाज मे 'ai'कहा जाता है।इस ai का प्रबंध करना अनिवार्य था । जिस क्ति में इस समारोह को आयोजित करने की क्षमत सामर्थ्य नहीं होती थी उनके बदले कोई दूसरा व्यक्ति करसकता था ।इसमें ज्यादातर यह कार्य मुखिया ही करता था क्योंकि वही सबसे ज्यादा सामर्थ्यवान था।बाघ का ai करना मुश्किल म था इसलिए इसके लिए थोड़ी तैयारी और

[24].James Dokhuma,Hman lai mizo kalphung ,p-144,145,119

[25]"sakei lu lam" बाघ को मारने के बाद मनाया जाने वाला जश्

[26]sapui बाघ,लुसेई जात sakei को sapui कहते थे जब वहशहर से बाहर जंगल में होता था।

[27]बाघ को मारने का दिन

[28]बाघ को घेरने का दिन

संसाधनों क आवश्यकता होती थ ।"[29]नाटक में भी इस बात का उल्लेख हुआ है जब जश्न को मनाने की बात कही जाती है तब लिआनफुडा कहता है "यदि भोज के लिए उसके पास जानवर क कमी होगी तो मैं इस भार को वहन कर लूँगा।"[30]

"जिस दिन बाघ क aih दिन होता था कोई भी दूसरा काम नहीं करत था।"[31]नाटक में भी लिआनफुडा उद्घोषक के द्वारा गाँव वालों को इस बात की खबर देते हैं "नरभक्षी के वध के उपलक्ष्य में परंपरागत नृत्य का आयो जाएगा।उस दिन कोई भी काम पर नहीं जा "[32]हर किसी को इस दिन के लिए तैयारी करना पड़ता था।हर प्रकार वर यथा:पालतू मिथुन,कुत्त ,मुर्गी,बकरी,सुअर आदि जानवरों का भी सर काटा जाता ।मगर ये खास कर तब होता था जब मुखिया इसका आयोजन नहीं करता थ ।अगर मुखिया इसका आयोजन नहीं करता थ , तो पालतू मिथुन को शामिल न ि ये जाने पर भी आयोजन को सफल समझ लिया जाता था; क्योंकि पालत् मिथुन बहुत महंग होता था।यह मान लिया जाता था कि उन्होंने सभी जानवरों के मांस को काटा है।"बाघ/ नरभक्षी की विदाई की पहली पुजारी ओझा बलि के मुर्गे को मारकर ये मंत्र जापते थे।

मैं ऊपरी रास्ते चलता हूँ
और तू नीचे की राह,
तुझे हमने तुच्छ माना है
आकाश की तरह हम हैं ऊँचे
देवी-देवताएँ करते रक्षा मेरी

[29]James Dokhuma,Hman lai mizo kalphung ,p119

[30]C.Kamlova,Pasaltha,p-13

[31].James Dokhuma,Hman lai mizo kalphung ,p -119

[32]C.Kamlova,Pasaltha,p -12

जहाँ भी जाऊँ साथ हैं मेरे।[33]

ये गीत गाकर कठरा से मुर्गे के गर्दन को ढक कर उसे मार दिया जाता था उस पूरी रात शराब पी जाती थी और अगले दिन सभी नवरों को काटकर बाघ के सिर को लेकर पूरे दिन नृत्य होता था। इस नाटक में परवतुइ गाँव के मुखिया के आँगन में नरभक्षी बाघ के सिर काटने के उपलक्ष में सामूहिक नृत्य का आयोजन किया जाता है – ताँबे की डफली,दारबू,खुआङ को बिना रुके बज जाता है।[34]नाटक में भी एक बूढ़ा कहता है "मुखिया और उनके सलाहकार औरतों का भेष बदलकर आएँगे ।सभी पनफेन(एक तरह का घाघरा) पहनते हैं,तुइबूर(औरतों के लिए तम्बाकू पीने के लिए बनाया जाने वाला छोटा हुक्कानुमा पाइप) मुँह में दबाकर आता है, परन्तु तम्बाकू दानी में तम्बाकू के बदले राख रखेंगे,सभी राख को तम्बाकू की जगह हुक्के भरकर उसे जोर-जोर से फूकेंगे ।इतना ही नहीं ,महुइत्लूर(सूत काटने का तकली)हाथ में लेकर वे सूत भी कातते जाएँगे ।"[35] ऐसी मान्यता है कि जब बाघ को मारकर उसके सिर के चारों ओर नाचकर विजयी हो का जश्न मनाया जाता है तो जंगल के शेष बाघ भी इस नृत्य को देखते हैं।औरत को विजय नृत्य करते देख वे कहते है कि अरे! हमारा मित्र तो औरतों व भी नहीं मार सक ।बहुत ही शर्म की बात है कि वह औरतों से हार गया है।मरने योग्य ही था,हमारा मित्र ! इसलिए जीवित बाघों को धोखा देने के लिए ही सभी नर्त्तक औरतों का परिधा पहनते हैं ।भाले और तलवार के साथ नाचने का मजा कुछ और ही होता है।"यह नाच वही नाच सकता है जो अपने गाँव में वीर –धरी और पक्के शिकारी होते हैं । गैरों के लिए इस नाच को नाचने की अनुमति नहीं होती है।"[36] "विजयी जश्न क

[33]C.Kamlova,Pasaltha,p- 20

[34]-James Dokhuma,Hman lai mizo kalphung ,p 121

[35]C.Kamlova,Pasaltha,p -23

[36]C.Kamlova,Pasaltha,p 24

कर्ता–धर्ता वीरों का परिधान पहनता है और थैली में एक तरफ बारूद दूसरी ओर तलवार रखता है,कमर में दो रंगों कि पगड़ी भी पहनी है जिस पर वकूल (एक तरह की चिड़िय)के पंख पगड़ी की शान बढ़ने के लिए रखी हुई है।कंधे पर बंदूक और जिस झोले को उसने दूसरे कंधे पर लटका रखा है उसे साह्नउमीम इप (एक तरह का झोला) कहते हैं।झोली में एक सफ़ेद पत्थर और उबला हुआ अंडा रखत ।...अंडे के छिलके को उतार कर झोली से सफेद पत्थर निव लता है। "..खुद अंडा खाता है और सफ़ेद पत्थर बाघ के मुँह में ठूस देता है।यह देखकर लोग जोर-जोर से हँसने लगते हैं। आगे कहता है अरे!तू तो नहीं खा सकता है न! मैंने तो अपना हिस्सा पूरा खा लिया है।अरे तू मेरी क्या बराबर करेगा । सुन (बाघ कि ओर तर्जनी उंगली दिखाते हुए) मैं तुझसे पराक्रमी हूँ तू नीचे के रास्ते चलना और मैं ऊपर वाले रास्ते पर चलूँगा।तू पश्चिम की पहाड़ी की ढलान तरह धारदार है और मैं पूर्वी पहाड़ि की तरह ऊँचा उठ गया हूँ। तलवार निकालकर मरे हुए बाघ के सिर पर वार करता है । लोगों के हर्षनाद की ध्वनि वातावरण में गूँजने लगती है।फिर बंदूक से निशाना लगाकर गोली चलाता है, सभी विदूषक पीछे से उसकी नकल करते हैं और लोग की हर्षनाद ध्वनि से वातावरण गूंज उठता है।[37]

पारिवारिक संरचना:

मिज़ो जनजातियाँ एक साथ रहने वाली । जहाँ पिता परिवार का मुखिया होता है वहां शिकार करना, फसल काटना,झोपड़ी बनाना, काम करने के लिए सामान और औजार बनाना,महिलाओं के कामों में मदद कर उनके बोझ हल्का करना पुरुषों का काम माना जाता ।अपने परिवार का बोझ उठाना उस कर्तव्य माना जाता थ । अगर घर में खाना न हो तो माना जाता था कि मर्द की

[37]Ibib,p-25,26

इज्जत मि में मिल गई है। मेहनत वाला काम,कठिन काम मर्द का काम मा जाता था। नाटक में भी हम किसी भी मर्द को घर के आतंरिक कामों में हाथ बटाते नहीं पाते हैं । वे शिकार के लिए जाते हैं ।जोलबूक में रह कर अपने गाँव की रक्षा करते हैं और खेतों में कटाई करते हैं। नाटक में भी खुआङचेरा आदि मर्दों को घर के कामों में व्यर नहीं पाया गया है, मगर अपने प्रदेश की रक्ष करने में कर्भ पीछे नहीं हटते हैं।खुआङचेरा भी कहता है: "गाँव वालों के लिए, अपने देश के लिए,मुझे सब कुछ कर गुजरना है,अपने परिवार भर के लिए न वरन अपने देश के लिए मुझे जीवन बलिदान कर देना है।यदि देश की रक्षा न हो तो परिवार व गाँव कैसे बच सकता है? मुझे अपनी पत्नी थनछूमी और बच्चों की देखभाल कर के साथ–साथ उन्हें सम्मान से जीने के लिए भी रास्ता दिखाना है । साथ ही,मुखिया साइलियानपुइया और उनके गाँव वालों के लिए मुझे आगे बढ़ना है। थनछूमी,पहले देश की रक्षा करनी है ।मैं तुझे अपने बच्चों के साथ छोड़कर जा रहा हूँ।बिना घबराए रहना।ईश्वर सबकी रक्षा करे ।"[38]

मिज़ो मर्द अपने वचन पर टिके रहने को अपना कर्तव्य मानते ।ये हमें तब देखने को मिलता है जबथनछूमी कि खुआङचेरा के साथ विवाह की बात चल रही थी और उसके बाद थनछूमी का उससे भी अच्छे घर से रिश्ता आता है। मगर वे अपनी बातों से न मुकरकर अपने वचन को निभाते हैं।हमसे पहले वे बिचौलिए को वचन दे चुके हैं सो, अपने वचन पर चट्टान तरह अडिग हैं वे। "वीरों की तरह हम भी अपने वचन से पीछे नहीं हट सकते।पलटने कि कोई गुंजाइश ही नहीं रही, अब तो आप लोग कृपा करके ह याचना पूर्ण शब्दों से हमारी मजबूरी उनतक पहुँचा दीजिएग "[39]

[38]C.Kamlova,Pasaltha,p 102

[39]C.Kamlova,Pasaltha,p-49

स्त्रियों की स्थिति:

मिज़ो-समाज में महि का काम घर को चलाना और परि देखभाल करना है।मर्द से निर्बल होना और मर्द की मर्जी के अनुसा उस सेवा करना उसका कर्म था । घर का सारा काम उन पर निर्भर रहता । झूम खेती में भी फसलो को उगाना, काटना उसका काम था। इन कामों में मर्द उनकी मदद लगभग नहीं क थे।घरों के आतंरिक कामों में मर्द उनकी मदद नहीं क । घरों में पानी भरना,चावल को साफ करना, सूअर,मुर्गी आदि को पाल ,उनका खाना बनाना और बर्तन साफ कर , बच्चों व संभालना महिलाओं का काम ।[40] इस नाटक में भी जब भी कोई महिला पात्र प्रकट होती है वह अपने काम में व्यस पाई जाती है ।जैसे छूमी,नेईथगङा की माँ, खुआङचेरा क माँ अपने घर सुअर का दाना पकाते हुए पाई जार्त हैंया घर के किसी अन्य काम में व्य पायी जाती हैं।परिवार में पिता अपने परिवार की व्यवस्था के बारे में सोचता और पत्नी इन कामों क अमल में लाने में उसकी मदद करती है।

आदि काल में कहा जाता था । महिला और बाड़ को तो बदला जा सकता है।पितृसत्तात्म मिज़ो समाज में पुरूष ही समा एवं परिवार के कर्ता-धर्ता होते हैं ।स्त्रियों को बहुत अधिक स्वतंत्रता और अधिकार न दिया जाता है ।स्त्रियों का तो महत्वपूर्ण विषयों पर अपना मत सार्वजनिक रूप से प्रकट करने का भी अ नहीं था।सामान्यतः मिज़ो पुरुष स्त्रियों का अपने से पहले बोलने की इजाजत न देते थे। इस नाटक में भी इसका उल्लेख ।नेइह्आ की शादी छूमी से कराने का प्रस्ताव लेकर मध्यस जब छूमी के घर गये और इंकार सुनकर वापस लौट कर इसकी सूचना नेइह्आ के पिता को देते हैं तब यह सुनकर नेइह्आ की माँ अपने

[40]Selet Thanga,Pi Pute lenlai,p-17

पति और अपने बेटे को मध्यस्थों के सामने ही कोसने लगती है। तब अपनी पत्नी व डाँटते और धमकाते हुए नेइह्नआ का पिता कहता : "फिर शुरू हो गई ! तुझे कितनी बार समझा चुका हूँ कि मर्द से पहले औरतें नहीं बोला कर । यह बात कितनी बार सम नी पड़ेगी तुझे.....!"[41]इससे मिज़ो समाज की पुरुष मानसिकता का स्पष्ट पत लता है।परन्तु पुरुष प्रधान पितृ त्त त्मक समाज वे होते हुए भी मिज़ो स्त्रियाँ घर की चार दीवार्र में बंद नहीं रहती थीं।ईसाई धर्म में धर्मान्तर के बाद तो उन्हें और भी आजादी दी ग ।विधवा का मिज़ो समाज आदिकाल से ख्याल रखा जाता थ ।जब कोई शिकार किया जाता था तो उसके लिए अलग से भी माँस रखा जाता था।हर तरफ से उसका ख्याल रखा जाता श । हाँलाकि समाज में ऐसे ई और भी थे जिन को मदद की वश्यक पड़ती थी।खुआङ्चेरा भी विधवा का बेटा था।गाँव वाले ये सोच रहे थे कि वह विधवा का बेटा होने के कारण उतना इज्जत नहीं पा सक ,जो उसे पाना चाहिए । विवाह के मामलो में भी नेइह्थङा के पिता सोच रहे थे कि खुआङ्चेरा विधवा का बेटा होने के कारण उससे जीत नहीं पाए ।नेइह्थङा के पिता कहते हैं "अरे! विधवा और मुखिया के प्रमुख सलाहकार में कभी तुलना हो सकती ? "क्या एक विधवा के आगे हार जाऊँ?"42

" मिज़ो समाज मे घर का पूरा काम स्त्रियाँ करती हैं यथा-खाना बनाना, सफाई करना आदि मगर शिकार और यात्रा से सम्बंधित कोई भी कार्य ही करते हैं।"[43]

[41]C.Kamlova,Pasaltha-51

[42]Ibib,p-50

[43] Selet Thanga ,Pi Pute len Lai ,p-.20

(ख)शूरवीर खुआङ्चेरा और मिज़ो संस्कृति

युवती और युवक के बीच

मिज़ो जनजाति सामूहिक रूप से हर कार्य को करने वाली थी।एक दूसरे का सम्मा , मिलनसार व्यक्तित्व उ साहचर्य के साथ जीवन यापन इनकी पहच थी। मिज़ो संस्कृति में युवक और युवतियों को एक दूसरे के साथ मिलने और प्रेम करने की छूट थी ।ये मिज़ो संस्कृति की विशेषता है,जो दूसरे समुदाय की संस्कृति से इसे अलग करती है। जहाँ इस तरह की आजादी न के बराबर होगी या बहुत क होगी।kutni vangthla(त्यौहा) और se-chhun khuangchawi (धार्मिव अनुष्ठान जिस में मिथुन आदि खाद्य पशु का वध किया जाता हैं)के समय भी पुरुष और स्त्री मित्रतापूर्वक ख़ु -ख़ुशी साथ रहते हैं और संकट में भी । उनकी सामाजिक स्थिति ऐसी थी इसलिए शायद युवक और युवती के बीच मि पूर्ण संबंधों में भी छूट थी।मगर लिखित नियम न होते हुए १ , समाज अपने में नियम बनाए हुए होता है जिसको हर कोई महत्व देता था और उससे आगे जाना उचित नहीं मानता था ।

पहला: घरों में जाकर-

मिज़ो समाज ऐसा समाज है जहाँ युवक अपने प्रेम का इजहार करने के लिए युवती के घर उससे भेंट करने जा सकते हैं, लेकिन इसकी सीमा होती है।रात

का खाना खाने के बाद युवक अपने घर से जोलबूक की तरफ जाते हैं जो युवक किसी लड़की का दर्शन करने नहीं जाता वे जोलबूक में बैठ कर आग सेंकते हुए अन्य पुरुषों की बातों को सुनने बैठ जाते हैंlमगर जिन युवकों को किसी युवती के घर जाना होता है वे “leng len hun”[44] में उन से भेंट करने निकल जाते हैंlयुवती अपने घर में आए युवकों का अच्छे से स्वागत करती हुई उन्हें बैठाती है और उनसे प्रसन्न होकर ब करती हैlघर आए किसी भी युवक की उपेक्षा नहीं की जा है।नाटक के द्वितीय अंक में हमें यह देखने को मिलता है, जब थनछूमी के घर युवक गण-हेमपुआ लुकोङा और नेइहथङा थनछूमी से भेंट करने जाते हैंl हेमपुआ थनछूमी के बिलकुल नजदीक बैठने की को श करता है और वे सभी इधर-उधर की बातें करते हैंl

यह वह समय था जब युवतियांअधिकतर बुनाई का कार्य करतीं थ। मगर युवकों के बैठने की सीमा होती थीl “khumpui sut tap chap sut”[45] को पार नहीं करते थेlउस समय रोशनी नहीं होती थ ।रात को सुअर का दाना पकाना होता था, न होने पर भी वे आग को जलाये हुए रखते थे जिससे रोशनी रहेl युवती कपास की बुनाई करते हुए बीच में बैठती थी और उससे भेंट के लिए आए हुए युवक उसे घेर कर बैठते हुए गप्पे मारते थे | जो युवती बुद्धिमान होती थी वह ये पता नहीं लगने देती थी कि इन युवकों में से वह किसे पसंद करती है और जिसको वह पसंद करती हैउससे भी जितना संभव हो सके उसे पता चलने नहीं देती थीl थनछूमी भी अपने घर आए सभी युवकगणों के साथ एक जैसा बर्ताव करती है।

[44]अविवाहित युवकों का घूमने का समय
[45]अलाव

पूर्व काल में युवक “Tuibur”[46]को बाँस की नली से पीते थे ।युवतियों का काम था उनका पाइप भरना और तम्बाकू बनाना। युवक का कर्तव्य युवती के माता-पिता को खुश करना और उनके साथ आदर से पेश आना होता था। यदि युवक के साथ युवती के माता पिता ठीक से न पेश आयें तो जोलबूक में युवक इसकी चर्चा करके फैसला करते थे कि उनके साथ क्या किया जाएग। कभी तो वे उस युवती के घर भेंट करने पर पाबन्दी लगा देते थे और यह पाबंदी युवती के लिए शर्म की बात होती थी। इसलिए युवती के घर वालों को भी सावधान रहना पड़ता थ ।घर आए सभी युवकों का स्वागत करना पड़ता है।

इन युवकगणों के प्रति युवती को बहुत सावधानी बरतनी पड़ती थ । कपास की बुनाई करते समय जब वो “Dawhthleng”[47] में बैठती थी तो कोई युवक उसके बहुत करीब आ जाता था तो वह अपने को उससे थोड़ा दूर कर लेती थी। रात्रि के 9:30 को “leng hnawt chhuak ar” बाँग देता था इसे “leng hnawt chhuak ar” इसलिए कहा गया क्यों मुर्गे के बाँग देते ही युवती के घर आए युवकगण अपने घर या जोलबूक लौट जाते थे।। दिन को सभी काम के लिए निकल जाते थे। इसलिए युवक दिन में युवती के घर नहीं जाया करते थे।

जो युवक रात को युवती के घर भेंट के लिए जाया करते थे और युवती जिस काम में लगी होती थी अगर वे उस काम को जानते हैं, तो उसमें अपना हाथ बँटाते थे । थनछूमी की भी सूअर का दाना पकाने में मदद की जाती है।

[46]मादक पानी

[47]अलाव के पास बैठने की जगह

दूसरा - खेत में:

मिज़ो जन-जाति खेतों में काम करके अपना जीवन यापन करत । सूर्य के निकलने के बाद जो भी स्वस्थ होता था खेत की तरफ चला जाता था।बड़ा हो या छोटा सभी खेती करने चले जाते थे। जिन युवक युवतियों में अच्छी दोस्ती होती थी वे एक दूसरे की मदद किया करते थे।पहले युवक के खेत में जाकर युवती मदद करती थी फिर युवती के खेत में युवक जाकर उसकी मदद करता था ।वैसे मदद तो एक युवती दूसरी युवती कीभी करती थी और एक युवक दूसरे युवक की भी, पर ज्यादातर जिन घरों में मर्द कम होते थे उनकी "Lawm" (खेत में मदद) की जाती थी।

थनछूमी भी सभी युवकगणों से बुद्धिमान युवती की तरह हिल-मिलकर खुशी से बातें करती है जिसे नेइहथङा भी न समझ पाया। उसने सोचा कि उसनेथनछूमी का दिल जीत लिया है मगर उसके मन को न जान पाया। इसी "Inlawm" के कारण ही खुआङ्चेरा भी थनछूमी के दिल को जान पाया थ ।ये हमें तब पता चलता है जब खुआङ्चेरा डूरबोङा से कहता है कि थनछूमी और उसने कई दिन झूम में साथ-साथ खेती का काम किया है, एक दूसरे को पहचानने की कोशिश की है।इस Inlawm के जरिए वह थनछूमी को भली भाँति परख चुका है। उसके तन से,मन से बहुत सुन्दर होने की बात भी उसे इसी से पता चली है।विवाह के मामलों में भी युवतियों की इच्छा का सम्मान किया जात । थनछूमी का भी उसकी इच्छा अनु खुआङ्चेरा से विवाह कराया गय ।

मिज़ो समाज एक ऐसा समाज है जहाँ जात-पात,अमीर-गरीब,विधवा आदि में भेद भाव नहीं किया जाता है।सभी लोग एक साथ शांति और खुशी से, अपनी मर्ज से स्वतंत्र जीवन जीते हैं।

विवाह :

"मिज़ो जनजातियों में विवाह युवक एवं युवती कीआपसी सहमति के उपरांत तय होता है।प्राः मुखिया अपने बच्चों का विवाह जल्दी करने में लगे थे।"[48]"सामान्य लोगों और मुखि के विवाह करने का ढंग अलग था। सामान्य लोग भी अन्य गाँव में रिश्ता ढूढ़ते थे, मगर मुखिया के बेटे को मुखिया के परिवार से ही रिश्ता जोड़ना होता था। इसलिए वे अन्य गाँव में रिश्ता ढूढ़ते थे और अपने साथ एक सलाहकार को ले जाते थे।"[49]

"माँ-बाप अपने बच्चों के लिए रिश्ता ढूढ़ते थे जो उनके लायक हो,जिसे उनका बेटा भी चाह सके,जो युवती उनके बेटे को स्वीकार कर सके। ऐसी लड़की के घ बिचौलिए भेज देते थे। बिचौलिए दोनों परिवारों को जोड़ने में लग जाता ।"[50] नेइह्थङा की माँ भी अपने पति को थनछूमी के घर "दो सलाहकारों को बात चलाने के लिए"[51] कहती है।मिज़ो जनजातियों में विवाह युवक एवं युवती के आपर्स सहमति के उपरांत तय होता है।जब युवक और युवती के बीच प्रेम संबंध बन जाते हैं तब विवाह होता है। विवाह से पहले युवक और युवती एक दूसरे के प्रति प्रेम दिखाते हैं।युवक, युवती के घर जाकर और झूम की खेती में उसकी मदद करके प्रेम दर्शाते है। अगर बिचौलिएद्वारा लाये गए रिश्ते से माँ, बाप सहमत होते हैं तो वे ये कहते थे कि यह तो विवाह के लायक भी है क्य ! हमारी बेटी दिखने में जवान लगती है, मगर इसका बचपना नहीं गया ,दूसरों के घर में रहना तो इसे नहीं

[48]Selet Thanga ,Pi Pute len Lai ,p..27
[49]Ibib,p-32
[50]Ibib,p-28
[51]C.kamlova,Pasaltha khuangchera,p-44

आएगा ।इसके पास 'puan"[52]भी ले जाने लायक नहीं है।मगर लगता है आप लो को यह रिश्ता सच में पसंद है और इसे इस लायक समझते हैं तो हम क्यों इनकार करें। इसके लिए कितना दाम लेकर आए ? हम उसकी इच्छा नहीं जानते य हमारी पहली भेंट है । हमारा परिवार भी इस बात पर विचार विमर्श कर कि आगे क्या किया जा । इसकी सूचना हम तुम्हें बाद में बता देंगे कह कर बिचौलिया को विदा किया जाता थ ।[53]थनछूमी के घर भी खुआङ्चेरा और नेइह्थङा परिवार वालों द्व बिचौलिया भेजा जाता है"छूमी के पिता:अब क करें? खुआङ्चेरा के बिचौलिए को हमने हामी भर दी है और अब नेइह्थङा के बिचौलिए को न करते भी नहीं बनता है,अब क्या कं .....!।"[54]

"बिचौलिया यह कह कर खुद विदा लेते थे कि आप अपने परिवार में विचार विमर्श कीजिए और थोड़ा जल्दी कर , ताकि हम तुरन्त आ सकें,क्योंकि उत्सुकता से हम खुशखबरी लेकर लौटना चाहेंगे ।"[55] छूमी का परिवार भी "आपस में विच - विमर्श कर रहा है।"[56]"युवती इन सारी बातों को सुन लेती है, ताकि वह इसका फैसला कर सके।"[57] नेइह्थङा के बिचौलिए भी कहते हैं "हम अच्छी खबर पाने की उम्मीद लेकर आए । जल्दबाजी न व तो क्या करें । आतुरता इतनी है कि क्या कहें ....! परिवार में विचार-विमर्श तो हो ही गया होगा।"[58]

फिर युवक और युवती की सहमति के बाद विवाह का आरम्भ किया जाता , विवाह के लिए तैयारी की जाती हैं ।जैसे प्रथम अध्या में कहा जा चुका है दुल्हन रात के समय दूल्हा के "Lawichal" के लिए प्रवेश करती है मगर वहां रहने के

[52].एक तरह का लूंगी जो औरते ओर्ति है
[53]Selet Thanga ,Pi Pute len Lai ,p-28
[54]. C.kamlova,Pasaltha khuangchera,p-45
[55]. Selet Thanga ,Pi Pute len Lai ,p28
[56]C.kamlova,Pasaltha khuangchera,p45
[57] Selet Thanga ,Pi Pute len Lai ,p-28
[58] C.Kamlova,Pasaltha Khuangchera,p-48

लिए नहीं जाती ।उसे दो रात वहाँ प्रवेश करना होता है । पहली रात को "Lawichhiat zan" कहा जाता है।इस पहली रात का नाटक में इस प्रकार वर्णन हुआ है "खुआङ्चेरा और थनछूमी के ब्याह की पहली रात" भी "दूल्हा का ससुराल में कुछ समय के लिए सहेलियों के साथ आने का रिवाज होता ।"59 इस रात दुल्हन अपने साथ कोई भी वस्तु लेकर जाती है, दुल्हन को लड़ के रिश्तेदारवाले ले जाने आते हैं और लड़कियों के कई रिश्तेदार भी इनके साथ जाते हैं ।लड़कियों की ओर से रास्ते भर उस क्षा करने के लिए "lawichal" उनव अगुवाई किया करता है, जो सुरक्षित दुल्हन को दूल्हा के घर पहुँचाने का काम करता है क्यों। रास्ते में कई लोग दुल्हन को छेड़ने, कीचड़ फेंकने की कोशिश करते हैं । थनछूमी केब्याह की प ली रात भी हेमपुआ लुकोङ और नेइहथङा से कहता है "लोगों के बीच ही तमाशा करते हैं।देखो, कुछ लोग कीचड़ और गोबर कर दुल्हन पर फेंकने की तैयारी कर रहे हैं।सीमा में रहकर औरों की तरह उन्हें जरा तंग कर ले,इतना काफी होग ।"[60] पूर्वजों का मानना है कि अगर रास्ते में दुल्हन गिर जाती है तो वह अपने घर लौट जाएगी और विवाह को भी रोक दिया जाएगा।

युवती जिसका विवाह होने जा रहा है उसकी "thian"(दोस्त) होती है, जिसका दहेज़ में भी हिस्सा होता है । वह विवाह के पूर्व /अंत तक उसका साथ देती है और सभी कामों में उस मदद करती है। दूसरी रात को "Lawithat zan" कहा जाता है इस रात दुल्हन दूल्हा के घर सदा रहने के लिए जाती है।[61]

[59]. C.Kamlova,Khuangchera61

[60]Ibib,p-61

[61]. James Dokhuma,Hman lai Mizo kalphung,p190,191,192.

Nopui (बड़ा मग):

“मिज़ो युवकों के लिए नि:स्वार्थ कार्य करना बहुत कठिन होता था। दि -रात, धूप और वर्षा में भी बिना शिकायत कि ,उत्साह से,अपने जीवन और समय को दूसरों के लिए त्याग करने की भावना उनकी महानता को दर्शाती है।मगर ऐसे श्रेयस्कर नि:स्वार्थ लोगों को भूला नहीं जात ,जो दूसरों के प्रति ज्यादा नि :स्वार्थ होते हैं ISechhun khuangchawi के समय Sumdeng zu जब पिया जाता है val upain zu fir tla chu seki nopui a dawm tir thin a उनसे पहले नहीं पिया जाता है। पूर्वज ज्यादातर शराब mau no में पिया करते थे। धनी आदमियों के पास कई seki no होता है। मगर Tlawmngai का seki nopui दूसरे मग से दो गुणा बड़ा होता है ।उसी nopui से Tlawmngai युवक को सबसे पहले पिलाया जाता है।ऐसे nopui के हकदार को आदरपूर्वक युवतियों का दिल जीतने वाल ,अपनी जनजातियों का मान रखने वाला मानकर उसके पुरुष साथी भी उसे इज्जत देते हैं।”[62]

zu (मदिरा):

मिज़ो जनजातियों के बीच मदिरा को भाईचारा व एक दूसरे का एहसान मानने का प्रतीक माना जाता है।अतिथियों का स्वागत भी इसी से किया जाता है।एक ही शहर में विवाह, शिकार में कामयाबी ,किसी की खुशी में शराब से जश्न मनाया जाता है।किसी की मृत्यु पर भी सहानुभूति प्रकट करने के लिए शराब का ही प्रयोग होता है।इस तरह सामान्य होते हुए भी युवक और युवती शायद ही नशा करते थे। इस कारण वे किसी तरह का कोई शर्मनाक बर्ताव भी नहीं करते थे।मगर आदमी

[62]James Dokhuma,Hman lai Mizo kalphung,p-.248

और ज्येष्ठ इसका नशा करके मतवाला बनजाते और कलाबाजी कर बैठ । जो चतुर आदमी होते हैं वे अपना आपा नहीं खोते हैं और न ही अपने होश खोते हैं ।मिज़ो जनजातियों में इस प्रकार की शराब पाई जात -Zufang, Zupui, Tinzu, Rakzu .

Zufang:"यह खंडित buhtun से बनता है।मिज़ो परिवार में इसका इस्तेमाल होता है ।घर में पिया जाता है । इसे घर के बाहर नहीं लेजाया जाता यह मीठा होता है, इससे नशा नहीं होता ।यह शराब में भी नहीं गिना जाता । बलि यह चाय के समान माना जाता है।"[63]नाटक में भी कई बार पु षों को शराब प ते हुए पाया गया है ।

Zupui:अपने नाम व तरह इसका स्वाद भी योग । यह शराब किसी विशे अवसर पर पी जाने वाली शराब है।नाटक में भी जब जश्न मनाया जाता है कच्च शराब का दौर चलने का वर्णन थङतोना द्वारा होता है।[64]इसके निर्माण के लिए भी खास कर युवक-युवतियों को आमंत्रण दिया जाता है इसका निर्माण भी व प्रकार से होने के कारण इसे Hranden zu भी कहा जाता है। नाटक में भी इसी शराब को साइलियानपुइया ने पीते हुए कहा है: "उद्घोषक जरा श ब की मटकी लाना मचान में बैठ क ते हुए आने वाले समाचार का इंतजार कर है।"[65]"खुआङ्चेरा की चंग्सिल लड़ाई में न जाने की खबर ज न कर अपने दिल को हल्का करने के लिए साइलियानपुइया कहता कुछ भी हो जरा शराब फि

[63]Selet thanga, PiPute Lenlai,p-61

[64]C.Kamlova,Khuangchera,p-20

[65].Ibib,p-100

बाँटना मन में हलचल मची हुई है "[66] इसे पीने के लिए बड़ा सा मग बनाया जाता है और जिसे वे एहसान के लिए पसंद करें उन्हें पिलाते हैं।

Tinzu:खंडित चावल से बनाया जाता है। यह दोस्तों के साथ,किसी की मृत्यु पर, पड़ोसियों के साथ पी जाने वाली शराब है। यह बहुत प्रसिद्ध है।

Rakzu: इस शराब को बनाना कोई असान काम नहीं इसलिए यह बड़ी मात्रा में बनाई जाती है।पूर्वजों के समय से शराब हर जश्न ,भाईचारा,एहसान आदि निभाने के लिए प्रयोग की जाती थी। इसलिए हर घर वाले अपने लिए ही नहीं, बल्कि जरुरत पड़ने पर सार्वजनिक रूप से पी जा सकने के लिए भी अपने साथ हर समय रखते है।

पशु पालन:

Sial(मिथुन):मिथुन मिज़ो जन जातियों का पालतू जानवरों में से एक था। मिथुन उनके लिए आर्थिक स्रोत भी थे। यह उनकी पूंजी मानीजार्त है।विवाह में भी इसका प्रयोग किया जाता है,जिनके पास मिथुन होता था उन्हें धनी माना जाता था।इसका मांस सबको पसंद है मगर इसका दूध नहीं पिया जाता है।[67]

Vawk(सुअर) : हर घर में सूअर पाला जाता है।रिश्तेदारों को ढूंढने के लिए यह उपयोगी है। विवाह के समय जो "man eitu"[68] होता है या जिसकी बेटी का विवाह हुआ है उन्हें अपने दामाद को सूअर का कंधा, जांघ एक या दो बार देना पड़ता है।इसके अलावा बलि चढ़ाने के लिए भी इसका प्रयोग होता है। खाने को और स्वादिष्ट बनाने के लिए "Saum sahriak"[69]का प्रयोग होता है ।जिनके पास "saum sahriak" नहीं होता था वे सूखे रहते थे, इसे बालो में भी लगाया जाता

[66] Ibib,p-101

[67]Selet thanga, PiPute Lenlai,p-60

[68]दुल्हन की माँ की तरफ के रिश्तेदार

[69]उबला हुआ रक्षित मांस का ते

है। हर कोई इसके मांस को खाना पसंद करता है ।पूजा में भी इसका प्रयोग किया जाता है।[70]नाटक में भी कई बार स्त्रियों को सूअर का दाना पकाते हुए पाया गया है । लुकोङा जब नेइह्थङा के घर जाता है तब नेइह्थ ङा की माँ खाना बनाने में व्यस्त है उसे सूअर का दाना उठाते हुए देखा जाता है।[71] डूरबोङा जब खुआङ्चेरा के घर उसके विवाह के सम्बन्ध में बात करने आता है तो उसकी माँ उसे कहती है "मैं जरा बर्तन साफ कर सुअर का दाना पकाने के लिए तैयार करती हूँ।"[72]

आर (मुर्गी पालन):

मुर्गी मामूली जानवर माना जाता है क्योंकि सभी परिवारों के पास मुर्गी ह है।त्याग के लिए ज्यादातर इसका प्रयोग होता है। पड़ोसियो के लिए भी इसका मांस बनाना आसान है, इसलिए इस मांस का सामान्य उपयोग होता ।[73]नाटक में भी जश्न नाते समय ओझा बलि मुर्गे को मारकर अपने विशेष मंत्र का जाप करता है।[74]

अतिथि

पूर्वजों के समय अतिथियों के लिए रहने के लिए होटल आदि नहीं होती थी । वे भी एक-दूसरे के गाँव में यात्रा किया करते थे, कोई रिश्तेदार होता था तो उनके यहाँ ठहर जाते थे । जिनका कोई रिश्तदार नहीं होता था मार्ग पर वे हर घर में घुसकर "Mikhual min thleng thei ang em"कहते थे। जिनके पास गद्दा नहीं होता था उन्हें दे दिया जाता था । जिस समय जोलबूक होता था पुरुष जोलबूक में रात गुजार लेते थे, स्त्रियाँ किसी के घर में ठहरती थीं,उन्हें उसका दाम नहीं देना पड़ता था । दाम लेने के बजाय अपने अतिथियों के साथ वे अच्छे से पेश आते थे उनके लिए मुर्गा भी बनाते थे । सभ्य युवती के घर में अतिथि को ठहरने में अच्छा लगता था क्योंकि

[70]Selet thanga, PiPute Lenlai,p-60

[71]C.Kamlova,Khuangchera.41

[72]C.Kamlova,Khuangchera, p.56

[73]Selet thanga, PiPute Lenlai p-60

[74]C.Kamlova,Khuangchera, p,.20

वे उनके वहाँ बिना मांदा के ठहरते हैं। उनके घर से लौटते समय भी बड़ी शिष्टता के साथ उन्हें फिर उनके यहाँ ठहरने के लिए कहा जाता था।नाटक में तो यह भी देखने में आता है किगाँव के युवक अतिथि के आने पर कुश्ती खेला करते थे "कल रात मैं जोलबूक गया था।वहाँ एक अतिथि जो ल -चौड़ा और देखने में ब हिम्मतवाला लगता ः ,आया हुआ । हमारे युवक बारी-बारी से उससे कुश्ती लड़ रहे थे,पर कोई जीत नहीं पा रहा था।अतिथि काफी तगड़ा और बहादुर लग है।"[75]

इस प्रकार इस अध्याय नाटक के अंतर्गत मिज़ो जनजातियों क पूर्व की सामाजिक और सांस्कृतिक विशेषत का अध्ययन किया गया । जिनमें से कई आज मृत समाज और संस्कृति का अंग बन गई ह। लेकिन आज भी ं कई सामाजिक और सांस्कृतिक व्यवस्थ हैं जो नए रूप को धारण करके सम संचालित हो रही हैं।

****

[75]C.Kamlova,Khuangchera, p-82

चतुर्थ अध्याय

शूरवीरखुआङ्चेराके हिंदी अनुवाद की समस्याएँ

(क) अनुवाद की समस्याएँ

अनुवाद में आने वाली समस ओं प हम इस प्रकार चर्चा करेंगे:

1.व्याकरण सम्बन्धी सम :

"प्रत्येक भाषा का अपना व्याकरण होता है व प्रत्येक भाषा व्याकरण के नियमो नियंत्रित होती है|अतः लक्ष्य भाषा और स्रोत भाषा दोनों में ही व्याकरण कोटियाँ भि होती हैं | उदाहरण के लिए He is my father का अनुवाद वह मेरा पिता है करना तर्क संगत नहीं है,हमें कहन होगा –वे मेरे पिताजी हैं| हिंदी में 'जी' अतिरिक्त प्रयोग है और 'हैं' का प्रयोग सम्मान देने के लिए किया है| अंग्रेजी का वाक्य एक वचन में होते हुए भी इसका अनुवाद बहुवचन में हु |इसलिए यह नितांत जरुरी है कि व्याकर ,रचना प्रक्रिया और भाषागत विशेष / भि ताओं को समझकर अनुवाद किया जा |"[1]

मिज़ो भाषा में व्याकरण नाम अंग्रेजी व्याकरण के आधार पर रखा जाता | मिज़ो भाषा व लिपि का परिचय अंग्रेजों के माध्यम से ही हुआ है और व्याक का नामकरण भी अंग्रेजी व्याकरण के नामों के अनुसार ही किया गय |मिज़ो भाषा में लिंग के कारण संज्ञा शब्दों में कोई परिवर्तन नहीं होत , मगर श के अंत में व्यक्ति वाचक सं जोड़ने से वह पुल्लिंग और स्त्रीलिंग हो ज | नाटक का नायकखुआङ्चेराहै, गैर-मिज़ो भाषी पहली बार पढ़ते व खुआङ्चेराक्या है इसका अनुमान नहीं लगा पाए । पढ़ने वाला भाषा से परिचित होगा तो वह पढ़ते ही बता

[1].अनुवाद सिद्धांत एवं व्यवह :डॉ जयंती , पृ.संख्या 51

सकता है कि किसी भी नाम के अं में 'आ' या 'ई' स्व /वर्ण आए तो व किसी वस्तु,स्थान का नाम न: होता है | इसका ज्ञान होने से पाठक को नाटक समझने में आसानी हो सकती है |

जैसे:

डूरबोङा - लड़का

पूक– स्थान का नाम

थनछूमी– लड़

थिङथुपुई- सब्ज /दवाई के लिए भी बनाया जाता है

2.भाषागत प्रयुक्ति :

"प्रत्येक भाषा के प्रयोग के अपने नियम होते हैं अतः एक भाषा में जो अनिवार्य होता है दूसरी भाषा में वह अर्थहीन हो जाता है| यदि हम अंग्रेजी में कहें- There are five birds on the tree. इसका हिंदी में शाब्दिक अनुवाद होगा - वहाँ पेड़ के ऊपर पाँच चिड़ियाँ हैं | परन्तु सही अनुवाद होगा पेड़ पर पाँच चिड़ियाँ हैं|यहाँ हम देखते हैं कि There तथा The का अनुवाद नहीं किया गया है|इस प्रकार हमें भाषा की प्रकृति एवं उसके प्रयोग को भी सदैव ध्यान में रखकर अनुवाद करना चा ए अन्यथा यह विकट समस्या बन जाती है|"[2]

नाटक में 'Vakul'(वकुल) शब्द आया है जो की एक तरह की चिड़िया है I जश्न के समय इसके पंख को पगड़ी की शान बढ़ाने के लिए रखा जाता है | यह चिड़िया जश्न की श्रेष्ठता को व्यक्त कर है जैसे धनेष पक्षी हिन्दुओं के लिए श्रेष्ठ है, वैसे ही मिज़ो जातियों के लिए वकुल |

[2]अनुवाद सिद्धांत एवं व्यव : डॉ जयंती प्रसाद नौटिया , पृ.51,52

3. संकल्पनाओं संबंधी समस्याएं :

"भाषा निरंतर प्रवाहमान एवं गतिशील रहती है| नई-नई खोजें , नए-नए प्रयोगों और संकल्पनाओं का भाषा रंतर प्रयोग होता ही रहता है| ऐसी संकल्पनाएँ अनुवादकों के लिए बहुत समस्याएँ पैदा करती हैं| यदि आप बैंकिंग में अनुवाद कर रहे हो ,आपके पास शब्द आय Factoring और आपने इसका अनुवाद फैक्ट्री के अर्थ में कर दिया तो अर्थ का अनर्थ हो जाएगा|इसलिए जिस विषय का अनुवाद कर रहे हों उ विषय के पारिभाषि कोश का अवश्य सह लें या फिर संकल्पनाओं का लिप्य तरण कर दें|"[3]

शूरवीर खुआङ्चेरा (अनुदित) नाटक के सबसे पहले अनुच्छेद में पर तुइ जोलबूक का जिक्र किया गया है, जब की मूल किताब में एक बुजुर्ग और कुछ अस्वस्थ लोग बाँस एवं बेंत से आवश्यक वस्तु यथा टोकरी,सूत आदि बुनते हुए आपस में गप शप करते हुए दिखाई देते हैं |अनुवादक ने नाटक के पहले दृश्य से ही अपनी अर्थवान संकल्पना से इसे सजा कर पाठकों के लिए आनंददायक बनाया है | नाटक के कई अंको में यह महसूस किया जा सकता है |

4. सांस्कृतिक समस्याएँ :

"कभी-कभी ऐसा होता है कि अनुवादक के समक्ष जो समस्या खड़ी होर्त , वह सांस्कृतिक अनुवाद की होती है| स्रोत -भाषा पाठमें मौजूद परिस्थितिगत तत्व लक्ष -भाषा से सम्पृक्त संस्कृति में बिलकुल अनुपस्थित होता है| जैसे परंपरागत भारतीय घरों का शब्द – 'चौका'|इसे अंग्रेजी शब्द 'Kitchen' के समकक्ष नहीं रखा जा सकता |क्योंकि दोनों में भि -भिन्न संस्कृतियों के भिन्न –भिन्न अर्थ विधमान | भारतीय शब्द 'चौका' या 'रसोई' में भोजन पकाने की शुद्धता और पारिवारिकता का अश विद्यमान है तथा यह शब्द भारतीय गृहिणी के समस्त त्याग-सौजन्य की अंतर्मानसिकता से जुड़ा है|यदि

[3].अनुवाद सिद्धांत एवं व्यवहार : डॉ जयंती प्रसाद नौटियाल , पृ.संख्य 51,52.

हम किसी कहानी या कविता में 'कन्नौजी चौ ' शब्द का प्रयोग करते है,तो विदेशी के लिए इसका अ –व्यंजन खोज पाना कठिन प | क्यों वहां चौका उनके 'सम्पूर्ण छुआछूत पाखंड' का प्रतीक है जैसे-

आठ कन्नौ या,तेरह चूल्हे
तहूं फिरै ऊले ऊले||

"अनुवादक को स्रं –भाषा तथा ल –भाषा व गम्भीर जानकारी के लिए दो भाषाओं से जुड़ी संस्कृति की व्य पक जानकारी होगी तभी वह दोनों ओं के सांस्कृतिक संदर्भों को सही परिप्रेक्ष्य में पकड़ स | साथ ही सही संदर्भो में दोनों भाषाओं के तुलनात्मक अध्ययन से ठीक शब्द को ग्रहण कर सके |"[4]

नाटक Thangchhuah (थङछुआ), Tlangtlir (त्लाङ ट्लि), sapui (सपुई),Khumbeuh (खुमबेउ), Rihar (रिह्रउ), sapui (सपुई) आ शब्दों का प्रयोग हुआ है जिसका एक निश्चित सामाजिक अर्थ और स , इनका अर्थ ग्रहण करने के लिए मिज़ो संस्कृति एवं भाषा का ज्ञान जरुरी है अन्यथा अनुवादक स अनुवाद नहीं कर पायेगा और पाठक उसका सही अर्थ ग्रहण नहीं कर | इस नाटक में भी अनुवादक से ऐसे सांस्कृतिक शब्दों वे अनुवाद के साथ-साथ उसके अर्थ विस्तार की उम्मीद की जानी चाहिए।

नाटक में कुछ शब्दों के अर्थ स्पष्ट रूप से व्याख्यायित किये गये हैं।'Thang' का अर्थ है प्रसिद्ध,'chhuah' का अर्थ है निकलना। जो मिज़ो संस्कृति से अपरिचित होगा इसका अर्थ नहीं निकल पाए |मिज़ो धर्म के विचार और संकल्पना के अनुसा इसका अर्थ है जिसने अपने तमाम गॉव वालों को कई बार बड़ा भोज देकर तृप्त किया हो और मरने के बाद स्वर्ग जाने का अधिकार मान लिया हो|

[4].अनुवाद सिद्धांत एवं व्यव : डॉ जयंती प्रसाद नौटियाल , पृ.संख्य

Tlangtlir मिज़ो भाषा से अपरिचित इसका अनुवाद पहाड़ को मारना कह स है, क्योंकि 'Tlang' पहाड़ है और 'Tlir' मारना, जब इसका अर्थ है –जब कोई शिकारी अकेले या समूह में किसी जंगली जानवर को मारता था तो गॉव के बाहर वह हवा में गोली चलाकर अपनी वीरता का इजहार करने के लिए दो-दो पंक्तियों का गीत गाया करता था|

Sapui का अर्थ है बाघ जिसे Sakei भी कहा जाता है I मूल किताब में इसे कई बार Sapui कहा गया है I अगर अनुवादक इस से अपरिचित होगा तो इसका अनुवा बड़ा जानवर कह कर रख सकता है जो गलत है I इस प्रका दोनों भाष ओं से जुड़ी संस्कृति की व्यापक जानकारी होगी तभी वह ने भाषाओं के सांस्कृतिक संदर्भों को सही परिप्रेक्ष्य में पकड़ सके |

5. लोकोक्ति संबंधी समस्या :

"प्रत्येक भाषा में मुहावरे व लोकोक्तियॅ होती हैं,जिनका अर्थ शब्दों से नहीं बल्कि उनके प्रयोग से जाना जाता है| अतः अनुवादक के लिए यह नितांत जरूरी हो जाता है कि वह मूल पाठ में प्रयुक्त लोकोक्तियं मुहावरों का अर्थ समझे व तदनुसार उसका अनुवाद करे I यदि उसी के र मान मुहावरा लक्ष्य भाषा में मिल जाए तो और आकर्षक अनुवाद किया जा सकता ,जैसे 'Tom,Dic and Herry' को 'ऐरा गैरा नत्थू खैरा' कहें तो अधिक अच्छा होगा Iइसी प्रकार Herculean effort को भगीरथ प्रयत्न कहना अधिक तर्कसंगत व बोध म्य होग ,क्योंकि भारतीय जन –मानस हरक्युलिस को नहीं जानता बल्कि भगीरथ को जानता है | इसलिए मुहावरे एवं लोकोक्तियों के अनुवाद में अत्यधिक सावधानी वॅ आवश्यकता होती है|"[5]

[5]अनुवाद सिद्धांत एवं व्यव : डॉ जयंती प्रसाद नौटियाल , पृ. 52

"Sakawlhin इन Sakawlh a hring"मूल किताब में लिखा हुआ है| अनुवादक खुद मिज़ो है इन्हें दोनों भाषाओं का अच्छे से ज्ञान है इसलिए इस का उच्चित अनुवाद भ किया है "शेर शेर को ही जन्म देता है|"

6. शब्द चयन संबंधी समस्याएँ :

"अनुवाद में शब्द चयन की समस्या सबसे महत्वपृ है| यदि आप विषय को समझ में थोड़ी सी लापरवाही बरत दें या शब्दकोश देखकर सं -सीधा अनुवाद कर दें तब भी बहुत सी समस्याएँ उत्पन हो सकती है | एक ही शब्द के अनेक अर्थ होते हैं| किस समय कौन से शब्द का उपयोग किया जाए यह ः ननना अनुवादक का पहला धर्म है |"[6]

नाटक में खुआङचेरा और नेइह्थङा का संदेश थनछूमी के परिवार वालों तक पहुचाने वालों कं बिचौलिए का नाम दिया गया ,जबकि बिचौलिए का अर्थ कुछ और ही है। यहाँबिचौलिए के स्थान पर मध्यस्थ शब्द का प्रयोग किया जाये लेखक जो पाठके को बताना चाहता है उसका सही अर्थ संप्रेषित होता |

नाटक में Builung(बुइलुंङ)को एक तरह का भूत कहा गया है| यह वाक्य नेइह्थन्ग के पिता द्वारा कहा जाता है जब छूमी के घर सेबिचौलिए उनके घर आते हैं |इसका अर्थ है जब बुई नाम का एक बड़ा सा चूहा बिल बनाता है उस समय उसके सामने कोई भी पत्थर पड़े तो उसे खिसका कर कोई दूसरा बिल बनाने लग जाता है। कहने का तात्पर्य यह है कि थोड़ी सी मुसीबत आने पर मन कच्चा हो जान |

इस नाटक में भ जश्न मनाते समय बूढ़ा बच्चों से जश्न के कर्ता-धर्ता के परिधान के बारे में कहता है कि देखो उसने अपनी कमर में दं रंगों की पगड़ी भी ः हनी हुः , जबकि हिंदी के अनुसार पगड़ी कमर में नहीं बल्कि सिर पर पह जाती है | अनुवादक ने विषय को समझने में थोड़ी सी जल्दबाजं कर दी है|

[6]अनुवाद सिद्धांत एवं व्यव : डॉ जयंती प्रसाद नौटियाल , पृ. 52

मूल नाटकमिज़ो से हिंदी में अनुदित नाटक में कई बातें छूट गई हैं जैसे -मिज़ो नाटक में माँ अपने बच्चे को सुलाते समय लोरी गाती है “Chhimbu leh pengpeng intu,intu,A lu lam kawng,lu lam kawng”. जिसका हिंदी नाटक में अनुवाद नहीं हुआ है | इसी तरह पेज न. 22 में ‘डफली बजाने वाले’ के संवाद का अनुवाद आधा ही किया गया है | पेज न. 49 में पात्र के संवाद के क्रम में उलट फेर है | इस अनुदित नाटक में शाब्दिक उ वाक संरचना संबधी व्याकरणिक अशुद्धियाँ भी देखने को मिलती हैं | इस तरह की और भी समस्याएं अनुदित किताब में दिखाई देती हैं |

निष्कर्ष :यह नाटक मिज़ो समाज और संस्कृति का सार्थ सृजनात्मक परि प्रस्तुत करता है, लेकिन इन उपलब्धियों के आलोव इसके मिज़ो से हिंदी में हुए अनुवाद का आलोचना क विश्लेषण भी करके देखा गया है । इस हेतु हमने निगमनात्मक शैल - सिद्धांत से व्यवहार की ओर पद्धति - का प्रयोग किया है।

नाटक की पृष्ठभूमि में अनुवादक र्स . कामलोवा ने अलग क्षेत्र और भाषा भिन्नता की अपनी सीमा की मज़बूरी ईमानदारी से स्वीकार की , नाटक में उसका प्रभाव भी दिखाई देता है। शब्दों के चयन से लेकर भावों की प्रवाहपूर्ण अभिव्यक्ति एव अर्थ ग्रहण में भाषा बाधक बनती है जो पाठक का रचना के साथ तादात्म्य स्थापि करने में दिक्कत पैदा करती है, किन्तु थोड़े से अतिरिक्त प्रयास से पाठक इन बाधाओं से पार पा लेता है। दूसरी बात यह कि रचना में सपाट बयानी दिखती है, अनुवादक अपने भाषाई और रचना कौशल से मूल रचना को प्रभावित किये बिना और उ रोचक और विशिष्ट बना सकता था जिसका अभ दिखाई देता है। इन सबके बावजूद एक मिज़ो रचना का एक मिज़ो अनुवादक द्वारा हिंदी में अनुवाद करना और भाषी क्षेत्र को मिज़ो समाज और संस्कृति से रूबरू करना अपने आप में एक उपलब्धि जिसकी अनदेखी नहीं की जा सकती।

****

उपसंहार

1871 में अंग्रेजों के आगमन से मिजोरम की सामा , आर्थि , राजनीतिक स्थितियों में परिवर्तन शुरू हो जाता है। अंग्रेजों के आने से पूर्व मिज़ो मुखिया अपनी इच्छा से कार्यवाही करते थे, वे जहाँ चाहे शिकार के लिए निकल जाते थे, लेकिन अंग्रेजों के आने के बाद उन्होंने मिज़ो मुखियाओं को बर्खास्त करना प्रारंभ किय । उन्होंने अपनी इच्छानुसार शासन चलाना शुरू किया और मिज़े की स्वच्छंद जीवन शैली पर रोक लगा दी। उन्हें कर देने, उपहार देने और कुलीगिरी के लिए बाध्य किया । उनका ऐसा रवैया देखकर मिज़ो डर गए कि कहीं वे हमारा प्रदेश ही हम से छीन न लें । अपने अस्तित्व एवं स्वतंत्रता को नष्ट होने से बचाने के लिए अंग्रेजों से युद्ध करने निकल पड़ते हैं, जिनमें अंग्रेजो को जान एवं माल की व्यापक क्षति होती है ।

खुआङचेरा नाटक का नायक है । इसके जीवन से हमें शूरवीरों के चरित्र और मिज़ो समाज में उनकी स्थिति का पता चलता है । जिन्होंने अपने साथियों के साथ मिलकर मिज़ो जनजातियों को गुलाम बनाने अंग्रेजों और ब्रिटिश हुकूमत को चुनौती दी और अपनी असाधारण वीरता के कारण अपनी जान देकर अपने देश के लिए अमर हो गए ।इस नाटक में इनके उत्तर दिशा की तरफ से आगम अभिव्यक्त किया गया | लेखक मिज़ो जनजातियों को सूचित करना चाहता है कि मिज़ो जन जातियों के बीच शूरवीरों को किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ था और उन वीरों ने अपने देश की रक्षा के लिए अपनी जान तक निछावर कर दिया । अंग्रेजो के आगमन के कारण मिज़ो जनजातियों का इतिहास ही बदल ग , इसके साथ-साथ लिपि का आविष्कार हुआ जिस कारण आज मिज़ो जनजातियाँ वि साथ चल पा रही हैं ।

मिज़ो जनजाति की संस्कृति और समाज की झलक हमें इस नाटक के म मिलता है । प्राचीन मिज़ो समाज में मुखिया का स्थान बहुत महत्वपूर्ण था | मुखिया

ही उनका सब कुछ होता था। युद्ध और शांति, जुताई का समय, अलग-अलग त्यौहार मनाना, जनता के सभी मामलों के निपटारे हेतु वह उत्तरदायी था। मुखिया और सलाहकार जब जरुरी समझते थे तब सामाजिक श्रम कार्य हेतु गॉव वालों को बुलाते थे। हालांकि मिज़ो समाज में वर्तमान काल में मुखिया और सलाहकार अंग्रेजो आगमन के बाद नहीं रहे हैं मगर आज भी मिज़ो समाज मे सामाजिक श्रम कार्य या जाता है।

इसमें जोलबूक का महत्व बताया ग है जहाँ नव-युवक अच्छे संस्का , शिष्टत , त्याग करना, बड़ो का आदर करना आ सीखते थे। आज जोलबूक भी एक लुप्त संस्कृति बन गया है, मगर हम कह सकते हैं कि आज Y.M.A इसका रूप धार किए हुए है और मिज़ो -जातियों के सामाजिक जीवन और संस्कृति विशेषताओं को लुप्त होने से बचाए हुए है। उनके त्यौहारों और नृत्यों की भी चर्चा है जो उनमें एकता पैदा करती है। मिज़ो जनजातियों के विवाह और महिलाओं स्थिति का वर्णन भी किया गया है।

लेखक ने 'शूरवीर खुआङचेरा' नाटक के माध्यम से एक तरफ अंग्रेजों के आने से पूर्व के मिज़ो समाज की विविध , उनके सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक जीवन और संघर्षों तथा देश प्रेम की भावना को चित्रित किया है, वहीं अंग्रेजों के आगमन से मिज़ो समाज के जीवन में आ सकने वाले नकारात्मक उ सकारात्मक प्रभावों तथा परिणामों की स्थितियों का भी मार्मिक प्रकटीकरण है। इसके साथ ही यह नाटक अंग्रेजों के कारण मिज़ो समाज के जीवन में आ रहे अनैच्छिक परिवर्तनों की छाया का प्रतिदर्श भी प्रस्तुत कर , तो शूरवीर खुआङचेरा जैसा व्यक्तित्व भी उभारता है जो इन अनचाहे परिवर्तनों के वि , अंग्रेजों की गुलाम बनाने वाली मानसिकता के विरुद्ध पूरे मिज़ोरम का प्रतिनिधित्व करता हुआ दिखाई देता है। जिसके कारण मिज़ो समाज का पूरा इतिहास ही बदल गया।

मिज़ो गॉव राजनीतिक रूप से एक स्वतंत्र इकाई थे जिसका दूसरे से के राजनीतिक सम्बन्ध नहीं होता थ । उनका सार्वजनिक रूप से अवकाश म जिसमें से एक का नाटक में चित्रण हुआ है। मिज़ो समाज की प्र , रीति एवं

संस्कारों के साथ विवाह सम्बन्ध , पारिवारिक संरचना , स्त्रियों की स्थिति आदि का सजीव वर्णन देखने को मिलता है। मिज़ो युवक और युवती के बीच सहचर भाव, विवाह, बड़ा मगा का आयोजन तथा दैनिक जीवन में आने वाली परिस्थितियाँ , सामाजिक और राजनीतिक दांव-पेंचों की उलझन , संघर्ष और उनसे टकराते हुए नायक के उभरने की सृजनात्मक अभिव्यक्ति भी हुई है।

यह नाटक मिज़ो समाज और संस्कृति का साहित्यिक औरसृजनात्मक परिचय प्रस्तुत करता है, लेकिन इन उपलब्धियों के आलोक में हमें इसके मिज़ो से हिंदी में हुए अनुवाद का आलोचनात्मक विश्लेषण भी करके देखना होगा। नाटक की पृष्ठभूमि में अनुवादक सी. कामलौवा ने अलग क्षेत्र और भाषायी भिन्नता की अपनी सीमा की मज़बूरी ईमानदारी से स्वीकार की है, नाटक में उसका प्रभाव भी दिखाई देता है। शब्दों के चयन से लेकर भावों की प्रवाहपूर्ण अभिव्यक्ति एवं अर्थ ग्रहण में भाषा बाधक बनती है जो पाठक का रचना के साथ तादात्म्य स्थापित करने में दिक्कत पैदा करती है, किन्तु थोड़े से अतिरिक्त प्रयास से पाठक इन बाधाओं से पार पा लेता है। दूसरी बात यह कि रचना में सपाट बयानी दिखती है, अनुवादक अपने भाषाई और रचना कौशल से मूल रचना को प्रभावित किये बिना और अधिक रोचक और विशिष्ट बना सकता था जिसका अभाव है। इन सबके बावजूद एक मिज़ो रचना का एक मिज़ो अनुवादक द्वारा हिंदी में अनुवाद करना और हिंदी भाषी को मिज़ो समाज और संस्कृति से रूबरू करना अपने आप में एक उपलब्धि जिसकी अनदेखी नहीं की जा सकती।

****

संदर्भ–ग्रंथ सूची

आधार ग्रंथ:

1. सी.कामलौवा, शूरवीर खुआङ्चेरा,केमब्रिज प्रेस , मदरसा रोड ,कश्मीरी गेट, दिल्ली :2014.

2.Dr.LaltluanglianaKhiangte,Pasalthakhuangchera, L.T.L Publication,Mission veng: 1997.

सहायक ग्रंथ :

हिन्दीग्रंथ :

1.सी. कामलौवा, मिज़ो जनजातियों का परिचयात्मक संक्षिप्त इतिहास (An Introductory BriefHistoryMizoTribes,PeterStreet,Khatla, Aizawl: Mualchin Publication & Paper Works,2016.

2.डॉ.एन.ई.विश्वनाथ अय्यर ,अनुवाद कला,प्रभात प्रकाशन , 4/19आसफ अली रोड,नई दिल्ली , 2001

3.डॉ.बालेन्दु शेखर तिवारी,अनुवाद-विज्ञान ,प्रकाश संस्थान , 4268-ब/3, अंसारी रोड,दरियागंज , नई दिल्ली ,2012

4.डॉ.जयन्ती प्रसाद नौटियाल ,अनुवाद सिद्धांत एवं व्यवहार , राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड 7/31, अंसारी रोड,दरियागंज नई दिल्ली , 2006.

5. डॉ.रीतारानीपालीवाल,अनुवाद प्रक्रिया ,साहित्य निधि प्रकाशन , 29/59-ए ,गली नं11, विश्वासनगर शाहदरा ,दिल्ली ,1992.

अंग्रेजी ग्रंथ :

6. Dr.Laltluangliana Khiangte,.TRIBAL CULTURE FOLKORE AND LITERATURE,4594/9,Daryaganj, New Delhi:Krishan Mittal for Mittal Publications,2013.

8. Dr.Laltluangliana Khiangte,Mizos of North East India An introduction to Mizo Culture,Folklore, Language & Literature, L.T.L Publication, Mission Veng,2008.

मिज़ोग्रंथ :

9. Chaldailova.R,.Mizo Pi Pute Khawvel,Vanlalnghaki,Gilzom offset,A-54,Electric Veng,2011.

10. Colney Lalzuia & Lalthianghlima,Mizo Thu leh Hla cl-IX & X, Mizoram Board of School Education,Thakthing Bazar Press 1999.

11.Duhsaka,V.L,MARY WINCHESTER (ZOLUTI)& Israel-Mizo,SabbathvrsSunday,Krishmas,Good Friday etc. L.R.Offset&Flex PrintingCanteen Kual Dawrpui Aizawl:,2013.

12.Dokhuma,James,.Hmanlai Mizo Kalphung,Electric veng,Aizawl:R.Lalrawna,2015.

13.Dokhuma,James& PuLalthangfala sailo,Mizo Class-IX,Mualchin Publication and Paper Works,peter's Street Khatla,Aizawl,2001.

14. Dr.Laltluangliana,Khiangte,THU LEH HLA THLITFIMNA LAM,L.T.L Publication,Mission Veng,2016.

15. Dr.Laltluangliana Khiangte,Saitual Centenary 1915-2015

Souvenir,Gilzom offset Electric Veng, Saitual Centenary sub- committee,2015

16. Hnamte Isaac & Lalsangzuala,.A PROFESSOR'S PADMA SHRI SOUVENIR,B-43,Fakrun,Mission veng Aizawl,Mizoram: Swapna Printing Works Pvt.Ltd.Kolkata,2011.

17.Lalauva,R,.MizoMiBikte,UpperBazar:R.Lalauva,Maranatha,2010.

18.Lianhmingthanga,Mizo Pasalthate, Rajinder Nagar new Delhi:Tribal Research Institute Department of Art & Culture,Government of Mizoram,2004.

19.Laithanga,C,.Mizo Khua,.Chandmari:L.V Art,2002.

20.Lalbiakliana,C,.Zawlbuk Ti Ti,Milan Computerise,2000.

21.Lalthangliana,B,&Lalthangliana,B,.Mizo hnam zia leh Khawtlang nun siam that,2016.

22.Lianhmingthanga,.F,&lalthngliana,F,Mizo nun hlui Part-1Pawl RiatZirlai,1996.

23.Lalbiakliana,.H.K.R,Pasalthate Chanchin,Khatla:H.R.K Lalbiakliana,2006.

24.Lalhruaitluanga,Ralte,.Thangliana,Aizawl:Art &Culture Department Govt.of Mizoram,2013.

25.Liangkhaia,Rev,.MIZO AWMDAN HLUI &MIZO MI LEH THIL HMINGTHANGTE LEH MIZO SAKHUA, L.T.LPublication MissionVeng,2008.

26. Liangkhaia,Rev,Mizo Chanchin,L.T.L Publication,Felim Computer B- 43,Fakrun,Mission Veng.2002.

27. Lalthangliana.B,Laithanga.C,Lalchungngunga,HlunaJ.V,Lal Sangliana,F,MizoHnam Zia LehKhawtlangnunsiam thatna,The Synod Publication BoardAizawl,Mizoram.Synod Press Aizawl,1988.

28. Lalthangliana.B,Zotui,M.CLalrintluanga RTM Press ChhingaVeng Aizawl,2006.

29.SailoLalsangzuali,classx Mizo Puitu,AJBPublication,Hnamte press Khatla,2009.

30.Siama,V.L,.Mizo History,. Lengchhawn Press, Khatla,2009

31.Saitual Centenary SOUVENIR sub-committee,Saitual,Saitual Centenary Souvenir 1915-2015,Saitual centenary sub-committee, Gilzom offset,A 54 Electric Veng,2015

32.Thanga,Selet,.Pi Pu Len Lai,Bara bazar,aizawl:Lianchhungi Book store,1989.

33.Vanlallawma,C,.Bengkhuaia Silo, Lengchhawn press,Mission veng:1996.

34.Zawla,K,.Mizo Pi Pute leh An thlahte chanchin, Gosen press Mission Veng: Aizawl,1989.

35.Zawla.K,.Mizo Pi Pute leh an thlahte chanchin,zomi book agency,Samuel Press Electric Veng.

****

अनुसंधित्सु का विवरण

नाम	:ज़ोरमछनी पच्च ऊ
शिक्षा	: बी.एड., एम.ए (हिंदी)
विभाग	: हिंदी
शोध- प्रबंध का शीर्षक	: शूरवीर खुआङ्चे रा : राजनीतिक एवं सांस्कृतिक अनुशीलन
प्रवेश शुल्क के भुगतान की तिथि	: 04.08.2016
शोध प्रस्ताव की संस्तुति	
(i) बी.ओ. एस.	: 02.05.2017
(ii) स्कूल बोर्ड	: 26.05.2017
पंजीयन संख्या	: MZU/M.Phil/368 of 26.05.2017